फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 105 प्रभात जयपुर, शनिवार 16 नवम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

UNMATCHED DEVOTION TO DUTY

Chhamb was crucial for both. If Pakistan initiated an offensive through Chhamb, as it did in 1965, capturing Akhnur Bridge would disrupt the main supply route for Indian forces.

What's the difference between liquid and powder laundry detergent?

पंजाब व हरियाणा के बीच एक बार फिर लड़ाई शुरु हुई चण्डीगढ़ पर

इस बार ''जंग'' का कारण है दस एकड़ जमीन का प्लॉट, जो चण्डीगढ़ रेलवे स्टेशन के पास है, जहां हरियाणा अपनी नई विधानसभा बनाना चाहता है

- श्री नन्द झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। पंजाब और हरियाणा एक बार फिर चंडीगढ़ की लड़ाई में उलझ गये हैं। पंजाब के नेताओं ने पार्टी लाइन से बाहर जाकर चंडीगढ़ के साथ जमीन के आदान-प्रदान के लिये केन्द्र की कथित पर्यावरणीय स्वीकृति का जबरस्त विरोध किया है। यह स्वीकृति चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन के पास आई.टी. पार्क रोड की तरफ नये विधान सभा भवन के निर्माण के लिये की गई है। दूसरी तरफ हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह से लेकर नीचे तक के भाजपा नेता इस बात को लेकर उत्साहित हैं कि विधनसभा भवन के लिये इस पर्यावरणीय स्वीकृति से उच्च न्यायालय भवन के निर्माण के लिये अतिरिक्त जमीन के इच्छित अधिग्रहण का रास्ता साफ हो जायेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार को कोशिशों का विरोध स्वयं पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने भी किया है। उन्होंने इस निर्णय को रद्द करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से हस्तक्षेप करने की माँग की है। उन्होंने तर्क दिया है कि इस प्रकार की किसी भी कार्यवाही से ''पंजाबियों की भावनाएं आहत'' होंगी तथा पंजाब के लिये की गई प्रधानमंत्री की सभी पहल धूमिल हो जायेंगी। हरियाणा के पूर्व राज्यपाल ज्ञान चन्द गुप्ता, जिन्होंने इस दिशा में पहल की है, ने शुक्रवार को जोर देते हुये कहा कि पर्यावरण एवं वन के केन्द्रीय मन्त्रालय ने हरियाणा के पंचकूला में 12 एकड़ के एक भूखंड को पर्यावरण एवं वन सम्बन्धी स्वीकृति दे दी है। 12 एकड़ के एक भूखंड के बदले में चंडीगढ़ के साथ इस जमीन की अदला-बदली की जायेगी।

पंजाब का तर्क है कि नया विधान सभा भवन पंचकूला में भी बन सकता है, जो चंडीगढ़ की हरियाणा द्वारा चाही गई जमीन मात्र 2 किमी की दूरी पर ही है। सत्तारूढ़ आप का एक प्रतिनिधिमंडल पंजाब के राज्यपाल गुलाबचन्द कटारिया के मिला था तथा जोर देते हुए उनसे कहा गया था कि ''हरियाणा के विधानसभा भवन के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हरियाणा की प्रस्तावित विधानसभा की बिल्डिंग को केन्द्रीय सरकार के वन एवम् पर्यावरण मंत्रालय ने ''क्लियरैंस'' (अनुमति) दे दी है।
- इस दस एकड़ प्लॉट को पाने के लिये हरियाणा सरकार ने पंचकुला में 12 एकड़ का प्लॉट, एक्सचेंज (बदले) में देना स्वीकार किया है।
- पंजाब के सभी नेता, चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, इस बात पर संगठित व एकजुट हैं कि हरियाणा पंजाब के बीच इस तरह जमीन की अदला बदली है, गैर कानूनी है, क्योंकि यह तो चण्डीगढ़, पंजाब व हरियाणा की सीमाओं को पुनः परिभाषित करने का प्रयास है।
- हरियाणा के नेता अति प्रसन्न हैं, जमीन की अदला बदली के प्रस्ताव को केन्द्रीय पर्यावरण व वन मंत्रालय से स्वीकृति मिलने से रास्ता खुल जायेगा और वे इसके बाद हरियाणा की हाईकोर्ट बिल्डिंग के लिये जमीन एक्सचेंज का प्रस्ताव भेज सकेंगे।
- अटपटी स्थिति पंजाब के राज्यपाल गुलाब कटारिया की है, क्योंकि वे पंजाब के राज्यपाल होने के साथ चण्डीगढ़ के प्रशासक भी हैं, तथा जमीन एक्सचेंज की कार्यवाही उनके ऑर्डर से ही होती है।

'अमरनाथ बस दुर्घटना के पीड़ितों को मुआवज़ा दिया जाए'

जयपुर, 15 नवंबर। एम.ए.सी.टी. मामलों की विशेष अदालत ने जम्मू-कश्मीर रोडवेज बस के अमरनाथ जाते समय 16 जुलाई, 2017 को दो सौ फीट गहरी खाई में गिरने के मामले में चार मृतकों के आश्रितों और तीन घायलों को ब्याज सहित कुल करीब 1.48 करोड़ रुपए का मुआवजा देने के आदेश दिए हैं। पीठासीन अधिकारी श्वेता गुप्ता ने यह आदेश मृतकों की आश्रित सीकर निवासी अनिता सैनी, जयपुर के दामोदर शर्मा और नवलगढ के पवन कुमार सैनी सहित घायल हुए शिशुपाल, गोकुल और दिनेश सैनी की कुल सात क्लेम याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए। घटना में कुल 16 यात्रियों की मौत होने के साथ ही 47 यात्री घायल हुए थे।

- मोटर वाहन दुर्घटना मामलों की अदालत ने 16 जुलाई 2017 को अमरनाथ जाते समय हुए बस हादसे में चार मृतकों के आश्रितों व तीन घायलों को 1.48 करोड़ रु. के मुआवज़े के भुगतान का आदेश दिया है।

क्लेम याचिकाओं में अधिवक्ता बसन्त ने बताया कि 16 जुलाई, 2017 को यात्री जम्मू-कश्मीर रोडवेज बस से अमरनाथ बाबा के दर्शन करने जा रहे थे। इस दौरान, बस चालक की गलफत एवं लापरवाही, तथा तेज गति के कारण, बस 200 फीट गहरी खाई में गिर गई थी। दुर्घटना में चालक सहित 16 लोगों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राहुल गाँधी का हैलिकॉप्टर दो घंटे रोका गया, उड़ने नहीं दिया'

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। झारखंड के महागामा में एक चुनाव रैली को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा, ''झारखंड में भाजपा ने पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण 27 प्रतिशत से कम करके 14 प्रतिशत कर दिया है। एक तरफ प्रधानमंत्री अपने भाषणों में कहते हैं- ''मैं पिछड़ा वर्ग का हूँ'', दूसरी तरफ पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण कम कर देते है, आपकी जमीन छीन लेते हैं और नोटबंदी के द्वारा आपको बेरोजगार कर देते हैं।''

उन्होंने कहा, ''इसीलिए हमने तय किया है कि झारखंड में अनुसूचित जनजाति आरक्षण 28 प्रतिशत होगा, हम अनुसूचित जाति के लिए 12 प्रतिशत आरक्षण पैदा करेंगे। इसके अलावा अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए हम 27 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करेंगे।''

राहुल गाँधी ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी नरेन्द्र मोदी से डरती नहीं है। उन्होंने मुंबई की धारावी बस्ती बिज़नैसमैन गौतम अडानी को सौंपने देने का आरोप भी लगाया।

राहुल ने कहा, ''हम 56 इंच छाती और मन की बात वाले नरेन्द्र मोदी से नहीं डरते। अरबपति जो भी कहते हैं, नरेन्द्र मोदी वही करते हैं। मोदी जी ने गरीबों का पैसा छीनकर अरबपतियों का 16 लाख करोड़ रुपया माफ कर दिया है। महाराष्ट्र में धारावी की जमीन की कीमत एक लाख करोड़ रुपए है, उसे भी अडानी को सौंपा जा रहा है। सच यह है कि महाराष्ट्र में हमारी सरकार को, जमीन पर कब्जा करने के लिए गिराया गया था।''

उन्होंने, भाजपा तथा आर.एस.एस. सरकारों पर, संविधान को कमज़ोर करने का आरोप लगाते हुए हमला बोला। राहुल गाँधी ने कहा, ''भाजपा और आर.एस.एस. संविधान को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, संविधान में लोगों की आत्मा है, और वो लोग इसे मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। यदि आप संविधान का अनुसरण नहीं करते हैं तो आप देश में अन्याय और नफरत फैलाते हैं, आर.एस.एस. और भाजपा लगातार यह करते रहे हैं। अगर आपको संविधान को भंग करना है तो आगे आइये, आप देखेंगे कि जनता आपसे डरती नहीं है।''

इस दौरान कांग्रेस नेता का हैलिकॉप्टर, एयर ट्रैफिक कंट्रोल से क्लियरैंस नहीं मिलने के कारण झारखंड के गोड्डा शहर से दो घंटे तक उड़ान नहीं भर पाया। राहुल गाँधी के बचाव में, विधायक तथा महागामा विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी दीपिका पांडे सिंह ने कहा, ''सिर्फ इसलिए कि प्रधानमंत्री देवधर में हैं, राहुल गाँधी को उस क्षेत्र के ऊपर से उड़ने की अनुमति नहीं दी गई। हम समझते हैं कि प्रोटोकॉल है, लेकिन कांग्रेस ने 70 सालों तक देश पर राज किया और किसी भी विपक्षी नेता के साथ ऐसी घटना कभी नहीं हुई-- यह स्वीकार्य नहीं है।'' कांग्रेस ने भाजपा पर, जानबूझकर रुकावट डालने का आरोप लगाया, यह संकेत देते हुए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री, समीपवर्ती इलाके देवघर में थे तथा उनकी सुरक्षा का बहाना बताकर, राहुल के हैलिकॉप्टर को उड़ने की इजाज़त नहीं दी। कांग्रेस ने भी सत्तर साल केन्द्रीय सरकार चलायी थी, पर प्र.मंत्री की सुरक्षा के नाम पर, ऐसी एक भी घटना किसी भी विपक्षी नेता के साथ नहीं हुई थी।
- राहुल गाँधी ने इस विलम्ब के बाद आयोजित आमसभा को सम्बोधित करते हुए कहा, कि, भाजपा ने झारखंड में ''बैकवर्ड- वर्ग'' का आरक्षण 27 प्रतिशत से घटाकर 14 प्रतिशत कर दिया है। जबकि, प्र.मंत्री हर बार दावा करते हैं, कि, वे ''बैकवर्ड वर्ग'' के हैं।
- राहुल गाँधी ने इस लय में आगे कहा, कि, उनकी पार्टी ने फैसला किया है कि, झारखण्ड अनुसूचित जनजाति (एस.टी.) का आरक्षण 28 प्रतिशत किया जायेगा, तथा उनकी पार्टी एस.सी. (अनुसूचित जाति) के लिए 12 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा का सृजन करेगी, तथा ओ.बी.सी. के लिए 27 प्रतिशत रिज़र्वेशन की व्यवस्था करेगी।
- राहुल गाँधी ने यह भी आरोप लगाया, कि, महाराष्ट्र में उनके गठबंधन की सरकार का भाजपा ने तख़्ता इसीलिये पलटा, क्योंकि, भाजपा धारावी की जमीन, जिसकी कीमत एक लाख करोड़ रुपये आंकी जाती है, उद्योगपति अडानी को देना चाहती है।
- राहुल ने यह भी आरोप लगाया कि, प्र.मंत्री मोदी जी, अरबपतियों के हाथ की कठपुतली हैं, तथा उन्होंने उद्योगपतियों के 16 लाख करोड़ रुपये के ऋण माफ किये हैं।

'मैरिट के आधार पर मैडिकल कॉलेज आवंटित किए जाएं'

जयपुर, 15 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने नीट यूजी-2024 के स्ट्रे वैकेंसी राउंड से जुड़े मामले में कहा है कि तकनीकी औपचारिकताओं के कारण मेधावी अभ्यर्थियों के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं किया जा सकता। अदालत ने कहा कि मेरिट में स्थान प्राप्त करने के आधार पर ही सीटों का आवंटन होना चाहिए। इसके साथ ही, अदालत ने कहा है कि याचिकाकर्ताओं की मेरिट के आधार पर उन्हें मेडिकल कॉलेज आवंटित किए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हाईकोर्ट ने कहा कि कोविड के कारण जो तकनीकी औपचारिकताएं निभाई गई हैं उनकी वजह से याचिकाकर्ताओं को उनके मौलिक अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है।

कर्नाटक में मुख्यमंत्री ऑफिस की मरम्मत को भाजपा ने फिज़ूल खर्च कहा

सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री कार्यालय की मरम्मत पर 2.40 करोड़ रु. खर्च हुए हैं

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। कर्नाटक के मुख्यमंत्री एस. सिद्धारमैया द्वारा अपने ऑफिस की मरम्मत पर 2 करोड़ रु. खर्च किया गया है, जो राज्य में एक विवाद का विषय बन गया है भाजपा इस शानदार रैनोवेशन को फिजूल खर्च बता रही है क्योंकि इस समय राज्य आर्थिक संकट से जूझ रहा है। भाजपा को इस भारी खर्च के लिए मुख्यमंत्री और कांग्रेस पर भी निशाना साधा जो कि महंगा फर्नीचर लगा कर मुख्यमंत्री कार्यालय की साज सज्जा कर रहे हैं। भाजपा ने कहा यह सब ऐसे समय पर किया जा रहा है जब कर्नाटक सरकार गारंटी पूरी करने का भारी दबाव है। भाजपा ने कहा इतने महंगे मेक ओवर की क्या जरूरत है।

भाजपा ने कहा सिद्धारमैया व उनका परिवार भ्रष्टाचार में लिप्त है, गरीबों को दी गई जमीनें उनका परिवार हड़प लेता है। इसके जवाब में कहा कि रैनोवेशन मुख्यमंत्री की किसी सम्पत्ति पर नहीं हो रहा है सरकारी कार्यालय का हो रहा है जो कि भविष्य के मुख्यमंत्रियों के काम भी आएगा। कांग्रेस ने मरम्मत में 2.4 करोड़ रु. खर्च होने पर कहा कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- भाजपा का कहना है, एक ओर तो मंत्रालयों पर गारंटी पूरी करने का दबाव है और उनके पास विकास के लिए फंड नहीं हैं, ऐसे में मुख्यमंत्री कार्यालय की मरम्मत और आधुनिक साज सज्जा पर जो खर्च हो रहा है वह फिज़ूल खर्ची है।
- कांग्रेस का कहना है कि मुख्यमंत्री के सरकारी कार्यालय की मरम्मत हुई है, निजी सम्पत्ति की नहीं, इसका इस्तेमाल आने वाले मुख्यमंत्री भी करेंगे।
- कांग्रेस ने कहा, मुख्यमंत्री कार्यालय 70 साल पुराना है और इसे मरम्मत की सख्त जरुरत थी।

हाईकोर्ट बार अध्यक्ष ने सी.जे.आई. का सम्मान किया

जयपुर, 15 नवंबर। बार कौंसिल ऑफ इंडिया की ओर से सुप्रीम कोर्ट के नवनियुक्त चीफ जस्टिस संजीव खन्ना का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रहलाद शर्मा ने शिरकत कर चीफ जस्टिस का सम्मान किया।

- बार काउन्सिल ऑफ इंडिया द्वारा नए चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया, संजीव खन्ना के स्वागत में आयोजित कार्यक्रम में राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रहलाद शर्मा भी शामिल हुए।

इस मौके पर, सी.जे.आई. खन्ना ने कहा कि उन्होंने बतौर अधिवक्ता न्यायपालिका में वर्ष 1983 में अपनी यात्रा को शुरू किया था। उन्होंने कहा कि न्यायाधीश न्यायपालिका का महत्वपूर्ण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय प्रेस परिषद
PRESS COUNCIL OF INDIA

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू
राष्ट्रदूत

इस राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर

हमारा समाचारपत्र,
स्वतंत्र निष्पक्ष तथा नैतिक
पत्रकारिता के प्रति अपनी
वचनबद्धता को दोहराता है।

16 नवम्बर

'महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने मेरे हैलिकॉप्टर की भी जांच की'

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने यह कहते हुए, चुनाव में पक्षपात के आरोपों को खारिज किया और कहा कि भाजपा स्वतंत्र चुनाव पर भरोसा करती है

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आज कहा कि महाराष्ट्र के हिंगोली कस्बे में चुनाव आयोग के अधिकारियों ने उनके हेलिकॉप्टर की चैकिंग की थी। उन्होंने जोर देते हुये कहा कि भाजपा निष्पक्ष चुनावों में विश्वास करती है। विपक्ष इसे एक ड्रामा बता रहा है।

शाह ने एक्स पर डाली गई एक पोस्ट में कहा ''आज महाराष्ट्र के हिंगोली चुनाव क्षेत्र में मेरे चुनाव प्रचार के दौरान चुनाव आयोग के अधिकारियों ने हेलिकॉप्टर की जाँच की। भाजपा निष्पक्ष चुनावों तथा स्वस्थ चुनाव तन्त्र में विश्वास करती है। तथा माननीय चुनाव आयोग द्वारा बनाये गये सभी नियमों का पालन करती है।'' उन्होंने आगे कहा ''हम सब को स्वस्थ चुनाव तन्त्र में अपना योगदान देना चाहिये तथा भारत को विश्व का सबसे मजबूत लोकतन्त्र बनाये रखने के लिये अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये।''

- केन्द्रीय गृह मंत्री शाह ने एक्स पर लिखी पोस्ट में दावा किया कि तलाशी की कार्यवाही महाराष्ट्र की हिंगोली सीट पर चुनाव प्रचार के दौरान हुई।
- अमित शाह के इस बयान को, उद्धव ठाकरे के सामान की चुनाव आयोग द्वारा की गई जांच से जोड़कर देखा जा रहा है, जिसका विपक्ष ने भारी विरोध किया था। विपक्ष शाह के हैलिकॉप्टर की जांच को ड्रामा बता रहा है।
- बुधवार को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के सामान की भी जांच हुई।
- मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा कि सत्ता का दुरुपयोग रोकने व पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सभी नेताओं के हैलिकॉप्टर व सामान की जांच की जा रही है।

अमित शाह ने यह बात इस समय उजागर की जब शिवसेना (यू.बी.टी.) अध्यक्ष उद्धव ठाकरे ने उनके बैगों की चैकिंग पर नाराजगी व्यक्त की थी। इस घटना से आम जनता की इस सोच को और बल मिला कि चुनाव आयोग पक्षपात से काम लेता है तथ यह केवल विपक्षी नेताओं के हेलिकॉप्टरों तथा विमानों को ही चैक करता है।

नैशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी- शरद चन्द्र पवार (एन.सी.पी.एस.पी.) की नेता सुप्रिया सुले ने भी इस घटना की निन्दा की थी तथा इसे ''गन्दी राजनीति'' बताया था। सुप्रिया सुले ने कहा था कि ठाकरे के बैग दो बार चैक किये गये, जबकि सत्तासीन राजनेताओं के बैगों की चैकिंग इस तरह नहीं की गई। बुधवार को ''स्टैन्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजर्स'' (एस.ओ.पी) के अन्तर्गत पालघर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

घरेलू काम करने वाली महिलाओं का अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान

यूएन वीमेन और यूनाइटेड नेशंस डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक एंड सोशल अफेयर्स ने अपनी एक ताज़ा रिपोर्ट में खुलासा किया है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता की खाई अभी भी बहुत गहरी है, जिसे भरना इतना आसान नहीं है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में प्रगति हुई है मगर वह बेहद धीमी है। भारत में महिलाओं के सामने सबसे व्यापक मुद्दों में से एक लैंगिक भेदभाव है। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दुनिया में हर जगह प्रचलित है। महिलाएं आज भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है। महिलाएं पुरुष की तुलना में बेहद संकुचित क्षेत्र में चारदीवारी के भीतर ही रहती आई हैं। हाल ही में एक रिसर्च में पता चला है कि घरेलू काम करने वाली महिलाएं अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान देती हैं, लेकिन फिर भी उन्हें इसका कोई श्रेय नहीं मिलता। घर और समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेदभाव से पीड़ित होती हैं। महिला और पुरुष समाज के मूल आधार हैं। समाज में लैंगिक असमानता एक बहुत बड़ी खाई है, जिससे समानता के स्तर को प्राप्त करने का सफर बहुत मुश्किल हो जाता है। जहाँ तक लैंगिक समानता की बात है स्त्री-पुरुष में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। लैंगिक समानता का अर्थ है हर क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं दोनों को समान अवसर प्रदान करना, चाहे वह कार्यस्थल हो, अर्जित वेतन हो, या प्रदान किए गए अवसर हों। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, अनुच्छेद 15, अनुच्छेद 16 और अनुच्छेद 39 कुछ महत्वपूर्ण अनुच्छेद हैं जो समानता की अवधारणा से संबंधित हैं। वैल्यूएशन ऑफ अनपेडहाउसहोल्डएक्टिविटीज इन इंडिया नाम की एक रिसर्च रिपोर्ट में भारत में घर के काम की आर्थिक कीमत का आंकलन किया गया है। रिसर्च के आंकड़े बताते हैं कि महिलाएं रोजाना सात घंटे से अधिक समय बिना वेतन के घरेलू और देखभाल के काम में लगाती हैं। नौकरीपेशा महिलाएं भी करीब 5 से 8 घंटे इसी तरह के कामों में लगाती हैं। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के बावजूद वर्तमान भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता जटिल रूप में व्याप्त है। इसके कारण महिलाओं को आज भी एक ज़िम्मेदारी समझा जाता है। महिलाओं को सामाजिक और पारिवारिक रुढ़ियों के कारण विकास के कम अवसर मिलते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। हालाँकि हमारे देश में महिला बराबरी के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई है मगर वह नाकाफी है। समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से विमर्श किया जा रहा है।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 2023 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि 6 साल से ऊपर की उम्र के लोग रोजाना औसतन 432 मिनट, यानी करीब 7.2 घंटे, बिना वेतन के घरेलू कामों में बिताते हैं। इस अध्ययन में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले काम की कीमत लगभग 22.7 लाख करोड रुपये आंकी गई है, जो भारत की जीडीपी का करीब 7.5 प्रतिशत है। एक सर्वे के मुताबिक वेतन से लेकर परमोशन के दौरान महिलायें भेदभाव का शिकार हो रही है। कामकाजी महिलाओं का साफ तौर पर कहना है लिंगभेद के कारण वे इसकी शिकार हुई है। कामकाजी महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना पड रहा है। पारिवारिक जिम्मेदारियां उनके विकास में रोड़ा बन रही है। यह स्थिति दुर्भाग्यजनक है।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 2023 की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि 6 साल से ऊपर की उम्र के लोग रोजाना औसतन 432 मिनट, यानी करीब 7.2 घंटे, बिना वेतन के घरेलू कामों में बिताते हैं। इस अध्ययन में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले काम की कीमत लगभग 22.7 लाख करोड़ रुपये आंकी गई है, जो भारत की जीडीपी का करीब 7.5 प्रतिशत है।

महिला जननी है। देखा जाये तो उनकी विशेष परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें अधिक अवसर मिलने चाहिए मगर ऐसा नहीं हो रहा है। पारिवारिक जिम्मेदारियां अभिशाप बन गयी है।

महिला सशक्तिकरण और बराबरी के तमाम दावों के बावजूद आजादी के लगभग सात दशकों बाद भी समाज में महिलाओं की हालत में कोई खास सुधार नहीं आया है । समाज के नजरिए में भी महिलाओं के प्रति अब तक खास बदलाव देखने को नहीं मिला है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं में बढ़ती शिक्षा के बावजूद देश में आर्थिक मोर्चे पर उनकी भागीदारी में गिरावट आई है। इसकी वजह यह है कि ज्यादातर परिवारों में अब भी महिलाओं को घर से दूर रह कर नौकरी करने की इजाजत नहीं है। घर-परिवार व पति से दूर रह कर नौकरी करने वाली महिलाओं को समाज में अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता। आज के आधुनिक युग में भी पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता खुलेआम देखी जाती है। यह भेदभाव न केवल कार्यस्थलों पर बल्कि अपने घरों में भी पाते हैं। बहुदा यह देखा जाता है महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक अवसरों से वंचित रखा जाता है। उन्हें अपनी राय रखने की अनुमति नहीं है और वे अपने घरों तक ही सीमित हैं, जिससे वे पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर हैं। महिला के लिए अपने संवैधानिक अधिकारों के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है, खासकर ऐसे समाज में जहां लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के खिलाफ हिंसा अभी भी प्रचलित है। अपने अधिकारों को जानना उन्हें किसी भी प्रकार के अन्याय, दुर्व्यवहार या भेदभाव के खिलाफ खड़े होने और आत्मविश्वास और सम्मान के साथ जीवन जीने के लिए सशक्त बना सकता है। समाज के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण करना भी आवश्यक है, जहां हर कोई बिना किसी डर के और एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ रह सके। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार विश्व की समूची संपत्ति में केवल 2 प्रतिशत मालिक महिलाएं हैं। चल-अचल संपत्ति में भी भारी असमानता है। महिला को हमने चौकी चूल्हे तक सीमित कर रखा है। साथ घूमने, सिनेमा देखने या शॉपिंग पर ले जाने मात्र से महिला को उसके अधिकार नहीं मिल जायेंगे। इसके लिए हमें अपनी संकीर्ण सोच के दायरे से बाहर निकलना होगा। मानसिकता बदलनी होगी। नजरियाँ साफ करना होगा। अपनी और दूसरे की बेटी को एक समझना होगा। ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में महिलाओं को दोयम दर्जे की मार से जूझना पड रहा है। यूनीसेफ की रिपोर्ट यह बाताती है कि महिलाएं नागरिक प्रशासन में भागीदारी निभाने में सक्षम हैं। यही नहीं, महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बगैर किसी भी क्षेत्र में काम ठीक से और पूर्णता के साथ संपादित नहीं हो सकता।

–अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

पुस्तक समीक्षा : बेतुकी दुनिया में तुक की बात

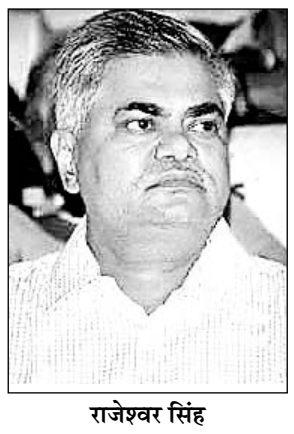

राजेश्वर सिंह

लोकेश कुमार सिंह साहिल के गजल संग्रह तुक की गजलों के सीमित दायरे में लगभग समूचा जीवन अपने अछोर विस्तार और असीम गहराई के साथ मौजूद है। यहाँ जीवन है, जीवन का उद्देश्य है, उद्देश्य की साधना है, सिद्धि का उत्सव है, पराजय का स्वीकार है, प्रणय की अभिलाषा है, विरह का विषाद है, अपनत्व का आनन्द है, सम्बन्धों का निर्वहन है और अकेलेपन की गरिमा है।

यहाँ स्व और पर के परे जाकर सम्पूर्ण सृष्टि और समष्टि के विधान और विधाता से जुड़ने व उसे समझने की अन्तहीन अकुलाहट और अबोधगम्य छटपटाहट भी है। देश और काल की सीमा रेखा से परे अनिर्वचनीय सत्य का वह रहस्यमय संसार, जो इस भौतिक जगत के क्रियाकलापों का नियमन, नियंत्रण व निर्देशन करता है, उसे जानने की जिज्ञासा और न जान पाने की निराशा के बीच लघु मानव का मन, हृदय और मस्तिष्क जिन अनुभूतियों से गुजरता है, जिस वैचारिकी का प्रणयन करता है और लोक व्यवहार के जिन नियमों का निर्माण करता है, वे शाश्वत्, सनातन व चिरंतन न होने के बावजूद सामयिक सत्य को परिभाषित अवश्य करते हैं और उनके आलोक में मनुष्य अपने लघु जीवन पथ की यात्रा भलीभांति पूरी कर लेता है। ये गजलें ऐसी ही अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं, ऐसी ही वैचारिकी का प्रणयन हैं और ऐसे ही जीवन सूत्रों का निर्माण हैं।

प्रथमदृष्टया जीवन व जगत का कोई प्रयोजन प्रतीत नहीं होता और यदि कोई प्रयोजन है भी तो वह जीवन और जगत के प्रणेता को ही पता होगा, किन्तु इस जीवन को जीने की सरलता व सुगमता के लिए मनुष्य सृष्टि व समष्टि के रंगमंच पर अपनी सम्भावित भूमिका का आकलन करता है, उस भूमिका के लिए स्वयं को तैयार करता है और वह भूमिका प्राप्त हो जाने पर समष्टि से समायोजन कायम करते हुए उस भूमिका का निर्वहन करता है।

आवश्यक नहीं है कि यह आकलन, तैयारी व निर्वहन मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं के अनुकूल हो और समष्टि के साथ समायोजन की समस्या तो है ही। जहाँ यह अनुकूलन व समायोजन विद्यमान है, वहाँ सिद्धि का सुख व प्रसिद्धि का परितोष दृष्टिगोचर होता है, किन्तु दुर्भाग्यवश जहाँ ये दोनों तत्व नहीं हैं, वहाँ मनुष्य कुण्ठा, निराशा, हताशा व अवसाद से भर जाता है और उसे जीवन निष्फल व निष्प्रयोजन दिखने लगता है। कई बार ऐसा भी होता है कि सिद्धि व प्रसिद्धि के बावजूद मनुष्य सुख व आनन्द से वंचित ही रहता है। इसी लिए जीवन व जगत के नियम हर स्थिति व परिस्थिति के लिए पूर्ण व पर्याप्त प्रतीत नहीं होते। इसके बावजूद इन नियमों के निर्माण की दिशा में साहिल के प्रयास प्रशंसनीय हैं। एक बानगी दृष्टव्य है–

बज्म में तू बात अपनी रख मगर
हो सलीके मन्द वो गुफ्तार कर।

जीवन पथ पर चलने के लिए मनुष्य को साथी एवं सहचर की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता की प्रतिपूर्ति कुछ हद तक माता, पिता, भाई, बहिन, परिवार, सम्बन्धी, पड़ोसी, शिक्षक व सहपाठी इत्यादि से होती है किन्तु एक अनन्य एवं अन्तरंग सम्बन्ध की उत्कट व अदम्य आकांक्षा एवं अभिलाषा हर मनुष्य के अन्तस्तल में अन्तर्निहित होती है जहाँ असीम प्रेम हो, एकान्तिक समर्पण हो, अनवरत मुखर व मौन संवाद हो तथा कुछ भी गोपन न रहे। वस्तुतः यह आंकाक्षा भी एक मृगमरीचिका ही है, क्योंकि दो भिन्न अस्तित्वों के मध्य विलयन जैसा यह सुसमायोजन कभी कभी तो संभव है पर सदा और सर्वदा नहीं। इसी लिए हर प्रेमकथा में विरह के और हर प्रणय प्रसंग में पार्थक्य के स्वर भी समाहित होते हैं। साहिल की निम्नलिखित पंक्ति में यह स्वर अत्यन्त मुखरता व प्रखरता के साथ अभिव्यक्त हुआ है :-

नहीं अब नाम तक भी याद उनका कभी सब कुछ हमारे जो रहें हैं।

बीते हुए जमाने के पानीदार एवं पायेदार लोगों की तहजीब और तमीज के सामने साहिल खुद को और इस जमाने के दीगर लोगों को बौना ही समझते हैं, तभी तो वे कह सके हैं :-

बात मुझ में भी कुछ तो है लेकिन वो कहाँ जो थी बाप दादों में।

साहिल पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के सहयोगी और अनुयायी रहे हैं। चन्द्रशेखर केप्रति उनके मन का श्रद्धा भाव इस किताब के इन्तिसाब में मुखरित होता है। यह इन्तिसाबही भारतीय संविधान की प्रस्तावना की तरह इस किताब के बारे में, इसके प्रणेता के बारे, उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि के बारे में, उनके प्रेरणा स्त्रोत के बारे में और उनके सपनों के भारत के बारे में अत्यन्त संक्षेप में सबकुछ कह देता है। उनके दिल और दिमाग में चन्द्रशेखर ही रहे होंगे जब उन्होने यह लिखा होगा :-

कुछ लोगों का मस्तक छूकर हो जाती है चन्दन मिट्टी।

इस महान देश की परम्परा विद्वत्ता और वीरता के साथ विनम्रता की रही है। हमारी मान्यता है कि परम पिता परमात्मा ने ही जीवन और जगत के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त किया है, इसलिए हम हर पेड़, पहाड़, नदी, समन्दर, जीव और जन्तु के सामने उसमें अन्तर्निहित दिव्यता की वजह से झुकते आये हैं। हमारा यह भी मानना है कि कोई विचारक, चिंतक, विचारक, दार्शनिक, शासक, प्रशासक, सेनापति, वैज्ञानिक, कवि या लेखक इतिहास का आखिरी आदमी नहीं होता। यह धरती रत्नगर्भा और रत्नप्रसूता है। जब तक यह सृष्टि रहेगी, एक से एक विद्वान, बुद्धिमान व बलवान लोग इस धरती परअवतरित होते रहेंगे और अपनी प्रतिभा व पराक्रम से इसे चमत्कृत व गौरवान्वित करते रहेंगे। इसलिए भारतीय परम्परा में विद्वत्ता और वीरता के ऊपर विनम्रता को प्रतिष्ठित किया गया है। शील शक्ति सौन्दर्य समन्वित भगवान राम के गुणों में भी शील को प्राथमिकता प्रदान की गई है। इसलिए साहिल जब ये कहते हैं कि "फकत आता है साहिल तुक मिलाना, नहीं कुछ भी तो तेरी शाइरी में" तो इसे हम उनकी विनम्रता कीअभिव्यक्ति ही मान सकते हैं क्योंकि वे भारतीय परम्परा में रचे बसे व्यक्ति हैं। हमारी तोउनके लिए उन्हीं के शब्दों में यह कामना है –

दोस्तों ये तुक मिलाना, ये तरन्नुम फिर कहाँ,
बाद मेरे ये जमाना, सोचता रह जायेगा।

–राजेश्वर सिंह
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)।

पुष्कर को अयोध्या और काशी की तर्ज पर विकसित किया जाएगा : दिया कुमारी

अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने शिरकत की

उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन समारोह में पुरस्कार दिये।

पुष्कर मेला समापन समारोह के दौरान रस्सा कस्सी, मटका दौड़, चम्मच रेस सहित कई रंगारंग कार्यक्रम आयोजित हुये।

अजमेर, (कासं)। उपमुख्यमंत्री एवं जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी ने कहा कि तीर्थराज पुष्कर को अयोध्या और काशी की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय श्री पुष्कर पशु मेला प्रतिवर्ष पूरी भव्यता के साथ आयोजित होगा, केन्द्र व राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से राजस्थान अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अग्रणी होगा। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शुक्रवार को अन्तर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला-2024 के समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित किया।

उन्होंने कहा कि तीर्थराज पुष्कर का पूरे विश्व में विशिष्ट महत्व है। जगतपित ब्रह्मा की नगरी पुष्कर करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र है। राज्य सरकार पुष्कर के विकास के लिए पूरी गंभीरता के साथ काम कर रही है। पुष्कर का विकास अयोध्या एवं काशी की तर्ज पर सुनियोजित तरीके से किया जाएगा। पुष्कर विकास की बड़ी रूपरेखा तैयार कर कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस साल 6 लाख से अधिक देशी-विदेशी पर्यटक व श्रद्धालुओं ने मेले में भाग लिया है। वर्ष 2019 के बाद पहली बार इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु मेले में आए हैं। पर्यटन और धार्मिक दृष्टि से हर साल मेले को पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा। इसके लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे। इस साल 20 हजार से ज्यादा विदेशी पर्यटक भी मेले में आए हैं। देश के प्रत्येक व्यक्ति की भावना पुष्कर से जुड़ी हुई है। मेले और पुष्कर विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। उन्होंने कहा कि पुष्कर मेले का इतना प्रचार-प्रसार किया जाएगा कि भारत आने वाला व्यक्ति पुष्कर आने की इच्छा रखे। यहां संसाधन भी उसी अनुरूप विकसित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार देश और राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए पूरी गंभीरता से काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राज्य सरकार राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए मिल कर काम कर रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए बजट में 5 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी बनाएंगे।

जल संसाधन मंत्री एवं पुष्कर विधायक सुरेश रावत ने कहा कि पुष्कर मेले को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति है। इस बार मेला पूरी तरह सफल रहा है। जगतपिता ब्रह्मा की नगरी तीर्थराज पुष्कर का भव्य विकास किया जाएगा। उन्होंने मेले के सफल आयोजन पर सभी को बधाई दी। रावत ने कहा कि पुष्कर का सुनियोजित विकास किया जा रहा है। सभी को साथ लेकर समन्वित रूप से विकास कार्य करवाए जाएंगे। इससे पूर्व मेले में रस्साकस्सी, मटका दौड़, चम्मच रेस और लोक नृत्यों की शानदान प्रस्तुतियां दी गई। अतिथियों ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर मसूदा विधायक वीरेन्द्र सिंह कानावत, नगर परिषद सभापति कमल पाठक, जिला कलक्टर लोक बन्धु, पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर गजेन्द्र सिंह राठौड़, ज्योति ककवानी सहित प्रशासनिक अधिकारी व जन प्रतिनिधि उपस्थित थे।

- **'पर्यटन और धार्मिक दृष्टि से हर साल मेले को पूर्ण भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा, इसके लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे'**

राशिफल शनिवार 16 नवम्बर, 2024

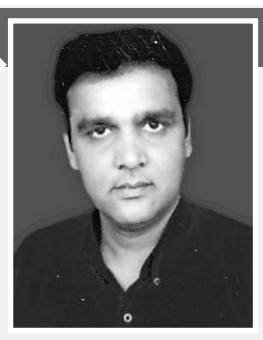

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शनिवार विक्रम सम्वत 2081, कृत्तिका नक्षत्र सायं 7.28 तक, परिद्य योग रात्रि 11.47 तक, बालव करण दिन 1.25 तक चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति – सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरु-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

आज सवार्थसिद्धि योग ओर अमृतसिद्धि योग सायं 7.28 से सूर्योदय तक है। आज मार्गशीर्ष संक्रांति है। सूर्य वृश्चिक में प्रात: 7.32 से प्रवेश करेगा। पुण्य काल दिन 1.56 तक है पदमक योग सायं 7.28 तक रहेगा।

श्रेष्ठ चौघडिया – शुभ 8.11 से 9.31 तक, चट 12.11 से 1.32 तक, लाभ-अमृत – 1.32 से 4.12 तक

राहुकाल – 9.00 से 10.30 तक, सूर्योदय 6.51 सूर्यास्त 5.32

मेष

मेष – व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। प्रतिष्ठि व्यक्तियों से व्यायावसायिक सम्पर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठिक होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु

धनु – परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी।

वृष

वृष – व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यो के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

कन्या

कन्या – अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यो को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर

मकर – घर-परिवार में शुभ-मांगलिक-धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

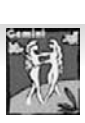

मिथुन

मिथुन – आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी। वाणि पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

तुला

तुला – परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामुहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

कुम्भ – परिवार में मांगलिक-धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बडेगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

कर्क – व्यावसायिक कार्यो को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क बनेगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक

वृश्चिक – परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन

मीन – परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

हाईकोर्ट ने एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज मामले में फैसला सुनाया

- **फैसले में हाईकोर्ट ने इस एक्ट से चार जाति सूचक शब्दों को हटाया**
- **हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि भंगी, नीच, भिखारी, मंगनी जैसे शब्द जातिसूचक नहीं है**

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज मामले में बड़ा फैसला सुनाया है। फैसले में हाईकोर्ट ने इस एक्ट से चार जाति सूचक शब्दों को हटा दिया गया है। हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा- भंगी, नीच,भिखारी, मंगनी जैसे शब्द जातिसूचक नहीं है। मामला अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान विभाग के कार्मिकों से बहस से जुड़ा है, जिसके बाद मामला कोर्ट पहुंचा कोर्ट में सुनवाई करते हुए इन शब्दों का इस्तेमाल करने वाले 4 आरोपियों के खिलाफ एससी/एसटी एक्ट की धाराओं को हटा दिया। जस्टिस वीरेंद्र कुमार की बैंच ने यह फैसला सुनाया है। हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए एससी-एसटी एक्ट की धाराओं से बरी कर दिया है।

जानकारी के अनुसार मामला जैसलमेर के कोतवाली थाने का है। यहां 31 जनवरी 2011 को एससी-एसटी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया था। घटनाक्रम 31 जनवरी 2011 का है। हरीश चंद्र अन्य अधिकारियों के साथ अतिक्रमण अचल सिंह द्वारा किए गए अतिक्रमण की जांच करने गए थे। जब वे साइट का नाप कर रहे थे, तब अचल सिंह ने सरकारी अधिकारी हरीश चंद्र को अपशब्द जिनमें (भंगी, नीच, भिखारी और मांगनी) आदि शब्द कहे। इस दौरान हाथापाई भी हुई। इस पर सरकारी अधिकारी की ओर से अचल सिंह के खिलाफ एससी-एसटी एक्ट का मामला कोतवाली थाने में दर्ज करवाया गया था। इस मामले में चार लोगों पर आरोप लगाए गए थे। इन चारों ने एससी-एसटी एक्ट के तहत लगे आरोप को चुनौती दी थी। इसके बाद हाईकोर्ट ने याचिका पर सुनवाई करते हुए फैसला सुनाया। अपीलकर्ताओं का कहना था कि पीड़ित की जाति के बारे में उन्हें जानकारी नहीं थी। यह तर्क दिया गया कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि घटना सार्वजनिक रूप से हुई, गवाह महज अभियोजन पक्ष ही था। इधर, मामला दर्ज होने के बाद कोतवाली पुलिस की ओर से जांच शुरू की गई। इस दौरान इससे संबंधित कोई सबूत नहीं होने पर इसे झूठा बताया गया। इसके बाद इस पर चार्जेज फ्रेम हुए।

मामले की सुनवाई में अपीलकर्ता के वकील लीलाधर खत्री ने कहा कि अपीलकर्ता को अधिकारी के जाती के बारे में जानकारी नहीं थी। इसके कोई सबूत भी नहीं मिले है कि ऐसे शब्द बोले गए और ये घटना भी जनता के बीच हुई हो। ऐसे में पुलिस की जांच में जातिसूचक शब्दों से अपमानित करने का आरोप सच नहीं माना गया।

ऐसे में हाईकोर्ट ने आदेश दिए कि भंगी, नीच, मांगनी और भिखारी शब्द जातिसूचक नहीं है और यह एससी/एसटी एक्ट में शामिल नहीं होगा। ऐसे में जातिसूचक शब्दों के आरोप के मामले में अपीलकर्ता को बरी किया लेकिन ड्यूटी करने वाले अधिकारियों को रोका गया है इस पर कार्रवाई जारी रहेगी। कोर्ट के अनुसार यह शब्द जातिसूचक नहीं है। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता के वकील ने तर्क दिया कि गालियां प्रतिवादी को अपमानित करने के इरादे से नहीं बल्कि अनुचित माप के लिए दी गई। याचिकाकर्ता का कार्य सरकारी कर्मचारियों द्वारा गलत तरीके से किए जा रहे माप के विरोध में था।

सरप्लस शिक्षकों और कार्मिकों का समायोजन होगा

बीकानेर, (निसं)। राज्य के विभिन्न स्कूलों में सरप्लस चल रहे शिक्षकों और कार्मिकों का समायोजन 12 दिसंबर से प्रस्तावित अर्द्धवार्षिक परीक्षा से पहले होगा। राज्य में स्कूल क्रमोन्नत होने और महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम में बदलाव होने से अनेक शिक्षक अधिशेष चल रहे हैं। इन शिक्षकों का रिक्त पदों पर समायोजन किया जाएगा। माध्यमिक एवं प्रारंभिक दोनों शिक्षा निदेशकों ने संयुक्त हस्ताक्षर से सरप्लस शिक्षकों के समायोजन के लिए 30 बिंदुओं की गाइडलाइन और कैलेंडर घोषित कर दिया है। गाइडलाइन के मुताबिक सरप्लस शिक्षकों का समायोजन पास के स्कूल में किया जाएगा। वहीं, अंग्रेजी माध्यम स्कूल और नव क्रमोन्नत सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में जहां अभी तक पद स्वीकृत नहीं हुए हैं वहां भी स्टाफिंग पैटर्न से पद मानकर अधिशेष शिक्षकों को समायोजित किया जा सकेगा। समायोजन के लिए शिक्षा निदेशालय ने टाइम फ्रेम भी घोषित कर दिया है।

जयपुर में छोटी और बड़ी चौपड़ को बम से उड़ाने की धमकी

सात थानों की पुलिस और डॉग स्कवॉड टीम ने करीब 4 घंटे तक परकोटा क्षेत्र में तलाशी ली

जयपुर में छोटी-बड़ी चौपड़ को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद पुलिस और डॉग स्कवॉड टीम ने परकोटा क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया।

- शुक्रवार सुबह एक युवक ने पुलिस कंट्रोल रूम में फोन करके छोटी व बड़ी चौपड़ को बम से उडाने की धमकी दी थी
- पुलिस ने इस मामले में एक युवक को डिटेन कर लिया है, अब उससे पूछताछ की जा रही है

जयपुर। राजधानी जयपुर में छोटी-बड़ी चौपड़ को बम से उडाने की धमकी मिलने के बाद पुलिस में खलबली मच गई। आनन-फानन में पुलिस और डॉग स्कवॉड टीम ने करीब 4 घंटे तक दोनों जगहों पर सर्च अभियान चलाया। तलाशी में कुछ भी नहीं मिलने पर पुलिस ने राहत की सांस ली। इस सर्च अभियान में सात थानों की पुलिस शामिल रही। बताया जा रहा है कि पुलिस ने इस मामले में एक युवक को डिटेन कर लिया है।

पुलिस के अनुसार शुक्रवार सुबह करीब साढ़े 11 बजे छोटी चौपड़ और बड़ी चौपड़ को बम से उडाने की धमकी भरा कॉल पुलिस कंट्रोल रुम में आया था। इस पर कोतवाली और माणकचौक थाना पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पर पुलिस के आलाधिकारियों के साथ अन्य थानों की पुलिस मौके पर पहुंची और सर्च अभियान चलाया गया। सूचना मिलते ही बम स्क्वायड, डॉग स्क्वायड समेत पुलिस की टीमें मौके पर पहुंची। चप्पे-चप्पे पर तलाशी ली गई, लेकिन कहीं पर भी कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली।

कोतवाली थानाधिकारी राजेश शर्मा ने बताया कि छोटी चौपड़ पर बम रखा होने की सूचना कंट्रोल रुम ने दी थी। इस पर 4 घंटे तक आस-पास के इलाके को खंगाला गया, लेकिन कुछ भी नहीं मिला। एडिशनल डीसीपी उत्तर प्रथम बजरंग सिंह ने बताया कि बड़ी चौपड़ और छोटी चौपड़ पर बम रखा होने की सूचना कंट्रोल रुम से मिली थी। इस पर कोतवाली, माणकचौक सहित उसकी सर्किल के थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। दोनों जगहों के आस-पास करीब 100 मीटर की दूरी में सर्च किया गया। सर्च में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। किसी अज्ञात व्यक्ति ने पुलिस कंट्रोल रूम में फोन करके भय फैलाने के लिए बम की झूठी सूचना दी थी।

एडिशनल पुलिस कमिश्नर कुंवर राष्ट्रदीप ने बताया कि शुक्रवार सुबह करीब 11.30 बजे कंट्रोल रुम में एक फोन कॉल आया था। कॉल कर्ता ने छोटी चौपड़ और बड़ी चौपड़ को बम से उडाने की धमकी दी गई थी। कंट्रोल रुम ने इसकी सूचना सम्बंधित थाना पुलिस को दी। सूचना पर सर्च अभियान चलाया गया। सर्च अभियान में कई थानों की पुलिस शामिल रही। सर्च में कुछ भी नहीं मिला। यह एक फेक कॉल थी।

गौरतलब है कि राजधानी जयपुर में पिछले कुछ माह में स्कूल-कॉलेज, अस्पताल और एयरपोर्टस को बम से उडाने की कई बार धमकी मिल चुकी है। सभी धमकियों के बाद जांच की गई, लेकिन कुछ भी नहीं मिला। अक्टूबर महीने के अंत तक देश भर में 400 फ्लाइट को बम से उडाने की धमकी दी जा चुकी थी। वहीं, जयपुर और जोधपुर से उडान भरने वाली फ्लाइट को बम से उडाने की भी लगातार धमकियां मिलती रही है। अप्रेल में होटल्स को बम से उडाने की धमकियां मिल चुकी हैं। जयपुर एयरपोर्ट को 6 बार बम से उडाने की धमकी मिल चुकी है।

महवा नगर पालिका चेयरमैन के निलंबन पर हाईकोर्ट की रोक

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने दौसा जिले की महवा नगर पालिका चेयरमैन नर्बदा देवी गुर्जर को राहत देते हुए उसे निलंबित करने वाले स्वायत्त शासन विभाग के गत एक अक्टूबर की क्रियान्विति पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने राज्य सरकार से मामले में अन्य दोषी अफसरों के खिलाफ की जाने वाली कार्रवाई का ब्यौरा देने को कहा है। जस्टिस महेन्द्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश नर्बदा देवी गुर्जर की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता प्रशांत कुमार ने अदालत को बताया कि स्वायत्त शासन विभाग के निदेशक ने गत एक अक्टूबर को आदेश जारी कर याचिकाकर्ता को महवा नगर पालिका के चेयरमैन के पद से निलंबित कर उसके खिलाफ जांच करने का निर्देश दिया था। इसे हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए कहा कि तथ्यात्मक रिपोर्ट व जांच रिपोर्ट में उसका कहीं पर भी नाम नहीं है। इसके बावजूद उसे दुर्भावनापूर्वक चेयरमैन पद से निलंबित कर हटाए जाने की कार्रवाई की जा रही है। जिन जांच रिपोर्ट पर उसके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, उनमें अन्य दोषी अफसरों के नाम है। जबकि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है। याचिकाकर्ता एक निर्वाचित जनप्रतिनिधि है और उसका कार्यकाल 25 नवंबर को खत्म हो रहा है। उसे केवल निलंबन आदेश के जरिए ही पद से नहीं हटाया जा सकता। इसलिए उसे निलंबित करने वाले आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगाई जाए और उसे पद पर कार्य करते रहने दिया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने निलंबन आदेश पर अंतरिम रोक लगाते हुए मामले में अन्य अफसरों पर की जाने वाली कार्रवाई का ब्यौरा पेश करने को कहा है।

गुरू नानकदेव के प्रकाश पर्व और बिरसा मुण्डा की जयंति पर अर्पित किए श्रद्धासुमन

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने आज सिख धर्म के प्रथम गुरू गुरूनानक देव के जन्मोत्सव और भगवान बिरसा मुण्डा की जयंति के अवसर पर प्रदेश कार्यालय में उनके चित्र के समक्ष श्रद्धासुमन अर्पित किए। इसके बाद भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने राजा पार्क स्थित गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में संगत के दर्शन कर मत्था टेका और कीर्तन श्रवण किया। इस दौरान राठौड़ ने लंगर सेवा कर प्रसाद ग्रहण किया।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में मीडिया से बातचीत करते हुए प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि आज दो महापर्व एक साथ मनाने का सौभाग्य हमें मिल रहा है। एक ओर समाज के गौरव भगवान बिरसा मुण्डा जंयति और दूसरी ओर गुरूनानक देव का प्रकाश पर्व एक साथ मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं वर्षगांठ मनाने का आव्हान किया है।

'कांग्रेस ने आदिवासी महापुरूषों के बलिदान को तोड़-मरोडकर लोगों के सामने किया पेश'

जयपुर। भाजपा एस.टी. मोर्चा राजस्थान प्रदेश द्वारा बस्सी स्थित तिलक पी.जी. कॉलेज में भगवान बिरसा मुण्डा की 150 वीं जन्म जयंती जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं प्रदेश प्रभारी, राज्यसभा सांसद डॉ. राधामोहन दास अग्रवाल एवं विशिष्ठ अतिथि भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मोती लाल मीना रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश संयोजक एस.टी. मोर्चा नारायण मीना ने की। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलित करके एवं भारत माता, पं. दीनदयाल उपाध्यय एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं बिरसा मुण्डा के चित्रों पर पुष्पाजंलि अर्पित कर की गई।

डॉ. राधामोहन दास अग्रवाल ने कहा कि कांग्रेस ने आदिवासी महापुरूषों के बलिदान को तोड़-मरोडकर लोगों के सामने पेश किया। डॉ अग्रवाल ने महापुरूषों की वीर गाथा का गुणगान किया और कहा कि आजादी के आन्दोलन में पहला बलिदान तिलक मांझी ने दिया, किंतु देश से गोरे अंग्रेज चले गए। यहां के काले अंग्रेजों ने जनजातियों के आजादी के बलिदान एवं प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में दिए गए बलिदान को इतिहास में स्थान नहीं दिया। सिद्धू मुर्मू, कान्हू मुर्मू चांद मुर्मू एवं भैरव मुर्मू ने 1855-56 संथाल विद्रोह का आन्दोलन किया तथा नारा दिया "करो या मरो अंग्रेजो हमारी माटी छोडो" तथा रानी गाइदिन्ल्यू आदि जनजाति नायकों का जिक्र किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बिहार के जमुई से सम्बोधन का लाइव प्रसारण देखा गया।

'राजनीति में कुछ भी स्थाई नहीं होता, कल कुछ भी संभव'

- भाजपा कार्यकर्ताओं ने इस बार एक मुखी होकर पार्टी के लिए लड़ा चुनाव, ये ही हमारी पूंजी और भाजपा की विशेषता : मदन राठौड़
- भाजपा प्रदेश कार्यालय में सदस्यता अभियान और संगठन पर्व को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज प्राथमिक, सक्रिय सदस्यता अभियान एवं संगठन पर्व समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ राधा मोहन दास अग्रवाल ने कहा कि राजनीति में कुछ भी स्थाई नहीं होता, कल कुछ भी हो सकता है। ऐसे में हम सभी को संगठन के प्रति ईमानदारी से लक्ष्य निर्धारित कर कार्य योजना को मूर्त रूप देने का प्रयास करना चाहिए। संगठन का पदाधिकारी कमल के लिए कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कार्य करेगा तो हर प्रत्याशी और जनप्रतिनिधि भी उसको महत्व देगा।

भाजपा प्रदेश प्रभारी ने भाजपा जिलाध्यक्षों से कहा कि "ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक़दीर से पहले. ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है" इन पंक्तियों को आप सदस्यता अभियान के माध्यम से साबित कर सकते हो। आप संगठन के लिए कार्य करो, जनप्रतिनिधि आप के लिए कार्य करेंगे। सदस्यता अभियान के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए हमें राजस्थान भाजपा ईकाई को देश में आदर्श ईकाई साबित करना होगा।

अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान की जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह पर आज भी अतिशय विश्वास करती है। इसका ही परिणाम है कि राजस्थान उपचुनावों में जनता भाजपा के साथ खड़ी नजर आई और मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह रहा हूं कि राजस्थान के सात उपचुनावों में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ विजय प्राप्त कर रही है। इसका श्रेय कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ और उनकी टीम को भी जाता है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि उपचुनावों में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का साथ, प्रदेश प्रभारी डॉ राधामोहन दास अग्रवाल का मार्गदर्शन और कार्यकर्ताओं की मेहतन से सुखद परिणाम आने वाले है। भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह है और विपक्ष खेमे में उदासीनता का माहौल है।

राठौड़ ने कहा कि हमें मिलकर हमारे बूथ और मंडल को इतना मजबूत करना होगा कि प्रदेश का हर बूथ विपक्ष के लिए अभेद्य किला साबित हो। इसके लिए सदस्यता अभियान में हर जिलाध्यक्ष, हर पदाधिकारी को बढ़ चढकर भागीदारी निभानी चाहिए। भाजपा कार्यकर्ताओं को सदस्यता अभियान में महिलाओं को भी जोड़ना चाहिए। 33 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित होगी तो संगठन को मजबूती मिलेगी। भाजपा को किसी की पूजा पद्धित से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सामने वाले के मन में राष्ट्र प्रथम का भाव होना चाहिए।

भाजपा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक डॉ अरूण चतुर्वेदी ने समीक्षा बैठक में प्रस्तावना पेश की और कहा कि देश में भाजपा ने महज 45 दिन में 11 करोड़ के लक्ष्य को प्राप्त कर विश्व की सबसे बड़ी राजनीति पार्टी बनने का खिताब हासिल कर लिया, यह हमारे लिए गौरव की बात है। वहीं प्रदेश में करीबन 80 लाख ऑनलाइन और ऑफलाइन सदस्य बनाए गए है। इनमें करीबन 58 लाख ऑनलाइन और 22 लाख ऑफलाइन सदस्य शामिल है। ऑफलाइन सदस्यों का डाटा फीडिंग का कार्य किया जा रहा है, इसकी संख्या बढ़ सकती है। आगामी 15 दिनों में भाजपा के बूथ और मंडल स्तरी कार्यकर्ताओं को तथा जिलाध्यक्षों को अपना लक्ष्य पूरा करना होगा। सदस्यता अभियान के बाद मंडल और बूथ समिति के चुनाव पर भी हमें कार्य करना होगा।

थप्पड़ कांड के बाद गांव पर पुलिस का हमला गैरकानूनी : खाचरियावास

जयपुर, (का.प्र.)। पूर्वमंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास ने कहा कि देवली उनियारा के उपचुनाव में थप्पड़ कांड के बाद निर्दलीय उम्मीदवार नरेश मीणा को लेकर सरकार ने समरावता गांव में रात को जिस तरह से पुलिस वालों से हमला कराया, उसे किसी भी कीमत पर लोकतांत्रिक और कानूनी नहीं कहा जा सकता। मुख्यमंत्री यदि चाहते तो पुलिस सुबह तक इंतजार कर सकती थी।

खाचरियावास ने कहा कि अंधेरे में जिस तरह से गांव के ऊपर हमला किया गया। उस गांव में 200 से ज्यादा लोग घायल हो गए। लगभग 100 लोगों को पुलिस ने बेवजह गिरफ्तार कर लिया। लगभग 100 महिलाओं को भारी चोट आई। गांव के 50 से ज्यादा मकान जल गए। लगभग 25 से ज्यादा फोर व्हीलर और 100 मोटरसाइकिल जला दी गई। यह गांव के लोगों ने नहीं जलाए।

उन्होंने कहा कि जिस तरह से सरकार के इशारे पर पुलिस ने गांव पर हमला किया। गांव के लोग पुलिस पर वाहनों को जलाने के आरोप लगा रहे हैं और यह आरोप मीडिया में खुलकर गांव के लोगों ने लगाए हैं। एक उम्मीदवार का अधिकारी से झगड़ा होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। इस तरह के झगड़े चुनाव में होते रहते हैं, लेकिन सरकार ने सर्कस के कलाकारों की तरह अधिकारियों के दबाव में पुलिस के जरिए रात को जो हमला करवाया।

हर राजस्थानी के लिए राष्ट्रवादी विचार ही सर्वोपरि : भजनलाल शर्मा

- 'महाअघाड़ी गठबंधन नहीं, बल्कि ठगबंधन, जिसने जनता को ठगा'
- 'महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन को जिताएगा राजस्थानी समाज'

पुणे। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के तहत पुणे के भोसरी में आयोजित राजस्थानी समाज सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने महायुति प्रत्याशी महेश किसनराव लांडगे को समर्थन देकर विजयी बनाने के लिए अपील की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संबोधन में कहा कि कांग्रेस और इसके सहयोगी सिर्फ झूठ व लूट की बात करते हैं तथा महाअघाड़ी गठबंधन नहीं, बल्कि ठगबंधन है, जिसने जनता को ठगा है। महाराष्ट्र को ऐसे ठगबंधन की जरूरत नहीं है, जो जनता को धोखे के सिवा कुछ न दे सके। चुनाव के समय अफवाहों को सहारा लेने वाली कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी है, लेकिन महाराष्ट्र की जनता इन भ्रष्टाचारियों को वोट की चोट से सबक सिखाएगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दुनिया के सबसे मजबूत लीडर हैं, जिनके नेतृत्व में भारत का पूरी दुनिया में डंका बज रहा है। वर्ष 2014 के बाद आये परिवर्तन को सभी ने देखा है। गरीब कल्याण की योजनाएं, सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद का खात्मा और दुनिया में बढ़ता हुआ गौरव इसका प्रमाण है।

शर्मा ने कहा कि हर राजस्थानी राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पित होता है तथा उनके लिए राष्ट्रवादी विचारधारा ही सर्वोपरि होती है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र और राजस्थान स्वाभिमान की धरती है, जहां राजस्थान में महाराणा प्रताप, महाराजा सूरजमल एवं महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी जैसे वीर योद्धा हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों का राजस्थान की संस्कृति, विचार एवं मर्यादा को संजोए रखने में अहम योगदान है। यह गर्व का विषय है कि दुनिया के किसी भी कोने में रहते हुए राजस्थान की संस्कृति से जुड़ा हुआ रहता है। इस जुड़ाव के कारण ही राजस्थानी व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों में भी आगे रहता है।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस की सरकार में युवाओं के साथ कुठाराघात हुआ और पूरे प्रदेश में गैंगस्टर्स का बोलबाला था। जबकि राजस्थान में हमारी सरकार ने गठन के साथ ही पेपरलीक के मामलों की जांच के लिए एसआईटी एवं गैंगस्टर्स माफिया को खत्म करने के लिए एंटी गैंगस्टर्स टास्क फोर्स का गठन किया और अपराधियों पर शिकंजा कसा। उन्होंने कहा कि हमारी डबल इंजन की सरकार ने राजस्थान में 11 महीने में ही संकल्प पत्र के 50 प्रतिशत वादों को पूरा करने का काम किया है। इसी तरह महाराष्ट्र में भी डबल इंजन की सरकार मे विकास को गति मिलेगी और नए आयाम स्थापित होंगे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के तहत पुणे के भोसरी में आयोजित राजस्थानी समाज सम्मेलन को संबोधित किया।

अन्टानारिवो में जयपुर फुट शिविर शुरू, 500 दिव्यांग लाभांवित होंगे

जयपुर। पर्वी अफ्रीकी देश मेडागास्कर की राजधानी अन्टानारिवो में भारत सरकार और भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के सहयोग से विकलांगों के पुर्नवास के लिए जयपुर फुट शिविर आरम्भ हुआ। 50 दिवसीय इस शिविर में 500 द्विव्यांगों को लाभान्वित किया जायेगा।

विदेश मंत्रालय की आर्थिक सहायता और बी.एम.वी.एस.एस. द्वारा क्रियान्वित इस शिविर का उद्घाटन मेडागास्कर के राष्ट्रपति एण्ड्री निरिना राजोइलिना की पत्नि और मेडागास्कर की प्रथम महिला मियाली राजोइलिना ने किया। इस अवसर पर मेडागास्कर स्थित भारत के राजदूत बन्दारू विल्सनबाबू मेडागास्कर के स्वास्थ्य मंत्री आरिवेलो जेली राण्डारियामानाटानी, बी. एम. वी. एस. एस. के अध्यक्ष सतीश मेहता और बी. एम. वी. एस. एस. के सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता उपस्थित थे। प्रथम महिला मियाली राजोइलिना ने इस शिविर के आयोजन के लिए भारत सरकार और बी.एम.वी.एस.एस. को धन्यवाद दिया। स्वास्थ्य मंत्री राण्डारिया मानाटानी ने कहा कि इस शिविर के आयोजन से द्विव्यांगों में शक्ति का संचार होगा और वह सम्मान से कार्य कर सकेंगे और जी सकेंगे। भारतीय राजदूत बन्दारू विल्सनबाबू ने कहा कि भारत और मेडागास्कर की मैत्री का प्रतीक यह शिविर इस प्रकार का विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित 31वाँ शिविर हैं और 23 देशों में ऐसे शिविरों से अब तक 16000 द्विव्यांगों को लाभान्वित किया जा चुका हैं। बी.एम.वी.एस.एस. के अध्यक्ष सतीश मेहता और सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने मेडागास्कर के राष्ट्रपति की पत्नि और स्वास्थ्य मंत्री को जयपुर फुट की निर्माण विधि की जानकारी दी। दोनों ने जयपुर फुट की तकनिकी विशेषता की जानकारी देते हुए कहा कि अब तक विदेशों में 114वाँ अन्तर्राष्ट्रीय शिविरों का आयोजन कुल 44 देशों में किया जा चुका है और विदेशों में 46,000 द्विव्यांगों को लाभ पहुँचाया गया है। अध्यक्ष सतीश मेहता ने मेडागास्कर में एक स्थायी केन्द्र की स्थापना और तकनीशिनों को जयपुर में प्रशिक्षित करने में सहयोग देने की पेशकश की।

विदेश मंत्रालय की आर्थिक सहायता और बी.एम.वी.एस.एस. द्वारा क्रियान्वित इस शिविर का उद्घाटन मेडागास्कर के राष्ट्रपति एण्ड्री निरिना राजोइलिना की पत्नि और मेडागास्कर की प्रथम महिला मियाली राजोइलिना ने किया। इस अवसर पर मेडागास्कर स्थित भारत के राजदूत बन्दारू विल्सनबाबू मेडागास्कर के स्वास्थ्य मंत्री आरिवेलो जेली राण्डारियामानाटानी, बी. एम. वी. एस. एस. के अध्यक्ष सतीश मेहता और बी. एम. वी. एस. एस. के सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने पं. सुरेश मिश्रा के बेटी-दामाद को बधाई दी

जयपुर। भाजपा नेता एवं सर्व ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा के बनीपार्क स्थित निवास स्थान पर आज मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पहुंच कर वर-वधु ऋषभ-सौम्यता को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना देने पहुंचे।

आज पं. सुरेश मिश्रा की बेटी सौम्यता का आर्शीवाद समारोह है। लेकिन मुख्यमंत्री महाराष्ट्र यात्रा पर जा रहे हैं इसलिए शाम के कार्यक्रम में नहीं पहुंच पा रहे थे। तो उन्होंने नवयुगल को घर पर आकर आशीर्वाद दिया। साथ ही उन्हे श्रीनाथजी की तस्वीर और पुष्प गुच्छ भेंट किया साथ ही पूरे परीवार के साथ फोटो खिंचवाई।

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

खोया पाया

मेरे मकान नम्बर 163/119, सैक्टर 16, प्रताप नगर, सांगानेर का अदेय प्रमाण पत्र कहीं खो गया मिलने पर सूचित करें नीरज शर्मा- 9828990944

आवास संख्या 191/287 प्रताप नगर सांगानेर जयपुर का बकाया राशि मांग पत्र गिर/गुम हो गया मिलने पर सूचित करें। दीपक तुलसानी मो.9829262614

RAM KRISHNAN COLLEGE OF EDUCATION
NAILA, NEAR KANOTA, AGRA ROAD, JAIPUR
Requirement For B.Ed. 2 Year Course
· PRINCIPAL – 01
· LECTURER – 15
Qualification as per NCTE, UGC, UOR Subject- Hindi, English, Sanskrit, History, Civics, Economics, Geography, Social Study, Home Science, Chemistry, Maths, Biology, Physics, Commerce, Music, Fine Art, Physical Education.
Apply within 3 days
E-Mail- rkce.jpr@gmail.com
Contact No. 0141-2220999, 9116656106

नाम परिवर्तन

मैंने मेरा नाम शिशुपाल सिंह शेखावत रे बदलकर शिशुपाल सिंह रख लिया है, भविष्य में मुझे शिशुपाल सिंह के नाम से जाना जावें। पता निवासी त्योद, तहसील फुलेरा, जिला- जयपुर

I have changed my name Manish Kumar Gupta to Manish Diwan for all future purpose. Address: 502, 5th Floor, F-131, Grand Avenue, Kirti Sagar, F-Block, Balaji Road, Mangyawas, Mansarovar, Jaipur 302020

I service no 15216346K Ex NK Ram singh gurjar S/O mangi lal gurjar R/O plot no 47 Ashok vihar jagatpura jaipur That have changed my daughter name BANU PRIYA(DOB 16/1/2008) is wrong entered in service record TO BHANU PRIYA GURJAR (DOB 17/1/2008) vide affidavit dated 15 nov 2024 before district notary Jaipur

I, SMT. SHUSILA DEVI legally Mother of Army No 2997245A Ex NK Ram Swroop Sharma S/O Ram Awatar Sharma R/O House No. 28, New Colony Path No. 7, Murlipura, Jaipur, Rajasthan that have changed my name from SHUSILA DEVI (DOB 01/07/1962) is wrong entered in service record to SMT. SUSHILA DEVI (DOB 01/07/1960) vide affidavit dated 13 Nov 2024 before district notary Jaipur

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय श्रीमान पारिवारिक न्यायाधीश स्थान करौली
रजाउद्दीन खां वगे विरूद्ध अय्यूब खां वगे.
वाद बाबत बटवारा भवन/स्थाई निशेधाज्ञा
वाद सं. 25 सन् 2024, 05-2024
बनाम समीमा बेगम स्त्री अब्दूल रजाक उर्फ मुन्ना दिल्ली वाले मदीना मस्जिद के सामने पार्क के पास बनविहार कालोनी ईदगाह दिल्ली रोड जयपुर
वादी ने आपके विरूद्ध बटवारा भवन के लिये वाद पंजीयत किया है। आपको इस न्यायालय में तारीख 18 माह 11 सन 2024 को दिन में 10.30 बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हो और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सकें। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल सुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता. 29 माह 10 सन् 2024 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर किया गया है।
आज्ञा से-वरिष्ठ मुंसरिम
पारिवारिक न्यायालय
करौली (राज.)
मोहर अदालत

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश क्रम संख्या 19 चाकसू
श्योजी विरुद्ध भौरी लाल
वाद बावत शुन्य व निरस्त घोषित किये जाने रजि. विक्रय पत्र
वाद संख्या 79 सन् 2014
बनाम भौरीलाला (तथा कथित) उम्र 70 साल पुत्र जगन्नाथ जाति ब्राह्मण निवासी ग्राम जयलालपुरा थुणी तहसील चाकसू जिला जयपुर राज. हाल निवासी मकान नंबर 15 वार्ड नंबर 19 तहसील चाकसू जिला जयपुर राज. आपके विरुद्ध वादी के लिए वाद पंजीकृत किया है
आपका इस न्यायालय में तारीख 19 माह 11 सन् 2024 को दिन में 10 बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल सुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लिखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नही होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद ता.14/11/24 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।
न्यायाधीश
अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश
क्रम संख्या 19 जयपुर महानगर
मजिस्ट्रेट चाकसू
मोहर अदालत

महाराष्ट्र के कारोबारी की कार का पाली में एक्सीडेंट, चार की मौत

मवेशी को बचाने के प्रयास में तेज रफ्तार कार नेशनल हाईवे के किनारे पलट गई थी

पाली, (निसं)। महाराष्ट्र के कोल्हापुर के बिजनेसमैन की कार का पाली में देर रात एक्सीडेंट हो गया। हादसे में बिजनेसमैन के साथ उसकी पत्नी और दो बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई।

- **गुरुवार सुबह शिवगंज (सिरोही) से अपने परिचित की कार से जोधपुर घूमने गए थे, शिवगंज लौटने के दौरान हादसा हुआ**
- **अंधेरा होने के कारण घायलों को काफी देर तक मदद नहीं मिल सकी, हादसे में चारों की मौके पर ही मौत हो गई**

जानकारी के अनुसार मवेशी को बचाने के प्रयास में तेज रफ्तार कार नेशनल हाईवे के किनारे पलट गई। एक्सीडेंट गुरुवार रात 9.30 बजे पाली के सांडेराव थाना क्षेत्र के केनपुरा गांव के पास हुआ। कोल्हापुर के कलगंडी निवासी बाबूराव (47), पत्नी सारिका (38), बेटी साक्षी (19),बेटे संस्कार (17) व दो अन्य रिश्तेदारों चिन्मय (19) और प्रमोद जैन (40) के साथ राजस्थान घूमने आए थे। गुरुवार सुबह शिवगंज (सिरोही) से अपने परिचित की कार से जोधपुर घूमने गए थे। रात को शिवगंज लौटने के दौरान एक्सीडेंट हो गया। हादसे में चिन्मय और प्रमोद जैन गंभीर घायल है बाबूराव परिवार के साथ शिवगंज लौट रहे थे। कार उनका भतीजा चिन्मय ड्राइव कर रहा था। इस दौरान बिरामी टोल के पास एक मवेशी सामने आ गया और ड्राइवर ने कार हाईवे के नीचे उतार दी। रफ्तार अधिक होने के कारण कार पलट गई और पेड़ से टकरा गई। अंधेरा होने के कारण घायलों को काफी देर तक मदद नहीं मिल सकी। एक्सीडेंट में बाबूराव, सारिका, संस्कार व साक्षी की मौके ही मौत हो गई। इनके शव सांडेराव हॉस्पिटल की मॉर्चूरी में रखवाए गए हैं। वहीं घायल प्रमोद का पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में उपचार जारी है।

सांडेराव थानाधिकारी लक्ष्मण सिंह ने बताया कि जिस कार का एक्सीडेंट हुआ वो शिवगंज के ज्वैलरी बिजनेसमैन किशोर कुमार की है। किशोर और बाबूराव का भतीजा चिन्मय दोस्त हैं, इसलिए किशोर कुमार की कार से ही परिवार जोधपुर घूमने गया था। बाबूराव का परिवार भी कोल्हापुर में चांदी की ज्वैलरी बनाने के बिजनेस से जुड़ा है। वे बुधवार को ही राजस्थान आए थे।

जेईई-मेन के जनवरी सेशन की आवेदन प्रक्रिया जारी

एनटीए की ओर से स्टूडेंट्स को मेल पर दिया जाने लगा कनफर्मेशन

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-मेन के जनवरी सेशन की आवेदन प्रक्रिया जारी है। जैसे-जैसे अंतिम तिथि नजदीक आती जा रही है, आवेदन करने वाले स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ ती जा रही है। शुक्रवार शाम तक करीब 7.80 लाख स्टूडेंट्स आवेदन कर चुके हैं।

- **अब तक 7.80 लाख आवेदन आए**

एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा ने बताया कि जेईई-मेन की आयोजन संस्था नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) की ओर से आवेदन प्रक्रिया पूरी होने का कनफैंशन मेल के माध्यम से दिया जा रहा है। आवेदन प्रक्रिया के दौरान तीन मेल भेजे जा रहे हैं। पहले दो मेल में मेल स्टेप-1 पूर्ण होने के बाद एप्लीकेशन नम्बर का भेजा जा रहा है, जिसमें स्टूडेंट्स को उसका यूनीक एप्लीकेशन नम्बर प्राप्त हो जाता है और विद्यार्थी को स्टेप-2 एवं स्टेप-3 जिसमें आवश्यक दस्तावेज अपलोड करने एवं फीस जमा करने के लिए बताया जाता है। इसके उपरान्त आवेदन प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद तीसरा ई-मेल के माध्यम से सूचित किया जाता है।

यह आवेदन का कनफर्मेशन ई-मेल होता है, जिसमें विद्यार्थी अपने एप्लीकेशन फार्म को डाउनलोड कर सकता है। इसके लिए उसे पासवर्ड तौर पर जन्मतिथि भरनी होती है। आहूजा ने बताया कि गत वर्ष कई ऐसे मामले आए थे, जिसमें विद्यार्थी के आवेदन शुल्क जमा करवाने के बावजूद भी उनका एडमिट कार्ड जारी नहीं किया गया था, बाद में स्टूडेंट्स को पता चला कि उनका आवेदन पुनः एनटीए द्वारा लौटा दिया गया था, ऐसे में सभी विद्यार्थियों को अपने आवेदन पूर्ण होने के उपरान्त एनटीए द्वारा भेजे गए ई-मेल की जांच करते रहना चाहिए ताकि ऐसी समस्याएं उनके साथ नहीं आए।

थप्पड़ कांड मामला : नरेश मीणा को 14 दिन की न्यायिक अभिरक्षा में भेजा

मामले में पुलिस ने 52 गिरफ्तार अन्य आरोपियों को भी न्यायालय में पेश किया, जहां सभी को जेल भेजा

टोंक/निवाई/मालपुरा, (निसं)। देवली उनियारा विधानसभा क्षैत्र के समरावता गांव के पोलिंग बूथ पर फर्जी मतदान को लेकर हुये विवाद में ड्यूटी मजिस्ट्रेट व मालपुरा एसडीएम अमित चौधरी को थप्पड़ मारने के मुख्य आरोपी नरेश मीणा सहित दस उपद्रवियों का मालपुरा अस्पताल में मेडिकल करवाया

- **आरोपी नरेश मीणा की मालपुरा थाने से हुई वीसी के जरिये पेशी हुई**

उपद्रव मामले में लिप्त व गिरफ्तार दस उपद्रवियों सहित नरेश मीणा का मालपुरा में मेडिकल करवाया।

गया। मालपुरा थाने से निवाई अवकाश न्यायालय में मीणा की वीसी के जरिये पेशी करवाई गई, जहां नरेश मीणा को 14 दिन के लिए न्यायिक अभिरक्षा में भेजने के आदेश पारित किए।

देवली उनियारा के उपचुनाव में गांव समरावता में मतदान केंद्र पर एसडीएम के थप्पड़ मारने के आरोप में गिरफ्तार निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा को शुक्रवार को पुलिस ने वीसी के माध्यम से निवाई न्यायालय में पेश किया, जहां उसे 14 दिन के लिए न्यायिक अभिरक्षा में भेजने के आदेश पारित किए। एडवोकेट सीताराम शर्मा ने बताया कि पुलिस ने न्यायलय में न्यायिक मजिस्ट्रेट अंजली सिंह के सामने वीसी के माध्यम से गिरफ्तार नरेश मीणा पेश किया। अधिवक्ताओं ने मजिस्ट्रेट को बताया कि नरेश मीणा से उसके परिजनों व वकीलों को पुलिस नहीं मिलने दे रही है। अधिवक्ताओं ने 24 घंटे में नरेश मीणा का मेडिकल करवाने के लिए प्रार्थना पत्र पेश किया। दोनों पक्षों की दलीलों पर मजिस्ट्रेट अंजली सिंह ने नरेश मीणा को 14 दिन के लिए न्यायिक अभिरक्षा में भेजने के आदेश पारित किए। नरेश मीणा के अधिवक्ता सीताराम शर्मा, हाईकोर्ट जयपुर के एडवोकेट लाखन सिंह मीणा, पवन खरेडा, मुकराज मीणा, मुकेश मीणा व मेघराज मीणा सहित 15 अधिवक्ता सुबह 11 बजे ही न्यायालय पहुंच गए। इसके बाद नरेश मीणा के अधिवक्ताओं ने नरेश मीणा के परिवारजनों व अधिवक्ताओं को मिलने सहित कई प्रार्थना पत्र पेश किए। इस दौरान न्यायालय में दोपहर करीब 2 बजे से पुलिस की गाड़ियों का काफिला पहुंचना शुरू हो गया। थोड़ी ही देर में न्यायालय परिसर पुलिस के कई जवान तैनात हो गए। करीब 4 बजे वीसी के जरिए न्यायालय में नरेश मीणा की पेशी हुई। अधिवक्ताओं ने नरेश मीणा को टॉर्चर करने और मारपीट करने का पुलिस पर आरोप लगाया। करीब साढे चार बजे इस मामले में पुलिस ने 52 गिरफ्तार अन्य आरोपियों को भी न्यायालय में पेश किया जहां सभी को जेल भेजने के आदेश पारित हुए। इस दौरान निवाई थानाधिकारी हरिराम वर्मा व सदर थानाधिकारी जयमल सिंह सहित सदर व निवाई पुलिस के कई जवान तैनात रहे।

वहीं समरावता में हालात सामान्य हैं, हर 15 किलोमीटर पर पुलिस जवान तैनात हैं। समर्थकों के कंधों पर सवार होकर पुलिस को चुनौती देने वाले नरेश मीणा अब हिरासत में हैं। इधर, एरिया मजिस्ट्रेट के तौर पर कार्य कर रहे मालपुरा एसडीएम अमित कुमार चौधरी ने नरेश के खिलाफ नगर फोर्ट पुलिस थाने में 10 गंभीर धाराओं के तहत मामला दर्ज कराया है।

पत्नी ने पति पर चाकू से हमला कर हत्या की

कोटा, (निसं)। विज्ञान नगर इलाके में रिश्तों को तार-तार करते हुए एक महिला ने अपने पति पर ही चाकू से हमला कर उसकी हत्या कर दी।

- **पत्नी के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ**

जानकारी के अनुसार 8 नवंबर को विज्ञान नगर इलाके के छत्रपुरा तालाब निवासी शाहरुख पर उसकी पत्नी नाजमीन ने चाकू से हमला कर घायल कर दिया। शाहरुख को घायल अवस्था में उपचार के लिए एमबीएस अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां शाहरुख ने उपचार के दौरान शुक्रवार को दम तोड़ दिया। विज्ञान नगर थाना अधिकारी पुष्पेंद्र बंशीवाल ने बताया कि घरेलू कहासुनी के बाद विवाद होने पर आवेश में आकर नाजमीन ने अपने पति शाहरुख (27) पर 8 नवंबर को चाकू से हमला कर उसे घायल कर दिया। उसे घायलावस्था में एमबीएस अस्पताल में भर्ती करवाया था, जहां उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। थाना अधिकारी ने बताया कि दोनों की शादी को अभी एक साल ही हुआ था। मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया है। विज्ञान नगर थाना अधिकारी पुष्पेंद्र बंशीवाल ने बताया कि मृतक शाहरुख की मां की ओर से मृतक की पत्नी नाजमीन के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मोबाइल से सट्टा लगाने वाले दो जने गिरफ्तार

फन गैम एप से कर रहे थे सट्टा, फोन से 4 लाख के सट्टे का हिसाब मिला

ब्यावर, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक श्याम सिंह आई.पी.एस. के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भूपेन्द्र शर्मा तथा वृताधिकारी राजेश कसाना के निकटतम सुपरविजन में जुआ-सट्टा करने वालों के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई करते हुए पुलिस थाना साकेत नगर व जिला स्पेशल टीम ने आनलाईन फन गेम एप से सट्टा लगाते हुये दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।

पुलिस ने सट्टा लगाते दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।

जानकारी के अनुसार गुरूवार को शाम के समय मुखबिर से फोन पर सट्टे की सूचना मिली। कार्रवाई हेतु डीएसटी टीम तथा साकेत नगर थाना टीम तुरंत सेदरिया पावर हाउस के पास पहुंचे जहां पर दो व्यक्ति मनोहर गुर्जर पुत्र मांगीलाल निवासी रामनगर द्वितीय, अजय सिंह पुत्र मंगल सिंह निवासी सेदरिया पावर हाउस के पास जिनको पकड़ा और फोन चैक किया तो फन गेम से सट्टा करते मिले जिस पर दोनों के फोन को जब्त कर गिरफ्तार किया गया। उनके मोबाइल फोन से करीबन 4 लाख रूपये के लेनदेन का हिसाब मिला। साकेतनगर थानाधिकारी बलभद्र सिंह की पुलिस टीम में तेजपाल सिंह, मुकेश थाकण, श्यामलाल, जितेन्द्र सिंह, रणजीत सिंह, राजूराम, रिछपाल, भवानी सिंह, सुरेन्द्र कानिं आदि थे।

तीन लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाई

सरोवर के 52 घाटों पर महाआरती व दीपदान में आस्था का सैलाब उमड़ा

पुष्कर/अजमेर, (कासं)। पुष्कर के पंचतीर्थ धार्मिक मेले के आखिरी दिन कार्तिक पूर्णिमा महास्नान के लिए शुक्रवार को करीब तीन लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाकर जगतपिता ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर मंगल कामना की। इसके साथ चार दिवसीय पंचतीर्थ धार्मिक मेले का समापन हो गया।

महास्नान के लिए दूर दराज से श्रद्धालु गुरुवार की शाम को ही पुष्कर पहुंच गए थे तथा इनकी आवक शुक्रवार को दिनभर बनी रही। श्रद्धालुओं ने अलसुबह के साथ ही महास्नान किया जो देर शाम तक चलता रहा। मुख्य गऊघाट, ब्रह्मघाट, बद्री घाट, वराह घाट सहित सभी 52 घाट श्रद्धालुओं खचाखच भर रहे। ब्रह्मा मंदिर सहित अन्य मुख्य मंदिरों में दिनभर दर्शनार्थियों की लंबी कतारें लगी रही। सरोवर में स्नान के बाद तीर्थयात्रियों ने वैदिक मंत्रोचारण के बीच सरोवर की पूजा कर परिक्रमा लगाई तथा तीर्थ पुरोहितों को दान-दक्षिणा देकर पुण्य कमाया।

कार्तिक पूर्णिमा की शाम गोधूलिक वेला में सरोवर के 52 घाटों पर महाआरती व दीपदान में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। अयोध्या के सरयू नदी की तर्ज पर प्रशासनिक प्रयासों से मेले में पहली बार आयोजित की गई 52 घाटों की महाआरती में उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शिरकत की। शुकवार शाम को घाटों में श्रद्धालुओं का जमावड़ा लग गया। लोगों ने सरोवर पर दीपदान किया जिससे सरोवर का तट रोशनी से जगमगा उठा। इस मौके पर घाटों पर आकर्षक रंगोली सजाई गई। दीपदान के बाद वेद मंत्रोच्चार व ढोल नगाड़े शंख की दिव्य ध्वनि के साथ ब्रह्म घाट, गऊ घाट, बद्री घाट, गणगौर घाट, वराह घाट, जयपुर घाट सहित सभी 52 घाटों पर एक साथ महाआरती की गई।

जोगणिया धाम में मनाया देव दीपावली :- कार्तिक पूर्णिमा महास्नान के जोगणिया धाम में देव दिवाली पर्व श्रद्धा से मनाया गया। इस मौके पर धाम पर हजारों दीप प्रज्वलित किए गए जिससे धाम जगमगा उठा। धाम में पंचतीर्थ पर आयोजित कार्तिक महोत्सव के आखिरी दिन विराजित सातू बहना बिजासन माता का विशेष पूजा अर्चना अभिषेक के बाद फूल बंगला सजाया गया व भजन कीर्तन किए गए। धाम के प्रवक्ता प्रशांत वर्मा ने बताया कि इस मौके पर भंडारा आयोजित किया गया। जोगणिया माता के उपासक संत भंवरलाल वर्मा के जन्मदिन पर विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके साथ चार दिवसीय धार्मिक कार्तिक महोत्सव का समापन हुआ।

पेड़ से लटकी मिली युवक की लाश

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के करेड़ा थाना क्षेत्र के मेवासा गांव के जंगल में बंबूल के पेड़ से लटकी युवक की लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।

- **कपड़ों की तलाशी में मोबाइल मिला, पुलिस मृतक के परिजनों से बात की**
- **युवक खदान से अपने घर भैंरूखेड़ा जाने के लिए निकला था, लेकिन वह घर नहीं पहुंचा**

करेड़ा थाना पुलिस ने बताया कि मेवासा से भोजा पायरा जाने वाले रास्ते पर रोड़ से करीब 200 मीटर दूर सरकारी पड़त जमीन पर एक युवक का शव रस्सी के सहारे बंबूल के पेड़ से लटका मिला। शव, वहां गये क्षेत्रीय ग्रामीणों ने देखा और इसकी सूचना करेड़ा थाने पर दी। थाना प्रभारी अर्जुन लाल गुर्जर, एएसआई कृष्ण गोपाल और दीवान रिषीराज मय जाब्ता मौके पर पहुंचे। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई के बाद शव को कब्जे में लिया। मृतक ग्रे पेंट और काले रंग का शर्ट पहने हुये हैं। कपड़ों की तलाशी लेने पर एक मोबाइल मिला। इस मोबाइल के आधार पर पुलिस मृतक के परिजनों से बात की। इस पर शव की पहचान ब्यावर जिले के बदनौर थाना क्षेत्र के भैंरूखेड़ा निवासी परमेश्वर (22) पुत्र कल्याणमल बलाई के रूप में हुई। परिजन भी करेड़ा पहुंच गये। इसके बाद शव का पोस्टमार्टम करवाया गया। पुलिस ने परिजनों के हवाले से बताया कि परमेश्वर, राजसमंद जिले के रेलमगरा थाना क्षेत्र के कोटड़ी स्थित खदान पर मजदूरी करता था, जो गुरुवार को खदान से अपने घर भैंरूखेड़ा जाने के लिए निकला था, लेकिन वह घर नहीं पहुंचा। आज उसकी लाश पेड़ से लटकी मिली। पुलिस अब खुदकुशी के कारणों की जांच कर रही है।

नगदी चोरी

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। ओसवाली मोहल्ला स्थित ई-मित्र बैंकिंग सेवा केंद्र में घुसकर अज्ञात बदमाश दो लाख की नगदी सहित लेपटॉप व डिवाइस चुराकर चम्पत हो गये। दुकान मालिक गौरव जैन दुकान का शटर निचे कर आवश्यक कार्य से घर गया था, पिछे से मौके की तलाश में तत्पर शातिर बदमाश पलभर में शटर ऊंचाकर बैग उठाकर फरार हो गये, बैग में दो लाख की नगदी के अलावा लेपटॉप व डिवाइस रखा हुआ था। सीसीटीवी कैमरे में पूरी वारदात कैद हो गई। मदनगंज थाना पुलिस ने घटनास्थल का मौका मुआयना कर फरार अज्ञात चोर की तलाश शुरू कर दी है।

सेना के जवान को पुलिस ने पीटा

बीकानेर, (निसं)। देशनोक में भारतीय सेना के जवान के साथ पुलिस ने मारपीट की। सिर पर डंडों से जमकर वार किया। पुलिस ने जवान को गिरफ्तार किया है। ओरण परिक्रमा के दौरान जवान का पुलिस से विवाद हो गया था। जिस जवान को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, वो 25 सितंबर को अनंतनाग में शहीद हुए जवान रामस्वरूप कस्वां के बड़े भाई हैं। रामस्वरूप कस्वां को शहीद का दर्जा दिलवाने के लिए करीब 2 महीने पहले बीकानेर में हाईवे जाम किया गया था। सेना के जवान से मारपीट मामले में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के संयोजक हनुमान बेनीवाल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सीएम भजनलाल शर्मा से पुलिस के कृत्य पर संज्ञान लेने की मांग की।

देशनोक थानाधिकारी सुमन शेखावत ने बताया कि जवान श्रीराम कस्वां करणी माता की ओरण यात्रा कर रहा था। जेगला फांटे पर ओरण परिक्रमा की यातायात व्यवस्था की जा रही थी। इस दौरान जवान पुलिस से उलझ गया और यातायात व्यवस्था में सहयोग नहीं किया। उन्होंने बताया कि जवान अपनी गाड़ी नो एंट्री में ले जाना चाहता था, जिसे रोकने पर उसने एक पुलिसकर्मी विजयपाल के साथ मारपीट की। साथ ही महिला पुलिसकर्मी से धक्का-मुक्की की। इस दौरान उसके भी सिर में चोट लगी। जवान के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई गई है। वहीं जवान श्रीराम कस्वां ने भी शिकायत दी है, जिसकी जांच की जा रही है। मामले में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के संयोजक हनुमान बेनीवाल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट में लिखा कि देशनोक पुलिस ने श्रीराम के साथ मारपीट की। उसका सिर फोड़ दिया।

बेनीवाल ने लिखा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बीकानेर जिले की पुलिस के कृत्य पर संज्ञान लीजिए। बिगत दिनों शहीद हुए बीकानेर जिले के नोखा क्षेत्र के जवान रामस्वरूप जी कस्वां के भाई और भारतीय सेना के एक जवान श्रीराम के साथ देशनोक में पुलिस ने बेवजह मारपीट की है और डंडे से सिर फोड़ दिया। मामले में एफआईआर दर्ज करवाने के लिए सेना का जवान देशनोक थाने में बैठा है, लेकिन एफआईआर दर्ज नहीं की जा रही है। मामले में तत्काल प्रभाव से मुकदमा दर्ज करके दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए।

विधानसभा अध्यक्ष देवनानी का सिंगापुर दूतावास में अभिनंदन

शिक्षा के क्षेत्र में भारत और सिंगापुर के बीच हमेशा से मजबूत और प्रगतिशील संबंध रहे हैं : देवनानी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का शुक्रवार को सिंगापुर स्थित भारत के दूतावास में अधिकारियों ने अभिनंदन किया। सिंगापुर में भारत के हाई कमिश्नर शिल्पक अम्बुले ने पुष्पगुच्छ भेंट कर दूतावास पहुंचने पर देवनानी का अभिनंदन किया। देवनानी को अम्बुले ने बताया कि दोनों देशों के मध्य शिक्षा, तकनीकी शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों के उद्योगों में परस्पर बेहतर समन्वय है। इससे दोनों देशों के संस्थानों में विकास के विभिन्न क्षेत्रों में म्यूचुअल आफ अंडरस्टैंडिंग लगातार होते रहते हैं। भारतीय मूल के लोगों का सिंगापुर में प्रभावी पदों पर कार्य करने से भी भारत को व्यापारिक क्षेत्र में सुगमता से बढ़ावा मिल रहा है।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का सिंगापुर स्थित भारत के दूतावास में भारत के हाई कमिश्नर शिल्पक अम्बुले ने पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया।

- **देवनानी ने सिंगापुर में केंद्रीय विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का अवलोकन किया और विभिन्न विषयों पर चर्चा की**
- **देवनानी ने सिंगापुर में गुरु नानक जयंती पर्व पर गुरुद्वारे में जाकर माथा टेका और गुरु नानक जयंती के 555 वें प्रकाश पर्व की बधाई दी**

सिंगापुर केंद्रीय विश्वविद्यालय का अवलोकन :- विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि शिक्षा के क्षेत्र में भारत और सिंगापुर के बीच हमेशा से मजबूत और प्रगतिशील संबंध रहे हैं। दोनों देश शिक्षा, शोध और नवाचार के क्षेत्र में सहयोग के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सिंगापुर के केंद्रीय विश्वविद्यालय, नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (एनटीयू) और सिंगापुर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड डिजाइन (एसयूटीडी) भारत के छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। इनमें भारतीय छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। शिक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों में अध्ययन और शोध के लिए अकादमिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और फेलोशिप प्रदान की जा रही है, जिससे दोनों देशों के छात्रों में वैश्विक दृष्टिकोण विकसित हो रहा है।

देवनानी ने शुक्रवार को सिंगापुर में केंद्रीय विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों का अवलोकन किया। देवनानी ने वहां विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण से नई शिक्षा नीति, उच्च शिक्षा में किए जाने नवाचार और अनुसंधान के विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। देवनानी ने केंद्रीय विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग एवं तकनीकी विभाग को देखा और विश्वविद्यालय के राजस्थान के मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय और अन्य तकनीकी विश्वविद्यालयों से एमओयू के माध्यम से हो रहे शोध एवं अनुसंधान पर चर्चा की।

सिंगापुर में देवनानी ने गुरुद्वारा में माथा टेका :- वासुदेव देवनानी ने शुक्रवार को सिंगापुर में गुरु नानक जयंती पर्व पर गुरुद्वारे में जाकर माथा टेका। देवनानी ने वहां आयोजित सत्संग में भाग लिया। लोगों से मुलाकात कर गुरु नानक जयंती के 555 वें प्रकाश पर्व की बधाई और शुभकामनाएं दी। देवनानी ने देश व प्रदेश की खुशहाली की कामना की। वहीं विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से शुक्रवार को सिंगापुर में उद्योगपतियों ने मुलाकात की। देवनानी ने उद्योगपतियों से राइजिंग राजस्थान में भाग लेने का अनुरोध किया। देवनानी ने कहा कि राजस्थान में निवेश की संभावनाएं हैं। उद्योगपति राजस्थान में उद्योगों के लिए नई संभावनाओं को तलाशें। देवनानी से सिंगापुर चेंबर ऑफ कॉमर्स इंडिया के अध्यक्ष मनीष तिपाठी ने शिष्टाचार मुलाकात की। देवनानी को त्रिपाठी ने सिंगापुर में प्रवासी भारतीय द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न उद्योगों के बारे में जानकारी दी। देवनानी को उद्योगपति करण सिंह ठकराल और सतवीर ठकराल ने सिंगापुर में चल रहे उद्योगों की जानकारी दी।

जयपुर-दिल्ली एक्सप्रेस हाइवे पर तेज रफ्तार कार ने बाइक को मारी टक्कर

हादसे में हरमाडा थाने के कांस्टेबल की मौत हो गई, जबकि उसका साथी घायल हो गया

जयपुर (कासं)। राजधानी जयपुर में गुरुवार-शुक्रवार की मध्यरात्रि हिट एण्ड रन का मामला सामने आया है। जहां जयपुर-दिल्ली एक्सप्रेस हाइवे पर तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में हरमाडा थाने में तैनात एक कांस्टेबल की मौत हो गई,जबकि उसका साथी घायल हो गया।

दोनों पुलिसकर्मी किसी बदमाश को पकड़ने जा रहे थे, इसी दौरान जयपुर दिल्ली एक्सप्रेस हाइवे पर हर्ष होटल के सामने यह हादसा हो गया। है। हादसे के बाद चालक कार लेकर भाग निकला। कार और उसके चालक की सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस तलाश कर रही है। फिलहाल कार के बारे में कोई भी जानकारी अभी तक सामने नहीं आई हैं। वहीं मामले की जांच दुर्घटना थाना पुलिस पश्चिम कर रही है।

पुलिस ने बताया कि बदमाशों की धरपकड़ को लेकर अभियान चल रहा था। इसे लेकर

> ■ बताया जा रहा है कि दोनों पुलिसकर्मी किसी बदमाश को पकड़ने जा रहे थे, तभी यह हादसा हो गया

कांस्टेबल मुकेश कस्वां और जीतराम पिछले कुछ दिनों से काम कर रहे थे। उन्हें दो बदमाशों (वारंटियों) के बारे में जानकारी मिली थी। इसलिए वह गुरुवार देर रात में निकले थे। वापस लौटते समय जयपुर-दिल्ली एक्सप्रेस हाईवे पर तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को मणिपाल हॉस्पिटल पहुंचाया गया। जहां पर डॉक्टरों ने प्राथमिक जांच के बाद मुकेश कस्वां (36) को मृत घोषित कर दिया। वहीं जीतराम जाट (32) का इलाज किया जा रहा है। मुकेश कस्वां सीकर के रामगढ़ स्थित रूकनसर गांव के रहने वाले थे और वर्तमान में वीकेआई मुरलीपुरा में परिवार के साथ रह रहे थे। वहीं घायल जीतराम निवासी जसवंतपुरा थाना श्रीमाधोपुर जिला सीकर हाल नींदड हरमाड़ा में रहता है। मृतक मुकेश के दो लड़के हैं, एक तो 4 वर्ष का और दूसरा 6 साल का। इस घटना के बाद मुकेश के परिवार में दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। पुलिस ने मुकेश के शव को कांवटिया अस्पताल की मोर्चरी में रखवाकर शुक्रवार को शव का पोस्टमार्टम करवाया। इधर कांस्टेबल मुकेश कस्वां के निधन से पूरे हरमाड़ा थाने में शोक की स्थिति पूरे दिन बनी रही। उनकी मौत से न केवल उनके परिवार,बल्कि उनके सहकर्मियों और पूरे पुलिस विभाग में मातम छा गया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित बुडानिया ने बताया कि पुलिस महकमें में शोक की लहर है। उधर हादसे के बाद पुलिस ने कार के चालक की पहचान करने के लिए जांच शुरू कर दी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि घटना के समय कार चालक की गति कितनी थी और क्या उसने कोई नियम तोड़ा था। वहीं, घायल कांस्टेबल जीतराम की हालत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है।

इस हादसे के बाद पुलिस अधिकारियों ने मुकेश कांस्टेबल की मौत पर शोक जताया है। वही हरमाडा थाने में एडिशनल एसपी आलोक सिंगल ,चौमू एसीपी अशोक चौहान, दौलतपुरा थाना प्रभारी मनीष शर्मा, विश्वकर्मा थाना प्रभारी राजेश कुमार, मुरलीपुरा थाना प्रभारी सुनील जांगिड, मालपुरा गेट थाना प्रभारी हिम्मत सिंह समेत सभी पुलिसकर्मियों ने मृतक कांस्टेबल मुकेश को पुष्प चक्र चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। उसके बाद पुलिस कमिश्नर एडीजी बीजू जॉर्ज जोसेफ विद्याधर नगर मोक्ष धाम में पहुंचकर श्रद्धांजलि दी। उसके बाद अंतिम संस्कार किया।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में एल.आई.सी. ने स्टॉल लगाई

जयपुर (कासं)। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 43 वें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भारतीय जीवन बीमा निगम (एल.आई.सी.) के स्टॉल का उदघाटन निगम के कार्यकारी निदेशक (निगमित सम्प्रेषण) आदित्य गुप्ता ने किया। इस विशेष अवसर पर उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक जे.पी. एस. बजाज एवं उत्तर क्षेत्र के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

14 दिनों तक चलने वाले व्यापार मेले में निगम के स्टाल पर आने वाले आगन्तुकों को निगम की पॉलिसियों से सम्बंधित सभी जानकारियों के साथ-साथ निगम में एजेंट के रूप में अपना केरियर बनाने सम्बंधित जानकारी भी दी जायेगी। साथ ही निगम की "ई-सर्विसेज" एवं ऑनलाइन सुविधाओं की जानकारी भी उपलब्ध कराई जायेगी। हाल ही मे, निगम ने पेपर लेस ऑफिस की दिशा मे बढ़ते हुए ऑपरेशन 'डाइव' की शुरुआत की है।

इस वर्ष एलआईसी अपनी 68वीं वर्षगांठ मना रहा है। निगम ने हमेशा ही देश के एक प्रमुख वित्तीय संस्थान के रूप में सभी बीमा योग्य लोगों तक किफ़ायती दरों पर जीवन बीमा के संदेश को प्रचारित करने में अत्यधिक योगदान दिया है और बदलती जरूरतों के अनुसार बेहतरीन उत्पाद प्रदान किए हैं। ग्राहक पॉलिसीयों से सम्बंधित सभी जानकारियां के लिये एलआईसी की वेबसाइट .. पर जाकर "वर्चुअल असिस्टेंट" एलआईसी मित्र की सहायता ले सकते हैं, इसके अलावा 022-68276827 पर फोन करके भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा पॉलिसी धारक वाट्सएप नंबर 8976862090 पर मेसेज करके भी अपनी पॉलिसियों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

अवभृथ स्नान के साथ गलताजी में संपन्न हुआ 7 दिवसीय ब्रह्मोत्सव

यज्ञवेदी कुण्ड में तीर्थ जल ना होने से सूर्य कुण्ड में कराया भगवान को स्नान

जयपुर । उत्तर भारत की प्रमुख श्री वैष्णव पीठ उत्तर तोदाद्रि मठ श्री गलताजी में श्रीवैष्णव मण्डल, रामानुज वेदान्त गुरुकुल एवं श्री गलता पीठ के अर्चकों एवं भक्तों के सहयोग से मनाए जा रहे 7 दिवसीय दिव्य ब्रह्मोत्सव का अवभृथ स्नान के साथ समापन हुआ।

श्री वैष्णव मण्डल जयपुर के अध्यक्ष डॉ. लीला पुरुषोत्तम ने बताया कि भगवान श्रीनिवास, श्रीदेवी व भूदेवी का सात दिवसीय ब्रह्मोत्सव बड़े उत्साह व हर्ष के साथ मनाया गया। नित्य वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विभिन्न उत्सव आयोजित किये गए। दिव्य प्रबन्ध, तिरुप्पावै, तिरुपल्लाण्डु, शात्तुमुरै आदि पाठ किये गए। सभी भक्तों को तीर्थप्रसाद, गोष्ठी, तुलसी, शठारि आदि दिए गए। श्री सूक्त, पंचसूक्त, मूलमंत्र, मूल रामायण आदि से नित्य हवन हुए। नित्य संध्याकाल में बलिहरण किया गया। इस अवसर पर मृदाहरण, अंकुरारोपण, रक्षाबंधन, दिव्य तिरूमंजन, तीर्थ-भ्रमण, डोला-उत्सव, दीपोत्सव, कल्याणोत्सव, पुष्पयाग, सहस्त्रनाम-अर्चन, अन्नकूट आदि विभिन्न उत्सव मनाए गए।

आयोजन हेतु दक्षिण भारत से विद्वान पधारे, मालाएं-फूल आदि भी दक्षिण भारत से मंगाए गए। दक्षिण भारत में विशेष रूप से बनवाये गए शेष वाहन

में भगवान श्रीनिवास, श्रीदेवी व भूदेवी विराजमान हुए। अष्टोत्तरशत अर्चन के लिए कलकत्ता से कमल के पुष्प मंगवाए गए। रत्नजडित मुथांगी सहित भगवान के वस्त्र एवं अभूषण व श्रृंगार की सामाग्री भी दक्षिण भारत से मंगवाई गईं। वाद्यम बजाने वाले एवं पाचक आदि भी दक्षिण भारत से पधारे। भगवान व अम्माजी का नित्य अतिआकर्षक श्रृंगार किया गया। सात दिवसीय ब्रह्मोत्सव का अवभृथ स्नान के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर विद्वतजन एवं आचार्यों ने भगवान के साथ पवित्र कुण्ड में स्नान किया। इस वर्ष यज्ञवेदी कुण्ड में तीर्थ का जल ना होने के कारण अवभृथ स्नान गोपाल कुण्ड में ही किया गया।

इस अवसर पर स्वामी सम्पतकुमार अवधेशाचार्य महाराज, स्वामी राघवेन्द्राचार्य, स्वामी सुदर्शनाचार्य, लक्ष्मीनारायण मंदिर के स्वामी त्रिविक्रमाचार्य, मुरलीमनोहर मन्दिर के राघवेन्द्राचार्य, नृसिंह मन्दिर के स्वामी नारायणाचार्य महाराज, वृन्दावन से पधारे स्वामी नारायणाचार्य, बस्सी से पधारे स्वामी त्रिविक्रमाचार्य सहित अरुणेश्वर, रामानुज डेरेवाला, डॉ. लीला पुरुषोत्तम, लक्ष्मीनिवास बांगड़, रामप्रकाश चौधरी, कृष्णकुमार रावत, ओमप्रकाश चौधरी, श्याम भूतड़ा, गिरिराज शर्मा, रतन मीणा, डॉ. प्रशान्त कोठारी, वसुन्धरा, शशि पारीक मौजूद रहे।

श्री निंबार्क जयंती महोत्सव का शुभारंभ आज

जयपुर । श्री सर्वेश्वर संसद के बैनर तले श्री निबार्क जयंती महोत्सव का शुभारंभ शुक्रवार को सुबह 5.30 बजे श्री आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर चांदनी चैक से निकलने वाली प्रभातफेरी से होगा। महोत्सव के अगले दिन शनिवार को शाम 4.30 बजे निकलने वाली शोभायात्रा से होगी। 21 नवम्बर तक चलने वाले इस उत्सव में बधाई गायन सहित कई आयोजन होंगे। आयोजन की सारी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है।

जयंती महोत्सव के पहले दिन शुक्रवार को सुबह 5.30 बजे श्री आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर चांदनी चैक से गोविंद देव जी मंदिर तक प्रभात फेरी मार्ग पर होते हुए श्री निंबार्क नवयुवक मंडल के तत्वावधान में प्रभात फेरी निकाली जाएगी। इसके बाद सुबह 11 बजे श्री निम्बार्क निकुंज बिहारी मंदिर हीरापुरा पावर हाउस, जयपुर में ठाकुर जी का अभिषेक किया जाएगा। इसीदिन साम 5 बजे से श्री आनंद कृष्ण बिहारी मंदिर में बधाई गान उत्सव होगा। आयोजन में बडी संख्या में निम्बार्क वैष्णव जन बधाई गान की मस्ती में झूमे नजर आएुगे। महोत्सव के तहत दौरान 17 नवंबर को भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी, इस शोभा यात्रा में परम पूज्य जगतगुरु श्री श्रीजी महाराज स्वयं सम्मिलित होकर आशीर्वाद प्रदान करेंगे। शोभायात्रा में विशेष रूप से तैयार किए रथ में विराजमान श्रीजी महाराज के साथ जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, पुष्कर के भक्त कीर्तन करते चलेंगे।

अल्बर्ट हॉल पर राजस्थानी संस्कृति की महक बिखरी

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की पहल पर पर्यटन विभाग ने सांस्कृतिक संध्या और फूलों की होली का आयोजन किया।

जयपुर । उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की अभिनव पहल और निर्देशों पर राजस्थान पर्यटन विभाग की ओर से लोक कला और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए और उनको आजीविका के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए "कल्चरल डायरीज श्रृंखला" के तहत दो दिवसीय (15 व 16 नवम्बर) सांस्कृतिक संध्या के पहले दिन शुक्रवार को रामनिवास बाग स्थित अल्बर्ट हॉल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में शेखावाटी अंचल के प्रसिद्ध कच्छी घोड़ी नृत्य, राजस्थान मयूर नृत्य की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद राधा कृष्ण ने फूलों की होली खेली जिससे प्रदेश के उत्तर-पूर्व में स्थित ब्रज अंचल की कला-संस्कृति भव्य रूप में साकार हुई। श्रीकृष्ण-राधा की प्रेमरसमयी और लठमार होली के रंगों व फूलों से साराबोर नृत्य की प्रस्तुति देख दर्शक भी थिरकने लगे। सांस्कृतिक संध्या में जयपुरवासियों के साथ देशी-विदेशी पावणे मौजूद थे।

सार-समाचार

देव दिवाली पर 3100 दीपक जलाए

जयपुर । श्री चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर, झोटवाड़ा रोड में देव दिवाली व कार्तिक पूर्णिमा उपलक्ष्य में घी के 3100 दीपक जलाए गए व भोले बाबा की आरती करके प्रसाद वितरण किया गया। लोगों के द्वारा बड़े धूमधाम से देव दीपावली मनाई गई। मीडिया प्रभारी मनीष केडिया ने बताया देव दीपावली कार्यक्रम में सलाहकार समिति के सदस्य नीलू मोदी, राजेंद्र अग्रवाल(ईटोवाले), समिति अध्यक्ष रविंद्र यादव, विमल अग्रवाल (महासचिव), रवि प्रकाश चौधरी (सचिव),अनिल नाटाणी, श्याम यादव, विष्णु बियानी अन्य भक्तों ने बाबा के कीर्तन व आरती के साथ देव मनाई।

एसबीआई लाइफ ने जारी किया वीडियो

जयपुर । एस.बी.आई. लाइफ इंश्योरेंस ने एक प्रेरक डिजिटल वीडियो "लिप्पी की दुनिया" जारी किया, जिसमें युवाओं के सार, सपनों और शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डाला गया। ओडिशा के क्योंझर में महिला संगठन सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता (डब्ल्यूओएससीए) एनजीओ के सहयोग से तैयार किया गया है। एसबीआई लाइफ के ब्रांड, कॉर्पोरेट संचार और सीएसआर के प्रमुख रविन्द्र शर्मा ने कहा कि इस बाल दिवस पर डिजिटल वीडियो का अनावरण किया है। उन्होंने यह नया डिजिटल वीडियो एक छोटे बच्चे लिप्पी की प्रेरणादायक यात्रा को दर्शाता है और सपनों को पूरा करने की उसकी अडिग इच्छा को दिखाता है। वीडियो में, हम 12 वर्षीय लिप्पी के जीवन को उसकी अपनी नजर से देखते हैं। वह क्योंझर की रहने वाली है और हमें उसकी रोजमर्रा की जिंदगी में झलक मिलती है, जिसमें उसकी माता-पिता की कठिन मेहनत का बखान किया जाता है, जो एक निर्माण स्थल पर काम करते हुए यह सुनिश्चित करते हैं कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और अच्छे स्कूलों में दाखिला प्राप्त कर सके। कठिन परिस्थितियों के बावजूद, वे उसकी शिक्षा में पूरी तरह से समर्पित हैं, क्योंकि वही उनके भविष्य की सफलता की नींव होगी।

दीपदान से रोशन हुआ यज्ञवेदी कुण्ड

जयपुर । गलताजी तीर्थ में शुक्रवार को कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यज्ञ वेदी कुण्ड पर जिला प्रशासन द्वारा भव्य देव दीपावली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालु मंदिर में उपस्थित थे, साथ ही साथ विदेशी पर्यटकों ने भी उत्साह पूर्वक इस धार्मिक आयोजन में भाग लिया व भारत की सनातन परंपरा से रूबरू हुए। इस अवसर पर गालव ऋषि के मंदिर में पुष्प मालाओं से भव्य श्रृंगार किया गया और मंदिर में सुंदर सजावट भी की गई। गालव ऋषि कुंड पर 5100 दीप प्रज्ज्वलित कर दीपदान किया गया। इस अवसर पर नगर निगम जयपुर हैरिटेज की मेयर कुसुम यादव, आयुक्त नगर निगम हैरिटेज अरुण हसीजा, अतिरिक्त कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जयपुर आशीष कुमार सहित नगर निगम एवं देवस्थान विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। मेयर कुसुम यादव ने गालव ऋषि की आरती उपरांत कुंड पर दीपदान किया। आयोजन के उपरांत भक्तजनों को जिला प्रशासन द्वारा प्रसाद वितरित किया गया।

सड़क सुरक्षा का संदेश देंगे स्कूली बच्चे

जयपुर । यूएन स्मृति दिवस (यूएन वर्ल्ड डे ऑफ रिमेम्बरेंस फ़ॉर रोड ट्रैफिक विक्टिम्स) के अवसर पर रविवार 17 नवंबर को जयपुर शहर की मुस्कान फाउंडेशन द्वारा सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों और उनके परिजनों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। उनके परिवारों के साथ संवाद कर सड़क दुर्घटनाओं के विभिन्न पहलुओं को सामने लाया जाएगा। यह कार्यक्रम जवाहर कला केंद्र (मध्यवर्ती) में शाम 6 बजे से आयोजित किया जाएगा। स्थानीय शैक्षिणक संस्थानों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में 1000 से अधिक प्रतिभागी भाग लेंगे, जिनमें छात्र, अभिभावक, कम्यूनिटी लीडर्स और पुलिस, चिकित्सा और परिवहन विभागों के प्रमुख स्टेकहोल्डर्स शामिल होंगे। यह जानकारी मुस्कान फाउंडेशन फॉर रोड सेफ्टी की ट्रस्टी, डॉ. मृदुल भसीन ने दी।

गुरुनानक देवजी का प्रकाश पर्व मनाया

जयपुर । सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देवजी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष में सुखमनी सेवा सोसायटी, बनी पार्क के सदस्यों ने मिलकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सहज पाठ किए। प्रकाश पुरब को समर्पित, सोसायटी के पाठ ग्रुप अपणी मेहर कर के सदस्यों ने गुरुजी की बाणी जपुजी साहिब के 8100 पाठ किए व नाम जाप किया। सोसायटी के सूर्य उदय सिंह ने सरबत के भले की अरदास की। सभी से गुरु जी के बताए तीन नियमों- नाम जपो, किरत करो व वंड छको पर चलने की प्रार्थना की।

10वीं की छात्रा से दुष्कर्म का प्रयास

जयपुर । दौलतपुरा थाना इलाके में 10 वीं की छात्रा से छेड़छाड़ करने और दुष्कर्म करने का प्रयास करने का मामला सामने आया है। घटना को लेकर पीडिता की मां ने मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार अखेपुरा निवासी 37 वर्षीय महिला ने मामला दर्ज करवाया कि वह अपने पति के साथ गांव कालेड अलवर गई थी। उसकी बेटी जो कि 10 वीं में पढ़ती है घर पर अकेली थी। घर पर अकेला पाकर सुआलाल घर में घुस आया और उसके साथ छेड़छाड़ की। स्कूल से लौटने के दौरान विक्की और विक्रम ने उसे बाइक पर बैठकर साथ चलने को कहा। मना करने पर आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी। आरोपी उसे बाइक पर बैठाकर एक स्थान पर ले गए। वहां पर पहले से ही मुकेश और सुआलाल भी मौजूद थे। आरोपियों ने उसकी बेटी के साथ अभद्रता की और उसके साथ दुष्कर्म करने का प्रयास किया। पीडिता के चिल्लाने पर पकड़े जाने के घर से आरोपी वहां से भाग निकले।

हाऊसिंग बोर्ड की कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता शुरू

जयपुर । 29वीं राजस्थान आवासन मण्डल कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता शुक्रवार को नीरजा मोदी स्कूल मानसरोवर, जयपुर के खेल मैदान में शुरू हुई। मुख्य अतिथि आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने गुब्बारे हवा में उडाकर और फुटबॉल को कीक लगाकर प्रतियोगिता का आगाज किया। इससे पूर्व उन्होंने सभी खिलाड़ियों से परिचय किया। आयोजन समिति संयोजक एवं मुख्य अभियंता-प्रथम अमित अग्रवाल ने मुख्य अतिथि आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा को शॉल ओढ़ाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। वरिष्ठ लेखाधिकारी मीनाक्षी पाठक ने मुख्य अतिथि को बैज लगाया। आयोजन समिति अध्यक्ष व अतिरिक्त मुख्य अभियंता-प्रथम प्रतीक श्रीवास्तव ने अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल को माला-साफा पहनाया।

आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने कहा कि खेल प्रतियोगिताओं से एक-दूसरे खिलाड़ियों के सशक्त और कमजोर पक्ष को जानने का अवसर मिलता है। आज के तनावग्रस्त समय में बहुत से लोग विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों के शिकार हो जाते हैं, उससे बचने के लिए इस प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं में सहभागिता निभाना एक कारगर उपाय हैं। इससे हमारी शारीरिक, मानसिक एवं

राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड कमिश्नर डॉ. रश्मि शर्मा ने शनिवार को 29वीं कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया और खिलाड़ियों से मुलाकात कर उनका परिचय भी लिया।

व्यावसायिक कार्य क्षमता का भी विस्तार होता है। उन्होंने खिलाड़ियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि इन प्रतियोगिताओं से समूह समुदाय के साथ जुड़ाव के साथ ही बन्धुत्व एवं सद्भाव की भावना भी बलवती होती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मुख्य सम्पदा प्रबन्धक प्रवीण अग्रवाल ने कहा कि खेलों से शारीरिक मजबूती के साथ ही टीम भावना एवं राजनैतिक कौशल का भी विकास होता हैं। खेलकूद के प्रथम दिवस पर मुख्यालय टीम 100 मी., 200 मी. एवं 400 मी. दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम रही। प्रथम दिवस में दौड़ के अलावा फुटबॉल, क्रिकेट, बॉलीवॉल, बास्केटबॉल, कैरम आदि के लीग मैच आयोजित किये गये।

इस अवसर पर मुख्य अभियंता टी.एस.मीणा, वित्तीय सलाहकार रोहताश यादव, अतिरिक्त मुख्य अभियंता प्रतीक श्रीवास्तव, उप आवासन आयुक्त संजय शर्मा, राजस्थान आवासन बोर्ड केन्द्रीय खेलकूद संचालक समिति के संयोजक दारा सिंह, राजस्थान आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष दषरथ कुमार, कर्मचारी संघ के कार्यकारी अध्यक्ष भगवती प्रसाद, महामंत्री प्रदीप शर्मा, संयुक्त महामंत्री रमेश चन्द शर्मा एवं गोविन्द नाटाणी मौजूद थे।

मध्यप्रदेश में अर्द्धनारीश्वर की विशालकाय मूर्ति स्थापित होगी

जयपुर । मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब 70 किमी. दूर स्थित सिहोर जिले में भगवान शिव के अर्धनारीश्वर रूप की विशालकाय मेटल से बनी मूर्ति स्थापित की जाएगी। करीब 20 टन वजनी, 30 फीट ऊंची अर्धनारीश्वर मूर्ति का निर्माण विश्व प्रसिद्ध मूर्तिकार राजकुमार पंडित कर रहे हैं। लगभग चार माह में इस मूर्ति का निर्माण कार्य पूरा होगा। इसके लिए राजकुमार पंडित के नेतृत्व में लगभग 15 मूर्तिकार दिन-रात इस कार्य को पूरा कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के पर्यटन विभाग की ओर से इस मूर्ति का लोकार्पण मार्च-2025 में प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश में राजकुमार पंडित की और से स्थापित की जाने वाली यह दूसरी मूर्ति है। इससे पहले उन्होंने 2018 तके लोटस के फूल पर हाथ में तिरंगा थामे भारत माता की 25 फीट ऊंची मूर्ति भोपाल के शौर्य स्मारक में स्थापित की गई थी।

अब तक लाखों मूर्तियां बन चुके राजकुमार पंडित की साल-2024 के अंत तक देश-विदेश में करीब 20 मूर्तियां स्थापित की जाएंगी। राजकुमार पंडित ने बताया कि बिजनेसमैन वारेन बफेट व चार्ली मुंगर की 10-10 बस्ट 31 दिसंबर-2024 तक अमेरिका भेजी जाएंगी। इसके अलावा दिसंबर तक राजस्थान के उदयपुर में राणा सांगा, राजसी राजा, गोविंद गुरु व विजय सिंह पथिक की 9-9 फीट की मेटल से बनीं मूर्तियां लोकार्पित की जाएंगी। इसके अलावा इसी माह उतरप्रदेश के कानपुर में लक्ष्मीबाई, सूरजमल, चित्रकूट में तुलसीदास की 12-

12 फीट तथा मैनपुरी में 15 फीट के कीर्ति स्तंभ की स्थापना की जानी है। साथ ही पटना, बिहार के ए.एन. कॉलेज में 9 फीट ऊंची अनुग्रह नारायण सिन्हा की मूर्ति का लोकार्पण होगा। मूर्तिकार राजकुमार पंडित द्वारा बनाई की मेटल की मूर्तियां अगले साल भी देश के कई राज्यों में स्थापित होंगी। इनमें सबसे खास महोबा, यूपी में एक पहाड़ी पर गुरु गोरखनाथ की बैठक मुद्रा में पहली मूर्ति लगाई जाएगी। राजकुमार पंडित ने बताया कि इस मूर्ति की ऊंचाई 80 फीट है।

बरसों से बंद रास्ते खुले तो किसानों और ग्रामीणों के चेहरे खिले

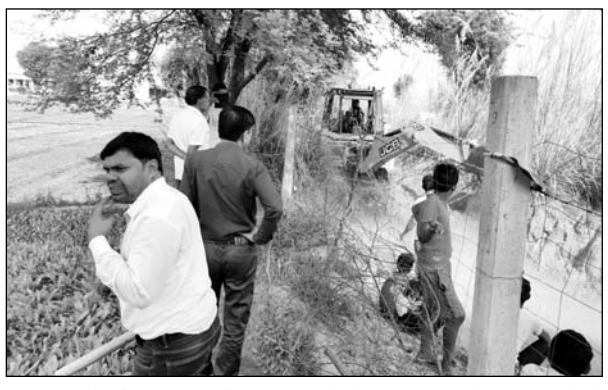

जयपुर कलेक्ट्रेट प्रशासन ने "रास्ता खोलो अभियान" के तहत जिले में कार्रवाई करके बीते कई वर्षों से बंद आम रास्तों को खुलवाया।

जयपुर । "नीयत सही और सकारात्मक हो तो नियति कभी गलत नहीं हो सकती।" यह कहावत शुक्रवार को जयपुर में हकीकत बनती नजर आई। जब जिला प्रशासन ने "रास्ता खोलो अभियान" के पहले ही दिन सहमति और समझाइश से बरसों से बंद 26 रास्ते खुलवाए गए। सालों से बंद रास्ते खुलने पर ग्रामीणों ने खुशी का इजहार किया साथ ही, जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी एवं जिला प्रशासन के अधिकारियों का आभार जताया।

रास्ता खोलो अभियान के पहले दिन चौमूं एवं जोबनेर में 4-4, आंधी, चाकसू, शाहपुरा, सांगानेर में 3-3, कोटखावदा और किशनगढ़-रेनवाल में 2-2 एवं तूंगा और आमेर में एक-एक रास्ता खुलवाया गया। किशनगढ़-रेनवाल के धोलिया का वास गांव में करीब 50 साल पुराना रास्ता समझाइश से खुलवाया

> ■ जिला प्रशासन ने सहमति और समझाइश से अभियान के पहले ही दिन 26 रास्ते खुलवाए

गया। वहीं, जमवारागढ़ की आंधी तहसील के दांतली में 30 साल पुराना रास्ता खुलवाया गया। तो वहीं, तूगां में 15 साल पुराना अतिक्रमण हटाकर 300 मीटर लंबा रास्ता आमजन के लिए सुचारू करवाया गया। इस दौरान ग्रामीणों ने बताया कि गांव और खेतों की ओर जाने वाली राह आसान करने के लिए जिला प्रशासन के इस अभियान से निश्चित रूप से आमजन को राहत मिलेगी। जिला प्रशासन एवं पुलिस ने सहयोग कर दशकों से बंद सिवायचक, कटानी एवं गैर मुमकिन सहित अन्य सभी प्रकार के रास्तों को खुलवा कर उनकी राह बेहद आसान कर दी है। उन्होंने बताया कि इनमें से कुछ रास्ते तो करीब 50 साल से बंद थे, लेकिन सहमति एवं समझाइश से इन रास्तों को भी खुलवाने में कामयाबी मिली। गौरतलब है कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर शुक्रवार को जिले में रास्ता खोलो अभियान का आगाज हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में रास्तों की भूमि पर अतिक्रमण को लेकर जनसुनवाई के दौरान बड़ी संख्या में परिवाद प्राप्त होते हैं। रास्तों को लेकर न्यायालय में भी वाद दायर किए जाते रहते हैं। ऐसे प्रकरणों में निरन्तर बढ़ोतरी होने से आमजन को न्यायालय के चक्कर लगाने एवं जन-धन की हानि होने के साथ-साथ क्षेत्र की कानून व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इसलिए प्रशासन ने रास्ते सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण के लिए 'रास्ता खोलो अभियान' का निर्णय लिया है।

ARBiT
it happens here...

International Day for Tolerance

There's no doubt that a world free of tolerance would not be a good place to be. It is the belief of those supporting this day that such a world should never exist, and that everyone has a right to their expression, religion, and their conscience without fear of bias or ridicule. In addition, the idea teaches that a person's racial or religious background is inconsequential to the potential for tolerance and friendship between them. In honour of the work that continues to be done in the human race to respect all humans, the *International Day for Tolerance* is celebrated each year.

राष्ट्रदूत
SATURDAY
16 November 2024
A-B

#INSIGHT

How Did *Chutneys* Came to the World?

The *Mughal* kitchens were known for their elaborate feasts, which included a wide range of *chutneys*.

Chutney is a savoury condiment that is commonly used in Indian cuisine. It is often made by blending together various ingredients such as herbs, spices, fruits, and vegetables to create a delicious and flavourful accompaniment to a meal.

The word 'chutney' is derived from the Hindi word 'chatni,' which means to crush or grind. *Chutneys* were traditionally made by grinding together fruits and veggies with spices and salt, using a mortar and pestle, but today, they are often made using a blender or food processor. This method was used in Ancient India to preserve fruits and veggies. From *Dosa* to *Cheela*, *Samosa* and *Dahi Bhalla*, we enjoy *chutney* with literally all kinds of food. This condiment is also used as a dip or spread for making a variety of sandwiches. In this article, we will share with you a brief history of how this condiment came to India and some *common chutney* recipes. Take a look.

History of Chutneys

The origin of 'chutney or chatni' can be traced back to Ancient India, where it was an important part of the diet. This condiment was introduced to India during the Mughal era, when the Mughal emperors brought with them a variety of culinary influences from their homeland in Central Asia. The Mughal kitchens were known for their elaborate feasts, which included a wide range of *chutneys*, made with exotic ingredients such as saffron, rose petals, and dried fruits.

Chutneys in the Past

When this method was adopted, people of India started making *chutneys* with veggies and fruits by grinding them with spices and salt, to preserve them from spoiling. This was especially important during the monsoon season when fresh produce was scarce. Also, they were used to add flavour to bland foods as rice and lentils were the staple foods and chutneys enhanced their taste. They were also used for flavouring meats and vegetables.

Common *Chutneys* in *Indian Cuisine*

Mint Chutney

This chutney is made by blending together fresh mint leaves, coriander leaves, green chillies, ginger, garlic, lemon juice, and salt. One can enjoy this chutney with literally any dish in the world. However, people love to have it with *tandoori* and fried dishes.

Tomato Chutney

Another chutney, that's very popular in southern India, is prepared by sauteing tomatoes, onions, and garlic with spices such as cumin, coriander, and chilli powder. People love to consume this chutney with South Indian foods like Dosa, Uttapam, Idli, etc., though, you can enjoy it with dal and rice as well.

Tamarind Chutney

Remember the tangy yet sweet chutney that you love consuming with Dahi Bhalle, Tikki, Samosa and other chaats? It's called tamarind chutney, which is made by simmering tamarind pulp with jaggery (unrefined cane sugar), dates, and spices such as cumin and coriander. It's a great chutney, that's used for not only flavouring dishes, but for digestive purposes as well.

Onion Chutney

This chutney is made by sauteing onions with spices such as cumin, mustard seeds, and red chilli powder. It is often served as a side dish with Dosas and Uttapams.

Coconut Chutney

Be it any part of the country, this chutney is pure love, which one can consume on its own. Often, it is made by blending together fresh coconut, green chilies, ginger, and coriander leaves with a little bit of water. It is often served with Dosas and Idlis. People also add some peanuts while grinding this chutney as it brings that unique taste.

UNMATCHED DEVOTION TO DUTY

Maj Gen Jagatbir Singh VSM (RETD)

Major Devinderjit Singh Pannu was born on 10 September, 1941 in Khanewal in Multan District of present-day Pakistan, and post partition, his family settled in Jullundur, Punjab.

He owes his lineage to an illustrious Jat Sikh family, with a rich tradition in soldiering, and was a sixth-generation soldier. His maternal grandfather, Captain Thakur Singh, had fought as part of 47 SIKH (now 5 SIKH), during World War I in the Battle of Neuve Chapelle in France, where he was severely wounded and decorated with the Military Cross for his act of gallantry. He was, later, also Mentioned in Despatches and subsequently awarded the OBE. His father, Lieutenant Colonel Gurdial Singh Pannu, saw action in World War II, the Indo-Pak War of 1947/48 and the Sino-Indian War of 1962, where he was taken as a prisoner-of-war in Bomdila in November, 1962, when commanding 3 JAK RIF and remained in China till repatriated in May 1963.

Major Devinderjit Singh Pannu, along with his two younger brothers, Colonel NJS Pannu and Harmohinderjit Singh Pannu, received their education from the Lawrence School, Sanawar. Major Pannu joined the National Defence Academy in Khadakvasala, where he was awarded a Blue in Football, went to the Indian Military Academy, Dehradun, where he was awarded a Blue in Polo. He was an excellent sportsman and a great *shikari*.

He was commissioned into 5 SIKH, his maternal grandfather's Battalion on 10 June, 1962. The Sikh Regiment, known for its intrepid soldiers, has carved a name for itself with scores of battle honours. One of the highest decorated Regiments of the Indian Army, it came into existence on 01 August, 1846, with the raising of Ferozepore Sikhs and Ludhiana Sikhs by Captain G. Tebbs and Lieutenant Colonel P. Gordon.

The son of an Army officer, Major Pannu was a soldier at heart, and soon evolved into a no-nonsense and committed soldier, who set his standards high. In his Army career, Major Pannu was first posted to Poonch, and then moved with his Battalion to Nagaland, where he was part of Counter Insurgency Operations. He had also served as an Instructor at the Officers Training Academy in Madras (now Chennai).

As the tensions with Pakistan escalated in 1971, 5 SIKH was deployed in the Chhamb-Jaurian Sector of Jammu and Kashmir as part of Operation Cactus Lily. By this time, Major Pannu had put in about nine years of service and gathered substantial experience in various challenging operations.

Major Devinderjit Singh Pannu.

Major Pannu repeatedly exposed himself to enemy's small arms and artillery fire while moving from one locality to another, unmindful of his own safety, inspiring his men to repulse the enemy attack. However, as the position was of strategic importance to the enemy, it launched another Battalion attack on 5th December morning, preceded by heavy artillery fire. Major Pannu, once again, swung into action and ordered his soldiers to retaliate forcefully. He kept moving from trench to trench, motivating his men with the war cry of the Regiment, '*Jo Bole So Nihal, Sat Sri Akal.*' However, while doing so, Major Pannu got hit by a shell and was martyred.

Major Pannu (third from the right).

#MAJOR DS PANNU

The Dynamics of Chhamb

Chhamb was a small village in an Indian Enclave on the West of the *Manawar Tawi*, which provided India a firm base for launching an offensive towards Bhaddar on the sensitive Gujarat-Bhimber axes, and thereafter, advancing on to Kharian.

> Tactically, Pakistan had a strategic advantage in Chhamb, as the Chenab River secures its Southeastern flank during its offensive. Proximity to Sialkot and internal communication lines allowed Pakistan to maintain a numerical superiority. In contrast, India faced challenges with the river behind them.

The terrain in Chhamb is predominantly open, with seasonal *nullahs* scattered throughout. The *Chenab* river, flowing from Northeast to Southwest, poses a significant barrier to crossing, as there is only one road bridge near Akhnur. The *Manawar Tawi*, which flows North to South, feeds into the Chenab above the Marala Headworks, and can be crossed at Mandiala, Chhamb, Darh, and Raipur during winter. The region, West of the river, features undulating land which is tankable, with some exceptions. The Southern part of Chhamb is low-lying on both sides of the Manawar Tawi and is characterised by dense growth of *sarkanda*. When the river level is high, the area can become boggy, but it is typically dry and firm at other times. To the North, there are low hills and ravines, with the steep *Kalidhar* Range in the background. These hills and the Chenab River to the south create a funnel effect, leading to Akhnur, where all routes converge towards Jammu across the river.

Tactically, Pakistan had a strategic advantage in Chhamb, as the Chenab River secures its Southeastern flank during its offensive. Proximity to Sialkot and internal communication lines allowed Pakistan to maintain a numerical superiority. In contrast, India faced challenges with the river behind them. Further, because of the Ceasefire Agreement, India restricted deploying more troops in Jammu and Kashmir.

Chhamb was crucial for both nations. If Pakistan initiated an offensive through Chhamb, as it did in 1965, it could pose a threat to Jammu. Capturing the Akhnur Bridge would disrupt the main supply route for Indian forces, stationed West of the Chenab. Conversely, an Indian pre-emptive strike could hinder the movement of Pakistani troops from the Kharian-Jhelum area towards the Lahore and Sialkot sectors. The operational responsibility of Chhamb and Sunderbani-Kalidhar sectors lay with 10 Infantry Division, which was commanded by Major General (later, Lieutenant General) Jaswant Singh. Major General Jaswant Singh had planned for an offensive, termed as 'the forward poise.' The plan was that 191 and 52 Infantry Brigades would hold the firm base, 68 Infantry Brigades would establish a Bridgehead across the Ceasefire Line, and eventually, 68 and 52 Infantry Brigades, supported by armour, would launch the offensive. But on 01 December, it was learnt that Pakistan was likely to launch a pre-emptive attack within the next 72 hours. This forced a revision of operational plan. The Division was thus placed in a situation, where it needed to take up a proper defensive posture, though, the preparations, till then, had been made for an offensive.

68 Infantry Brigade, commanded by Brigadier (later, Major General) Tom Morlin, comprised of 5/8 GORKHA RIFLES, 9 JAT and 7 KUMAON, which was to launch the offensive, was kept concentrated at Akhnur, along with the supporting Armoured Regiment DECCAN HORSE, commanded by Lieutenant Colonel (later, Major General) HN Hoon. 52 Infantry Brigade, commanded by Brigadier KK Nayyer, was located at Akhnur to ward off any Pakistani attack on the Bridge through the Chicken's Neck. 28 Infantry Brigade, located on the Northern flank of Chhamb, was made responsible for the defence of the area from Sunderbani to Laleali and down to Dewa. Thus, the Divisional forces were neither organised for a planned offensive nor for an effective defence.

191 Infantry Brigade, commanded by Brigadier (later, Lieutenant General), comprised of 5 SIKH, which was commanded by Lieutenant Colonel (later, Major General) PK Khanna, 5 ASSAM, 4/1 GORKHA RIFLES and 10 GARHWAL RIFLES occupied defences on the line Mandiala Heights-Gurha-Phagla-Barsala-Jhanda-Manawar-Chhati Tahli-Nawan-Hamirpur.

The Screens/ Patrols were maintained up to the International Border and the Ceasefire Line. Mines had been laid all along the Ceasefire Line. However, the minefield from Barsala to Jhanda was a dummy one, as the Division had planned to launch an offensive through this area. When there was a change of plan on 01 December, efforts were made to lay protective minefields in the dummy minefield area also.

This task had not been completed when Pakistan's 23 Infantry Division, reinforced with artillery of 17 Infantry Division, two Azad Kashmir Brigades and two Armoured Regiments plus an (Independent) Armoured Squadron, attacked the deployed Indian 191 Infantry Brigade on night of 03/04 December, which was responsible for defending Chhamb.

After heavy fighting, 191 Infantry Brigade vacated Chhamb and the area around on 06 December and withdrew East of the river. Tenacious defence by 5 SIKH, 5 ASSAM, 4/1 GC GORKHA RIFLES and aggressive actions by DECCAN HORSE and 72 Armoured Regiment, which had been placed under command from 3 (Independent) Armoured Brigade, helped in blunting the Pakistani offensive. A shallow Bridgehead, that had been established by Pakistan's 23 Infantry Brigade, was beaten back the next day. During the battle, the Pakistani Divisional Commander was killed in a helicopter crash. The situation finally stabilised on 11 December.

The Unmatched Commitment by Major Pannu

In the area held by 5 SIKH, 5 ASSAM and 4/1 GORKHA RIFLES, battles raged throughout, interspersed by Pakistani air attacks and intense shelling. Pakistanis launched major attacks on 5 SIKH positions at Point 303, Phagla and Gurha. In the attack on Point 303, Maj Devinderjit Singh Pannu's Alpha Company was occupying a key position for the defence of Chhamb, when the enemy launched an attack on the night of 03/ 04 December 1971. He immediately rushed to one of his Platoons, occupying a Screen Position at the Moel Border Outpost, when he learnt that hostilities were imminent so as to ensure that the Post was not surprised and held out against the enemy attack. The attack continued throughout that night, and thereafter, for sixteen hours but Major Pannu held on gallantly, along with his troops, against heavy enemy pressure after it had been completely surrounded. He then withdrew to his main position where his Company valiantly faced Battalion strength attacks by the enemy on the night of 04/05 December. The Pakistanis brought everything down on his Company, yet, he and his men kept thwarting the enemy back and he took it on himself to keep their morale high, by fighting by their side.

> He immediately rushed to one of his Platoons, occupying a Screen Position at the Moel Border Outpost, when he learnt that hostilities were imminent so as to ensure that the Post was not surprised and held out against the enemy attack. The attack continued throughout that night.

Major Pannu repeatedly exposed himself to enemy's small arms and artillery fire while moving from one locality to another, unmindful of his own safety, inspiring his men to repulse the enemy attack. However, as the position was of strategic importance to the enemy, it launched another Battalion attack on 5th December morning, preceded by heavy artillery fire. Major Pannu, once again, swung into action and ordered his soldiers to retaliate forcefully He kept moving from trench to trench, motivating his men with the war cry of the Regiment, '*Jo Bole So Nihal, Sat Sri Akal.*' However, while doing so, Major Pannu got hit by a shell and was martyred.

By his inspiring leadership and gallant actions, Major DS Pannu was instrumental in not only blunting the attacks but also in inflicting heavy casualties on the enemy. He displayed relentless grit, unmatched determination and a sacred sense of duty and loyalty during the operation and laid down his life in the service of the nation. He was awarded the *Vir Chakra* for displaying gallantry, determination, and leadership of a high order. The CO of 5 SIKH Lieutenant Colonel (later, Major General) PK Khanna was awarded the *Maha Vir Chakra*. 5 SIKH had stood their ground with valour for the soil of Chhamb.

Reinforcing a Tradition

In keeping with the rich tradition of honouring and respecting its fallen soldiers, the Battalion Memorial at Akhnur was inaugurated in December 1972, and since then, an *Akhand Path* has been held every year on 05 December, without a break, notwithstanding where the Battalion is located. The function is attended by a large number of ex-officers, JCO's and OR's as well as family members and serving personnel. Major Pannu's parents, Lieutenant Colonel and Mrs. Gurdial Singh Pannu, attended this function every year till they were alive, and this tradition is now being carried out by his two younger brothers, Colonel NJS Pannu and Harmohinderjit Singh Pannu.

rajeshsharma1049@gmail.com

#CHEMISTRY

What's the difference between liquid and powder laundry detergent?

Knowing more about the chemistry involved will help you answer those questions.

When shopping for a laundry detergent, the array of choices is baffling. All of the products will likely get your laundry somewhat cleaner. But what gets the best outcome for your clothes and your budget?

Do you want whiter whites? Do you need enzymes? And what's the difference between a powder and liquid detergent? As is often the case, knowing more about the chemistry involved will help you answer those questions.

What is a Detergent?

The active ingredients in both laundry powders and liquids are 'surfactants,' also known as detergents (hence the product name). These are typically charged or 'ionic' molecules that have two distinct parts to their structure. One part interacts well with water and the other interacts with oils.

This useful property allows surfactants to lift grease and grime from fabrics and suspend it in the water. Surfactants can also form bubbles. Metal salts dissolved in your water can limit the performance of the surfactants. So-called hard water contains lots of dissolved calcium and magnesium salts which can readily form soap scum. Modern laundry detergents, therefore, contain phosphates, water softeners and other metal 'sequestrants' to stop the formation of soap scum. Phosphates can cause algal blooms in fresh water environments. This is why modern detergent formulations contain smaller amounts of phosphates.

Many products also contain optical brighteners. These chemicals absorb ultraviolet light and release blue light, which provides the 'whiter white' or 'brighter colour' phenomenon. Laundry detergents typically contain fragrances. These aren't essential to the chemistry of cleaning, but give the impression that clothes are fresh. Lastly, some laundry detergents contain enzymes, more on those, later.

What's in Laundry Powder?

While detergents and ingredients to avoid soap scum are the most important components, they aren't the most abundant. The main ingredients in powders are salts (like sodium sulfate) that add bulk and stop the powder from clumping.

Another common salt added to laundry powders is sodium carbonate, also known as washing soda. Washing soda (a chemical cousin of baking soda) helps to chemically modify grease and grime so that they dissolve in water. Laundry powders also frequently contain oxidising agents like sodium percarbonate. This is a stable combination of washing soda and hydrogen peroxide. An additive, known as tetraacetylethylenediamine, activates the percarbonate to give a mild bleaching effect. Chemically, powders have an advantage, their components can be formulated and mixed but kept separate in a solid form. (You can usually see different types of granules in your laundry powder.)

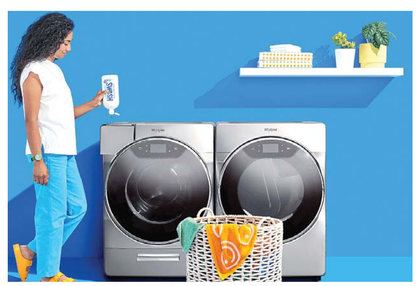

What's in Laundry Liquid?

The main ingredient of laundry liquid is water. The remaining ingredients have to be carefully considered. They must be stable in the bottle and then work together in the wash. These include similar ingredients to the powders, such as alkaline salts, metal sequestrants, water softeners and surfactants.

The surfactants in liquid products are often listed as 'ionic' (charged) and 'non-ionic' (non-charged). Non-ionic surfactants can be liquid by default, which makes them inappropriate for powdered formulations. Non-ionic surfactants are good at suspending oils in water and don't form soap scum.

Liquid detergents also contain preservatives to prevent the growth of microbes spoiling the mixture.

Liquids do have one advantage over powders, they can be added directly to stains, prior to placing the item in the wash.

A recent 'convenience' version of liquid formulas is highly concentrated detergent pods. Colourful and bearing a resemblance to sweet treats, these products have been found to be dangerous to young children and people with cognitive impairment. Pods also remove the option to add less detergent, if you're running a smaller load or just want to use less detergent in general.

So, what about Enzymes?

Enzymes are naturally evolved proteins included in laundry products to remove specific stains. Chemically, they are catalysts, things that speed up chemical reactions. Enzymes are named for the molecules they work on, followed by the ending "-ase." For example, lipase breaks down fats (lipids), protease breaks down protein, while amylase and mannanase break down starches and sugars.

These enzymes are derived from organisms found in cool climate regions, which helps them function at the low temperature of washing water. Running an excessively hot wash cycle can damage or denature the enzyme structure, stopping them from assisting in your wash. If your detergent contains enzymes, the washing temperature should be neither too hot nor too cold. As a guide, temperatures of 15-20°C are used in standard laundry tests.

THE WALL

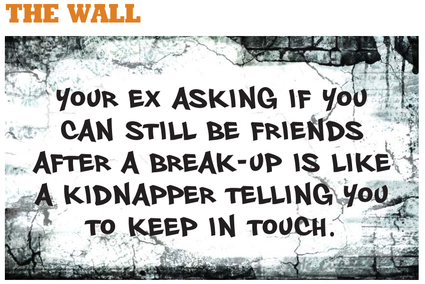

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

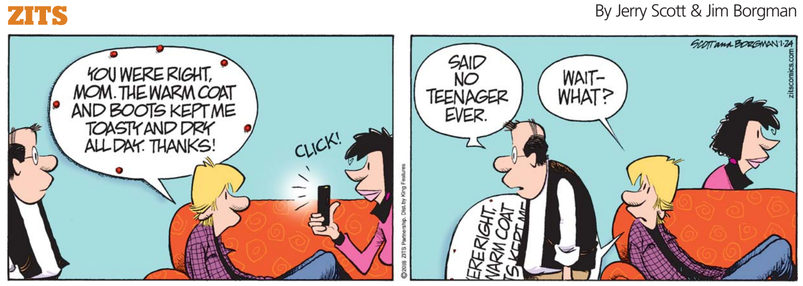

ब्लाईंड मर्डर का खुलासा, हत्या के आरोप में दो दोस्त गिरफ्तार

पुलिस ने दोनों को नवलगढ़ से हिरासत में लिया और पूछताछ की तो अपना जुर्म कबूल किया

गुढ़ागौड़जी, (निसं)। थाना इलाके के सीथल से छावसरी जाने वाले रास्ते पर गुरूवार सुबह मिली छावसरी निवासी सुनील कुमावत की लाश के मामले में पुलिस ने महज 24 घंटे में ब्लाईंड मर्डर का खुलासा करते हुए हत्या के आरोप में मृतक सुनील के ही दो जिगरी दोस्तों को गिरफ्तार कर लिया है।

सीआई राममनोहर ठोलिया ने बताया कि मृतक सुनील कुमावत छावसरी का रहने वाला था। उसके दो दोस्त भी छावसरी निवासी मनोज जाट व जितेंद्र जाट है। 12 नवंबर को सुनील कुमावत अपनी मां के साथ घर में मारपीट कर रहा था, तो उसके दोस्त जितेंद्र जाट ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सुनील जाट को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद 13 नवंबर को सुनील जाट जमानत पर छूटा और घर पहुंचा। शाम को तीनों दोस्त फिर से मिले। तीनों मनोज की स्कूटी पर पहले तो शराब के ठेके पर गए, जहां से शराब खरीदी और छावसरी से सीथल जाने वाले रास्ते पर सड़क किनारे बैठकर अंधेरे में शराब पीने लग गए। शराब पीने के बाद जितेंद्र ने सुनील को अपनी मां के साथ मारपीट ना करने की बात कही। जिस पर तीनों में बहस हो गई। तीनों उसी जगह पर झगड़ने लगे, लेकिन जोर-जोर से आवाज होने पर वहां पर रहने वाला एक व्यक्ति आया, तो तीनों वहां से निकल गए।

पुलिस ने युवक की हत्या के आरोप में दो जनों को गिरफ्तार किया।

इसके बाद इसी रोड पर कुछ दूरी पर आकर फिर से लड़ने लगे।

यहां से भी तीनों कुछ देर झगड़ा करने के बाद तीसरी जगह पहुंचे, जहां पर सुनील की लाश मिली थी। वहां पर जितेंद्र और मनोज ने शराब के नशे में सुनील के साथ मारपीट की, जहां सुनील की मौत हो गई। इसके बाद जितेंद्र और मनोज ने सुनील को उठाकर स्कूटी पर बैठाने की कोशिश की, लेकिन शराब के नशे में दोनों से सुनील नहीं उठा तो उसे छोड़कर अपने अपने घर चले गए। सुबह तक दोनों आरोपियों को सुनील की मौत की जानकारी नहीं थी, लेकिन इसी दौरान एक दूधवाला

- मां के साथ मारपीट पर बहस हुई थी, शराब के नशे में पीटा तो सुनील की मौत हो गई थी

आया और उसने बताया कि सड़क पर एक लाश पड़ी है, जिसके बाद मनोज और जितेंद्र के होश उड़ गये और दोनों अपनी स्कूटी से नवलगढ़ भाग गए। पुलिस ने दोनों को नवलगढ़ से हिरासत में लिया और पूछताछ की तो दोनों ने अपना जुर्म कबूल लिया। पुलिस आरोपियों को कोर्ट में पेश करेगी। इस मामले में मृतक सुनील के भाई किशोर ने गुरूवार को अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया था।

इससे पहले गुरूवार सुबह सड़क किनारे लाश की सूचना पर गुढ़ा पुलिस मौके पर पहुंची थी। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए एसपी शरद चौधरी ने मामले के खुलासे के निर्देश दिए थे, जिस पर दो टीमों का गठन किया गया जाकर योजनाबद्ध तरीके से मर्डर का खुलासा किया गया। घटना स्थल का एफएसएल, एमओबी तथा डॉग स्क्वायड द्वारा निरीक्षण कर साक्ष्य जुटाए गए। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने संभावित लोगों से पूछताछ कर, सीसीटीवी कैमरों को अवलोकन कर अज्ञात हत्यारों को नामजद किया।

'भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन पर तीन नई लिफ्ट लगेंगी'

सांसद दामोदर अग्रवाल ने भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन पर चल रहे निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। सांसद दामोदर अग्रवाल ने भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन पर चल रहे निर्माण कार्यों का औचक निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए व डीआरएम को फोन कर नवनिर्माण के लिये प्रस्ताव दिये।

सांसद प्रवक्ता विनोद झुर्रानी ने बताया कि स्थानीय रेलवे स्टेशन पर सांसद दामोदर अग्रवाल की पहल पर कायाकल्प किया जा रहा है। भीलवाड़ा रेल्वे स्टेशन को अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है। सांसद अग्रवाल ने बताया कि स्टेशन पर तीन नई लिफ्ट का निर्माण किया जा रहा है जो सभी प्लेटफार्मों पर लगेगी। साथ ही एक नया 12 मीटर चौड़ा फुट ओवरब्रिज बनाया जा रहा है। प्लेटफार्म 4 पर नई एंट्री बिल्डिंग का निर्माण हो रहा है व यात्रियों की सुविधा के लिये प्लेटफार्म नम्बर 1 पर पांच रिटायरिंग रूम बन रहे हैं। मुख्य द्वार पर सर्कुलेटिंग एरिया का नवनिर्माण कराया जा रहा है व रिजर्वेशन ऑफिस की तरफ 1000 फीट नया सर्कुलेटिंग एरिया का निर्माण हो रहा है। सांसद अग्रवाल ने रात्रि में दिल्ली से आने वाली चेतक एक्सप्रेस को प्लेटफार्म नंबर दो की जगह चार पर खड़ी रखने का प्रस्ताव रखा, जिससे यात्रियों को सुविधा हो सके। निरीक्षण के दौरान स्टेशन मैनेजर, सहायक मण्डल इंजीनियर, सीनियर सेक्शन इंजीनियर, सीएमआई व सीएचआई साथ रहे। वहीं महापौर राकेश पाठक, पूर्व न्यास अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण डाड, प्रेम स्वरूप गर्ग, राकेश कसेरा, विमल जैन, लंकेश पाराशर भी उपस्थित थे।

अवैध शराब सहित चार जने गिरफ्तार

गंगापुर सिटी, (निसं)। पुलिस ने शुक्रवार को अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 204 पव्वे जब्त कर चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कार्रवाई गंगापुर सिटी कोतवाली थाने के अलावा गंगापुर सिटी सदर, बामनवास और नादौती थाने के द्वारा की गई।

एसपी ममता गुप्ता के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राकेश राजौरा और गंगापुरसिटी पुलिस उपाधीक्षक संतराम मीणा, बामनवास के सीताराम मीणा, टोडाभीम के मुरारीलाल मीणा के निर्देशन में कोतवाली थाना, सदर थाना, बामनवास थाना और नादौती थाना द्वारा अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई की गई। कोतवाली थानाधिकारी जितेन्द्र सिंह ने बताया कि उनके निर्देशन में सहायक उपनिरीक्षक रामराज के द्वारा गश्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर अवैध शराब के 50 पव्वे के साथ धर्मसिंह पुत्र शंकर लाल बैरवा निवासी अंबेडकर नगर गंगापुर सिटी को आबकारी अधिनियम में गिरफ्तार किया। इसी तरह सदर थानाधिकारी ने बताया कि सहायक उपनिरीक्षक धनराज के द्वारा अशोक पुत्र गिर्राज गुर्जर निवासी छोटी महू थाना कोतवाली गंगापुर सिटी को अवैध शराब के 52 पव्वे सहित दौलतपुर रोड मंदिर के सामने से आबकारी अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर लिया।

बामनवास थाने के सहायक उपनिरीक्षक प्रकाशचंद के निर्देशन में टीम ने रिवाली आम सड़क से राजेश पुत्र गिर्राज गुर्जर निवासी रिवाली थाना बामनवास को अवैध देसी शराब के 48 पव्वे के साथ आबकारी अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर लिया। इसी तरह नादौती थाना के द्वारा सहायक उपनिरीक्षक रामावतार द्वारा गश्त के दौरान कैमला से रूपसिंह पुत्र मन्नू बैरवा निवासी कैमला नादौती को 54 पव्वे अवैध देसी शराब के साथ गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने चारों आरोपियों से देसी शराब के पव्वों को जब्त कर लिया और चारों को गिरफ्तार किया है।

ट्रेलर से भिड़ी कार, पांच घायल

अजमेर, (कासं)। जिले के नसीराबाद के सदर थाना क्षेत्र में नेशनल हाइवे संख्या-48 स्थित ग्राम झड़वासा के पास एक कार आगे चल रहे ट्रेलर चालक द्वारा अचानक ब्रेक लगा देने से ट्रेलर में पीछे से घुसकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। दुर्घटना में कार में सवार 6 में से 5 यात्री गंभीर रूप घायल हो गए।

जानकारी के अनुसार गुजरात बड़ौदा निवासी पांच व्यक्ति बलेनो कार में नसीराबाद से बड़ौदा जा रहे थे। झड़वासा गांव के निकट आगे चल रहे ट्रेलर चालक द्वारा अचानक ब्रेक लगाने से कार आगे चल रहे ट्रेलर में घुस गई। कार में सवार बड़ौदा निवासी पांच व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलने पर सदर थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची। रोगी वाहन की मदद से घायलों को नसीराबाद राजकीय सामान्य चिकित्सालय पहुंचाया गया, जहां पर घायलों को प्राथमिक उपचार देकर गंभीर हालत होने के कारण अजमेर रैफर कर दिया गया।

आरोपी गिरफ्तार

करौली, (निसं)। थाना कोतवाली करौली ने पुलिस जाप्ता पर हमला करने व राजकार्य में बाधा उत्पन्न करने के मामले में फरार चल रहे आरोपी राजेन्द्र उर्फ गोलू सैनी पुत्र रणजीत निवासी न्यू अनाज मंडी के पास लालसोट थाना लालसोट जिला दौसा को गिरफ्तार किया। गत नौ नबम्बर को थाना कोतवाली करौली पर एक रिपोर्ट सदर थाना प्रभारी चंचल शर्मा ने थाना सदर करौली पुलिस जाप्ता द्वारा दौराने राजकार्य गूलरघटा करौली पर थाना सदर करौली जाप्ते के साथ तफ्तीश के दौरान आरोपियों द्वारा हमला कर राजकार्य में बाधा पहुंचाई व सरकारी वाहन की पत्थर से लाईट फोड़ दी आदि पर थाना कोतवाली करौली पर मुकदमा दर्ज किया गया।

उत्तराखंड की गैंग ने झुंझुनूं में भी दो वारदातें की थी

दो ठगों को कोतवाली पुलिस प्रोडक्शन वारंट पर लाई, बापर्दा गिरफ्तार किया

झुंझुनूं, (निसं)। उत्तराखंड की एक ठग गैंग ने भगवान के दर्शन दिलाकर बेटों से संकट हटाने का झांसा देकर झुंझुनूं जिले में ठगी की वारदातें की थी, जिसके बाद चिड़ावा पुलिस ने गैंग के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया था। अब इस मामले में गैंग के दो सदस्यों को कोतवाली पुलिस झुंझुनूं जिला जेल से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर आई है।

एएसआई राजेंद्र प्रसाद मीणा ने बताया कि झुंझुनूं कोतवाली में आठ सितंबर को मुकेश नाम की महिला ने मामला दर्ज कराया था कि वह अपने बेटे को कोचिंग छोड़कर वापिस जब घर जा रही थी। तो गुढ़ा रोड रेलवे फाटक के पास अज्ञात युवक मिले। जिन्होंने पहले तो उससे किसी का पता पूछा। इसके बाद बातों में उलझाकर उसे डराया कि उसके बेटे पर संकट है। इस संकट को दूर करने के लिए आरोपियों ने उससे सोने की कानों की बालियां और मंगल सूत्र उतरवा लिया।

ठगी करने वाले आरोपियों को पुलिस ने बापर्दा गिरफ्तार किया।

- ठगों ने बेटों पर संकट बताकर दो महिलाओं के साथ ठगी की थी

इसके बाद भगवान के दर्शन कराने के लिए कुछ दूर पैदल भेज दिया और पीछे से गहने लेकर फरार हो गए। इस मामले में उत्तराखंड के उधमसिंह नगर इलाके के गदरपुर हुसनू पुत्र नजरूदीन फकीर व शाहिद पुत्र हबीब को कोतवाली पुलिस प्रोडक्शन वारंट पर लेकर आई है, जिन्हें बापर्दा गिरफ्तार किया गया है। अब पीड़िता से आरोपियों की पहचान करवाने के बाद गहने बरामदगी की कार्रवाई होगी। इन्हीं दोनों आरोपियों ने इससे पहले पांच अगस्त को गांधी चौक यूको बैंक के पास भी सुमन वशिष्ठ नाम की महिला को भी उसके बेटे पर संकट बताकर सोने की दो चूड़ियां ली थी और 31 कदम चलने के बाद भगवान के दर्शन होने की बात कही थी। सोने की दो चूडियां लेकर आरोपी फरार हो गए थे। इस मामले में भी आरोपियों को बापर्दा अलग से गिरफ्तार किया जाएगा।

भीण्डर पालिका के 22 लाख बकाया, कभी भी कट सकता है रोड लाइट कनेक्शन

भीण्डर, (निसं)। भीण्डर शहर की सड़कों को रोशन करने वाली रोड लाइटों पर कभी भी बिजली विभाग की कैंची चल सकती है। भीण्डर नगर पालिका के रोड लाइटों के बिजली बिलों के 22 लाख रूपये बकाया चल रहे हैं, जबकि विद्युत विभाग पिछले 15 दिनों दो नोटिस दे चुका हैं और उनकी अवधि समाप्त हुए दो दिन गुजर चुके हैं, इसलिए अब विद्युत विभाग कभी भी भीण्डर नगर पालिका क्षेत्र की रोड लाइटों के बिजली कनेक्शन काट सकता है।

- भीण्डर नगर पालिका के रोड लाइटों के बकाया को लेकर विभाग दो नोटिस दे चुका है

9 माह से नहीं चुकाया बिजली बिल :- भीण्डर नगर पालिका क्षेत्र की रोड लाइटों सहित पालिका कार्यालय के पिछले करीब 9 माह से बिजली बिल बकाया चल रहे हैं। अंतिम बार नगर पालिका द्वारा 19 फरवरी 2024 को बिजली बिलों का भुगतान किया था। इसके बाद से अब तक बिजली बिलों को भुगतान नहीं किया गया है। जिसके चलते विद्युत विभाग के पिछले 9 महीने में नगर पालिका से 22 लाख की बकाया मांग रहा है। इसको लेकर विद्युत विभाग ने नोटिस भी जारी कर दिया है।

अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड भीण्डर कार्यालय से सहायक अभियंता ने पिछले 15 दिनों में दो नोटिस जारी कर दिये हैं और 11 नवंबर को जारी किये गये नोटिस में तीन दिन की मियाद दी गई वो भी गुजर चुकी है। इसके चलते अब कभी भी विद्युत विभाग नगर पालिका के सभी रोड लाइटों के कनेक्शन काट सकता हैं, जिससे भीण्डर नगर की गलियों में अंधेरा हो जायेगा। विद्युत विभाग ने अधिशाषी अधिकारी के नाम जारी किये नोटिस में बताया कि नगर पालिका के अर्न्तगत आने वाले रोड लाइट के 23 बिजली कनेक्शनों के 22 लाख 9 हजार 30 रूपये बकाया है। बिलों को जमा करवाने की अंतिम तिथि 23 अक्टूबर 2024 थी, लेकिन अभी तक जमा नहीं करवाए गये नोटिस जारी होने के अगले तीन दिनों में बकाया राशि नहीं जमा करवाने पर बिना अग्रिम सूचना दिये विद्युत कनेक्शन काटने की कार्यवाही की जायेगी।

पुष्कर मेले का शुक्रवार को पुरस्कार वितरण व रंगारंग कार्यक्रमों के साथ विधिवत समापन हुआ। इस मौके पर राजस्थानी परम्परा से आतिथ्य सत्कार के साथ लोक संस्कृति के ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद सहित विभिन्न प्रकार की पशु प्रतियोगितायें आयोजित हुई।

पांच हजार का इनामी हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

करौली, (निसं)। जिला स्पेशल टीम करौली ने 6 माह से फरार फायरिंग के आरोपी को पाटौरन गांव से गिरफ्तार किया। आरोपी पी पांच हजार का इनाम घोषित था।

पुलिस महानिदेशक राजस्थान जयपुर के द्वारा संगठित अपराधियों, माफियाओं, हार्डकोर अपराधियों, इनामी, सीमावर्ती राज्य के अपराधिक गिरोह की निगरानी तथा गिरफ्तारी हेतु कठोर एवं प्रभावी कार्रवाई के आदेशों की पालना में जिला पुलिस अधीक्षक करौली बृजेश ज्योति उपाध्याय के निर्देशन में धारासिंह उनि. प्रभारी डीएसटी करौली के नेतृत्व में गठित जिला स्पेशल टीम करौली द्वारा 6 माह से फरार फायरिंग के आरोपी गब्बरसिंह पुत्र हंसराम मीना निवासी पाटौरान थाना सदर करौली को पाटौरन गांव से गिरफ्तार किया। ज्ञात रहे की पुलिस अधीक्षक करौली द्वारा उनि.धारासिंह डी.एस.टी प्रभारी जिला करौली को मुलजिम के मोहनराज के संबंध में आसूचना संकलित करने के निर्देश दिए।

जिस पर करीब 6 माह से फरार 5 हजार रूपये के ईनामी गब्बरसिंह पुत्र हंसराम जाति मीना निवासी पाटौरन थाना सदर करौली के पीछले तीन चार दिन से पाटौरन गांव में होने की आसूचना मिल रही थी।

- आरोपी पर करौली जिला के विभिन्न थानों में करीब एक दर्जन मुकदमे दर्ज हैं

जिस पर डीएसटी प्रभारी धारासिंह उप निरीक्षक मय टीम के रवाना होकर आरोपी के घर पाटौरान पहुँचे जहाँ पर गब्बरसिंह पुत्र हंसराम मीना निवासी पाटौरान थाना सदर करौली को घर पर तलाश किया तो आरोपी पुलिस जाप्ता को देखकर घर से खेतों कि तरफ भागने लगा जिस पर पुलिस टीम के नैमीचंद कानि. न. व रत्नोसिहं कानि. ने आरोपी को काफी पीछा करके से पकड़ा। आरोपी की गिरफ्तारी पर 5 हजार रूपये का इनाम घोषित किया हुआ है। आरोपी पुलिस थाना सदर करौली को हिस्ट्रीशीटर है जिस पर करौली जिला के विभिन्न थानों में करीब एक दर्जन मुकदमे दर्ज है।

अज्ञात जानवर ने सात बकरियों को मारा

चिड़ावा, (निसं)। चिड़ावा शहर के निकट सेही कलां में देर रात्रि को दो बजे बाद किसी अज्ञात जानवर ने एक घर के अंदर बकरियों पर हमला कर दिया। जिसमें दस बकरियों में से अज्ञात जानवर ने सात बकरियों को अपना शिकार बना लिया। वहीं तीन बकरी घायल अवस्था में मिली। मिली जानकारी के अनुसार सेही कलां निवासी सुमन पत्नी शिवकुमार ने बताया कि बीती रात को ढाई बजे जब वह उठी और बाहर देखा तो घर के बाड़े में सात बकरियों की लाशें पड़ी मिली, वहीं तीन बकरी घायल अवस्था में मिली। इसके बाद ग्रामीणों को सूचना मिलने पर ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए। सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और अज्ञात जानवर के पगमार्क लिए हैं। वन विभाग टीम ने इसे कुत्ते के पगमार्क बताएं। इधर पीड़ित किसान है और उसकी आय का एक माध्यम बकरी पालन था, जिससे उसका घर पल रहा था। अब उसके आगे परिवार पालने का संकट आ खड़ा हुआ है। ग्रामीणों ने सरकार और प्रशासन से पीड़ित परिवार की आर्थिक मदद की गुहार लगाई है।

ब्लाईंड मर्डर का पर्दाफाश, मृतक की पत्नी व उसका साथी गिरफ्तार

मृतक की पत्नी व आरोपी भूपेन्द्र सेन के बीच प्रेम प्रसंग हत्या का मुख्य कारण बना

ब्यावर, (निसं)। पुलिस ने ब्लाइंड हत्याकांड का 24 घण्टों में पर्दाफाश किया है। मृतक की पत्नी व उसके साथी को गिरफ्तार किया है। मृतक की पत्नी व आरोपी भूपेन्द्र सेन के बीच प्रेम प्रसंग हत्या का मुख्य कारण बताया जा रहा है।

जिला पुलिस अधीक्षक श्याम सिंह आई.पी.एस, के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भूपेन्द्र शर्मा तथा वृताधिकारी जैतारण सत्येन्द्र सिंह नेगी के निकट सुपरविजन में धानाधिकारी पुलिस थाना जैतारण धौलाराम उप निरीक्षक ने टीम सहित कार्य करते हुए ग्राम निम्बेडा कलां में हुए ब्लाइण्ड मर्डर का खुलासा करते हुए हत्या के आरोपी, मृतक की पत्नी व उसके पड़ोसी को गिरफ्तार किया। जानकारी के अनुसार 12 व 13 नवंबर की मध्यरात्रि को जैतारण थाना क्षेत्र के गांव निम्बेडा कलां में गोचर भूमि में एक लाश पड़ी होने की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। मृतक की पहचान कचरूराम नायक गांव निम्बेडा कलां के रूप में हुई। मृतक की माता ने बताया कि उसका पुत्र 12 नवंबर को रात 10-11 बजे से ही घर से लापता था और सुबह उसकी लाश मिली। कचरूराम के गर्दन पर वार करके उसकी निर्मम हत्या कर दी गई। हत्या की आशंका होने पर टीम का गठन किया गया और मामला दर्ज किया जाकर अज्ञात आरोपियों की तलाश शुरू की। घटना स्थल के आसपास की जानकारी एकत्र करते हुए ग्रामीणों तथा मुखबिरों से पूछताछ की। जानकारी प्राप्त करते हुए पुलिस टीम को मृतक की पत्नी की भूमिका संदिग्ध लगी। मृतक की पत्नी व हत्या में उसके सहयोगी भूपेन्द्र सेन उर्फ राजू को भी पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया।

पति की हत्या के आरोप में पत्नी व पड़ौसी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

आरोपिया किरण का पति कचरूराम शराब पीने का आदि था जो आये दिन शराब के नशे में उसके साथ मारपीट करता था। इसी बीच आरोपिया की उसके पडोसी भूपेन्द्र सेन उर्फ राजू से दोस्ती हो गई तथा दोनों ने मिलकर कचरूराम को रास्ते से हटाने के लिये उसकी हत्या की योजना बना ली। 12-13 नवंबर की रात्रि को दोनों ने मिलकर कचरूराम की उसके घर में ही धारदार हथियार से वार करके हत्या कर दी तथा साक्ष्य मिटाने के लिये लाश को गांव से दूर जंगल में फेंक दिया व खून सने कपड़े व बिस्तर आदि जला दिये। सुबह पूर्व नियोजित योजना अनुसार लाश की जानकारी मिलने पर मृतक की पत्नी ने रोने का नाटक शुरू कर दिया ताकि किसी को उस पर शक ना हो। पुलिस टीम ने जांच करते हुए सभी घटनाक्रम की कड़ी जोड़ते हुए पूरी घटना का पर्दाफाश कर मृतक की पत्नी किरण व भूपेन्द्र सेन उर्फ राजू को हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया।

संक्षिप्त

प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित

बौंली-बामनवास। नगर पालिका मुख्यालय बौंली के आजाद चौक स्थित पुरानी तहसील प्रांगण में शुक्रवार को राजराजेश्वर महादेव मंदिर में नंदी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रात: 11 बजे जगन्नाथ जी के मंदिर से गाजेबाजे के साथ कलश यात्रा सदर बाजार होती हुई आजाद चौक स्थित राजराजेश्वर शिवालय पर पहुंची। आयोजित कार्यक्रम में आचार्य मनीष अवस्थी एवं विमलेश्वर महादेव मंदिर गंगापुर सिटी के संचालक रजनीश अवस्थी के सानिध्य में विप्रजनों ने नंदी महाराज की विधिवत पूजा अर्चना एवं जलाभिषेक करने के बाद उन्हें विराजमान कराया। कार्यक्रम के दौरान नानकराम गौड, नेहरू सोनी, आकाश सोनी, शंभू दयाल गुप्ता, राकेश भारद्वाज व मनोज भारद्वाज द्वारा नंदी महाराज की पूजा अर्चना के दौरान सपत्नीक धर्म लाभ उठाया। ज्ञात रहे किसी कारणवश पुराने नंदी जी की प्रतिमा क्षितठास्त हो गई थी।

डैम की नहरें खोली

बौंली-बामनवास । किसानो की निरंतर मांग को देखते हुए भरतपुर संभागीय आयुक्त रश्मि गुप्ता के गुरुवार को सवाई माधोपुर जिला कलेक्टर सभागार में आयोजित बैठक के निर्णय के अनुसार शुक्रवार 15 नवंबर को वर्ष 2024 -25 के दौरान रबि फसल की सिंचाई के लिए प्रात: 11 बजे विधिवत पूजा अर्चना के बाद मौरेल डैम की नहरें खोल दी गई है जिससे किसानों में खुशी की लहर दौड़ गई एवं किसान अपनी फसलों की सिंचाई करने में व्यस्त हो गए इससे पूर्व सिंचाई विभाग ने नहरों की साफ सफाई का कार्य भी कराया। एशिया के सबसे बडे कच्चे बांधों में अपनी मुख्य पहचान रखने वाले मौरेल डैम से सवाई माधोपुर व दौसा जिले के करीब 85 गांवों की खेतों की फसलों की सिंचाई होती है इस इस डैम की भराव क्षमता करीब 31 फिट है एवं इस बांध से निकलने वाली मुख्य नहर से करीब 13हजार हेक्टेयर फसलों को पानी मिलता है इस नहर की करीब 105 किलोमीटर तक की लंबाई है दूसरी पूर्वी नहर से करीब 7हजार हेक्टेयर फसलों को पानी मिलता है इसकी लंबाई करीब 55 किलोमीटर है। मौरेल डैम से नहरें खोले जाने के समय पूजा अर्चना के दौरान किसान सभा सवाई माधोपुर के जिला अध्यक्ष कांजी मीणा, सहायक अभियंता चेतराम मीणा, कनिष्ठ अभियंता विनोद कुमार,चैयरमेन कांजी मीणा सहित अनेको किसान उपस्थित थे।

विधायक ने वर-वधु को आशीर्वाद दिया

मनोहरपुर। शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र के विधायक मनीष यादव ने सैन समाज के द्वादशवा सामूहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम में त्रिवेणी धाम पहुँच कर वर वधू को शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया साथ ही सुखद दाम्पत्य जीवन की कामना की। साथ ही आयोजनकर्ता और सम्मेलन समिति के अध्यक्ष का इस पुनीत कार्य करने पर उन्हें धन्यवाद भी दिया। वही आयोजनकर्ताओ ने भी विधायक मनीष यादव का आभार व्यक्त किया तथा धन्यवाद दिया कि आपने हमारे इस वैवाहिक सम्मेलन में पधारकर वर और वधु को आशीर्वाद प्रदान किया है।

आपसी रंजिश को लेकर जानलेवा हमला करने के मामले में आरोपी गिरफ्तार

पावटा। प्रागपुरा पुलिस थाना के अंतर्गत ठााम बुचारा मे मे पुरानी रंजिस को लेकर जानलेवा हमला करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। जिला कोटपूतली बहरोड़ पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने बताया की वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए एक विशेष अभियान के तहत अभियान को सफल बनाने एवं प्रभावी कार्यवाही करने के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपुतली वैभव शर्मा के सुपरविजन एवं डीवाईएसपी विराटनगर शिप्रा राजावत के निर्देशन में प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार के नेत्तृत्व में गठित टीम द्वारा मेहनत लग्न से कार्य करते हुये आसूचना संकलन कर अपनी सुझबूझ से नितेश मीणा पुत्र रामकिशोर उम्र 21 साल निवासी कुशलपुरा थाना रायसर जिला जयपुर ठााामीण को गिरफ्तार किया है।

प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार ने बताया कि अजीतगढ निवासी लखन पारिक ने प्रागपुरा थाना पुलिस में शिकायत दी थी कि 19 जनवरी 2022 को खान दिखाने के बहाने अभियुक्त ने उसे ठााम बुचारा मे बुलाया व पुरानी रंजिस को लेकर उस पर जानलेवा हमला कर जान से मारने की नियत से

आपसी रंजिस को लेकरजानलेवा हमला करने के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

फायरिंग की जिस पर प्रागपुरा थाना पुलिस ने इस सूचना पर कार्रवाई करते हुए अभियुक्त के खिलाफ थाना प्रागपुरा में आर्म्स एक्ट मे आपराधिक मामला दर्ज किया था।

आमेर / कूकस पंचायत में सूरसागर तलाई में माफिया द्वारा कब्जा करने की खबर ने प्रशासन की निष्क्रियता और संवेदनहीनता को एक बार फिर से उजागर किया है। यह घटना न केवल स्थानीय लोगों के लिए चिंता का कारण बनी हुई है, बल्कि प्रशासन की गंभीरता पर भी सवाल खड़ा करती है। इस पूरे प्रकरण में जो सबसे महत्वपूर्ण और चिंता जनक पहलू है, वह यह है कि प्रकाशित खबर के बावजूद प्रशासन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। इसके साथ ही, माफिया द्वारा तलाई में टीन सेट लगाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई, जो यह दर्शाता है कि प्रशासन या तो इस मुद्दे को हल्के में ले रहा है या फिर किसी दबाव में कार्य नहीं कर रहा है।

सूरसागर तलाई एक सार्वजनिक संपत्ति है, जो क्षेत्रीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण है। यह न केवल पानी का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है, बल्कि पर्यावरण और गांववासियों के लिए भी अनिवार्य है। ऐसे में अगर इस तलाई पर माफिया द्वारा कब्जा किया जाता है और वहां निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाता है, तो यह न केवल जल स्त्रोत की हानि करेगा, बल्कि आसपास के पर्यावरणीय संतुलन को भी प्रभावित करेगा। माफिया का इस तरह का अतिक्रमण बिना प्रशासन की शह के संभव नहीं हो सकता। अक्सर ऐसा देखा गया है कि जब किसी स्थान पर माफिया द्वारा अवैध कब्जे या निर्माण कार्य शुरू किया जाता है, तो प्रशासन तात्कालिक कार्रवाई करने के बजाय मामले को दबाने या अनदेखा करने की कोशिश करता है। यह न केवल प्रशासनिक अक्षमता को दिखाता है, बल्कि यह स्थानीय जनता के प्रति उसकी जवाबदेही में भी कमी को स्पष्ट करता है।

कूकस में सूरसागर तलाई में कब्जा करने के मामले में प्रशासन का चुप रहना और बिना किसी कार्रवाई के माफिया का निर्माण कार्य जारी रहना प्रशासनिक चुप्पी और माफिया से मिलीभगत को संदिग्ध बना देता है। यदि प्रशासन समय रहते कार्रवाई नहीं करता है, तो यह न केवल सूरसागर तलाई के लिए खतरे की घंटी होगी, बल्कि इस तरह के घटनाक्रमों को बढ़ावा देने का कारण बनेगा।

इससे अन्य माफिया भी इसी तरह के स्थानों पर कब्जे करने की हिम्मत जुटाएंगे, जिससे न केवल सार्वजनिक संपत्ति की हानि होगी, बल्कि समाज में कानून का उल्लंघन भी बढ़ेगा। यह पूरी स्थिति कानून-व्यवस्था की स्थिति पर सवाल खड़ा करती है, और यह दर्शाती है कि प्रशासन की प्रभावी निगरानी की कमी है।

पावटा में पेन डाउन हडताल

पावटा। प्रदेश के देवली उनियारा में उपचुनाव के दौरान गत बुधवार को चुनाव ड्यूटी कर रहे उपखंड अधिकारी को निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा द्वारा मारी गई थप्पड की गूंज उपखंड पावटा में भी सुनी गई। यहां उपखंड में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ अन्य संवर्गों के कार्मिकों ने एकजुट होकर इस घटना का विरोध किया और पेन डाउन हडताल की। जिसके चलते अधिकारियों के नही रहने से दूर दराज से आये ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को परेशानियों का सामना करना पडा। जन सुनवाई मे अधिकारियों के नही पहुँचने से अपनी समस्याओं को लेकर आये लोगों को निराश ही लौटना पडा। प्रदेश के देवली उनियारा में उपचुनाव के दौरान गत बुधवार को चुनाव ड्यूटी कर रहे उपखंड अधिकारी को निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा द्वारा मारी गई थप्पड के विरोध मे पेन डाउन हडताल कर नरेश मीणा के खिलाफ कडी कार्रवाई किए जाने के साथ ही मौके पर उपस्थित पुलिसकर्मियों की जिमेदारी तय करते हुए उनके विरुद्ध भी नियमानुसार कार्यवाही करने की मांग की है।

धूलेश्वर महादेव मन्दिर में देव दीवाली मनाई गई

चौमू/कालाडेरा, (निंस)। कालाडेरा कस्बे में स्थित धूलेश्वर महादेव मन्दिर में कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को कालाडेरा के युवा साथियों द्वारा मन्दिर परिसर में देव दीवाली मनाई गई। जिसमें युवा साथियों द्वारा सैकड़ो की संख्या में

- **युवा साथियों द्वारा सैकड़ो की संख्या में दीपक जलाए गए**

दीपक जलाए गए और पूजा करके देव दीवाली के प्रदोष काल के शुभ मुहूर्त में धूलेश्वर मंदिर के प्रांगण में दिए जलाए गए। और आतिशबाजी की गई कस्बे में सुख शांति एवं समृद्धि की ईश्वर से कामना की गई। इसके अलावा कस्बे के अन्य सभी मंदिरों में भी देव दीवाली को दिए जलाए गए। इस दौरान कस्बे के युवा उपस्थित थे।

कालाडेरा कस्बे में स्थित धूलेश्वर महादेव मन्दिर में कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मन्दिर परिसर में देव दीवाली मनाई गई।

केरवाडा पंचायत के गेट बंद, आज होनी थी ग्राम सभा

अलवर। राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग जयपुन एवं जिला परिषद अलवर के आदेश मालाखेड़ा विकास अधिकारी के लिए कोई माईने नही रखते वही उनकी सरपरस्ती में केरवाडा पंचायत की विकास अधिकारी लगातार ड्यूटी से नदारद चल रही है । सरकारी आदेश के तहत आज सभी पंचायतों में विशेष जनसभा का आयोजन होना था लेकिन केरवाडा पंचायत में ताले लटके मिले।

मालाखेड़ा पंचायत समिति अंतर्गत पडने वाली पंचायत केरवाडा में पिछले कई दिनों से विकास अधिकारी हीना बाई मीना पंचायत से नदारद चल रही थी जिससे ग्रामीणों एवं पंचायत के कई जरूरी काम अटके हुए है इस बारे में जब ग्रामीणों ने मालाखेड़ा विकास अधिकारी

- **ग्रामीणों का आरोप मालाखेड़ा विकास अधिकारी की शह पर ग्राम विकास अधिकारी रहती है ड्यूटी से नदारद**

से शिकायत की तो उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला आखिर परेशान ठााामीणों की शिकायत पर मीडिया कर्मी मौके पर पहुंचे। जहां ग्रामीणों ने केरवाडा पंचायत समिति कार्यालय के बंद ताले मीडिया कर्मी को दिखाया साथ ही विकास अधिकारी हीना बाई मीणा द्वारा मांगी गई अवकाश का वह पत्र दिखाया जिसमें उसने शादी के लिए छुट्टी 18 नवंबर से 22 नवंबर तक मांगी थी जिसे भी विकास अधिकारी ओम प्रकाश सैनी ने 14 नवंबर को ही मार्क किया है। ग्रामीण विकास एंव पंचायत राज विभाग एंव जिला पंचायती राज्य विभाग जयपुर द्वारा जारी किया गया गया जिसका क्रमांक नंबर ईएफईए22379 जयपुर है दूसरा पत्र जिला परिषद अलवर द्वारा जारी किया गया जिसका क्रमांक पत्रांक11791498 है जो कि 14 नवंबर को सभी विकास अधिकारियों को भेजे गए है। जिसमें पंचायत राज विभाग की और से निर्देष दिए गए थे कि 15 नवंबर को ठााम पंचायतों आदिवासी नेता और महान व्यक्तित्व बिरसा मुंडा की 150 वी जयंती के उपलक्ष में पेसा और वन अधिकार अधिनियम गांवों ठााम सभा सहित कई कार्यक्रम आयोजित होगे। वही भारत सरकार के आदेश अनुसार 15 नवंबर को जुमई बिहार में जनजातिय गौरव दिवस कार्यक्रम संबोधन प्रधानमंत्री द्वारा किया जा रहा है जिसका सीधा प्रसारण 15 नवंबर के बाद आयोजित होने वाले ग्राम सभाओं में प्रधानमंत्री के संबोधन का रिकॉर्ड संस्करण का प्रसारण भी किया जाए । ग्रामीणों का आरोप है कि केरवाडा विकास अधिकारी बिना सूचना के कार्यालय से गायब रहती है जिससे ठााामीणों के कार्य अटक गए हे वही अपने पंचायत के विकास कार्य भी रूक गए है। उनका आरोप है कि यह सब मालाखेडा पंचायत के विकास अधिकारी की शह पर किया जा रहा है केरवाडा विकास अधिकारी हीना बाई मीणा एक दिन कुछ समय के लिए आती और हस्ताक्षर कर चली जाती।

एक और अभियुक्त गिरतार

पावटा। प्रागपुरा थाना पुलिस ने एक साल से फरार धोखाधडी पूर्वक जमीन बेचने के मामले में दो आरोपीयों को को पहले व एक फरार आरोपी को गुरुवार को गिरतार कर लिया है। जिला कोटपूतली बहरोड पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत निर्देशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक वैभव शर्मा के निर्देशन एंव वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन व प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार के नेतृत्व मे गठित टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए गुरुवार को एक आरोपी गिरवर सिंह पुत्र चंद्रभान यादव निवासी शिवनगर पावटा को और गिरतार किया प्रागपुरा थानाधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि पावटा निवासी मनोज अग्रवाल ने थाने में मुकदमा दर्ज करवाया था।

सार-समाचार

गहरा आक्रोश व्याप्त

बौंली -बामनवास। टोंक जिले के अलीगढ गांव में बुधवार 14 नवंबर को देवली- उनियारा विधानसभा के उपचुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा के समर्थन में सडक मार्ग अवरुद्ध कर रहे उपद्रवियों के द्वारा समाचार कवरेज कर रहे न्यूज़ एजेंसी पीटीआई जयपुर के ब्यूरो संवाददाता अजीत सिंह शेखावत एवं उनके कैमरामैन धर्मेंद्र पर जानलेवा हमला कर कैमरा व माइक तोडे जाने को लेकर सवाई माधोपुर जिले के सभी पत्रकारों में गहरा आक्रोश व्याप्त है। इस मामले को लेकर जिला विकास समिति पंजीकृत सवाई माधोपुर के अध्यक्ष नरेंद्र भारद्वाज, आईएफडब्ल्यूजे के जिला अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा,व बौंली उपखंड के पत्रकार संगठन संरक्षक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्रद्धा ओम त्रिवेदी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को अपने-अपने संगठनों की ओर से मैसेज भेज कर पत्रकारों के हमलावरों को शीघ्र गिरफ्तार करने एवं पीडित पत्रकारों के नष्ट किए गए उपकरणों की भरपाई करने एवं आर्थिक सहायता देने की मांग की है। घायल पत्रकारों का सवाई माधोपुर जिला मुख्यालय पर प्राथमिक उपचार किए जाने के बाद उन्हें जयपुर के लिए रेफर किया गया है इस दौरान सभी पत्रकारों ने उनसे जाकर हाल जाने। पत्रकारों ने बताया कि हमलावर भीड से हमें डॉक्टर किरोडी लाल मीणा के आदमियों ने बड़ी मुश्किल से बचाकर बाहर निकाला है करीब 100, डेढ सौ उपद्रवियों की भीड ने कवरेज करते समय हमारे ऊपर अचानक हमला कर दिया हमारे द्वारा कैमरा व माइक बंद करने के बावजूद भी हमलावर मारते पीटते रहे।

ओमप्रकाश ने खेल में लहराया परचम

मनोहरपुर। शेखावाटी निवासी ओमप्रकाश जांगिड का राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में आयोजित अंदर 16 स्टेट चैलेंजर ट्रॉफी में का सिलेक्शन हुआ है। जिसकी वजह से जयपुर की क्रिकेट अकादमी में उत्साह का माहौल है अकादमी के डायरेक्टर और ओमप्रकाश के कोच राजस्थान खिलाड़ी मुकेश चौधरी , कमलेश मीणा ने इसके सिलेक्शन पर खुशी जताई है एवं आशा की है कि ओमप्रकाश इस चैलेंजर ट्रॉफी में अच्छा परफॉर्म करके राजस्थान का प्रतिनिधि करें एवं अपने कोच अकादमी अथवा परिवार जनों का नाम रोशन करेगे ओमप्रकाश खेल के मैदान में प्रशिक्षण के दौरान दिन में 8 घंटे रोजाना अभ्यास में पसीना बहाते हैं इसी का फल आज उन्हें मिला है अपनी काबिलियत साबित करने का ओम के पिता जो कि दुबई में व्यवसाय है उन्होंने भी ओम के सिलेक्शन पर खुशी व्यक्त की है ं। पिता शेखावाटी निवासी है उनका कहना है कि खेल बच्चे के विकास के लिए ज़रूरी है। खेल के ज़रिए बच्चे अपने आस-पास के माहौल को तलाशना, अपनी कल्पनाओं को विकसित करना और अपनी रुचियों और जुनूनों को खोजना सीखते हैं। खेल बच्चों को उनके शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है।

हर्ष लखेरा प्रथम स्थान पर

फुलेरा। पण्डित रघुनाथ तालेगांवकर फाउण्डेशन ट्रस्ट एवं संगीत कला केन्द्र आगरा की ओर से 60 वीं अखिल भारतीय पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर संगीत प्रतियोगिता का आयोजन आगरा में किया गया। जिसमें शास्त्रीय गायन वयस्क बालक वर्ग में फुलेरा निवासी हर्ष लखेरा ने भाग लेकर अपनी प्रस्तुति देकर प्रथम स्थान प्राप्त करने साथ ही अपने क्षेत्र व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। हर्ष लखेरा के पिता विजेन्द्र प्रकाश हलचल ने बताया कि उक्त श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए आयोजन समिति द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। साथ ही हर्ष लखेरा को इस सफलता के लिए स्थानीय लोगों ने बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित कर उज्जवल भविष्य की कामना की है। गौरतलब है कि हर्ष लखेरा ने राजस्थान विश्वविद्यालय से मास्टर इन परफॉर्मिंग आर्ट एवं राजस्थान संगीत संस्थान से बी- म्यूजिक शिक्षा ठाहण करने के उपाय यूजीसी नेट भी क्लियर किया है। इसके साथ ही वर्तमान में कई संस्थानों से जुडकर संगीत के क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन भी किया है।

कार्यकारिणी की आम सभा 18 को

फुलेरा। कस्बे के निकटवर्ती धार्मिक स्थल भन्दे बालाजी स्थित श्री ब्रह्मा प्रजापति धर्मशाला परिसर में आगामी 18 नवम्बर को प्रात: 8:30 बजे प्रजापति समाज विकास एवं विवाह समिति की आमसभा का आयोजन समिति के अध्यक्ष हूक्माराम दम्बीवाल की अध्यक्षता में किया जाएगा। उपरोक्त जानकारी देते हुए समिति के कोषाध्यक्ष बाबुलाल प्रजापति ने बताया कि आम सभा के दौरान पूर्व बैठक के दौरान निश्चित किए गए अनुसार धर्मशाला के ऊपर हॉल निर्माण के लिए ठेकेदारों के कोटेशन प्राप्त करना, निर्माण के लिए सहयोग राशि प्राप्त करने पर विचार विमर्श करना सहित अन्य जानकारी आम सभा में ही दी जावेगीं

मतगणना कार्मिकों का प्रशिक्षण हुआ

अलवर। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता में आज मिनी सचिवालय के एनआईसी वीसी कक्ष में रामगढ विधानसभा उप चुनाव 2024 की मतगणना में नियोजित किये जाने वाले कार्मिकों का प्रथम रेण्डमाईजेशन आयोजित हुआ। इस दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मुकेश कायथवाल सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि रामगढ विधानसभा उप चुनाव की मतगणना हेतु भारत निर्वाचन आयोग के सॉफ्टवेयर के माध्यम से रेंडम आधार पर कार्मिक नियोजित किये गए। नियोजित कार्मिकों का प्रथम प्रशिक्षण 19 नवंबर कों प्रताप ऑडिटोरियम में आयोजित होगा।

अलीबक्श पैनोरमा का निरीक्षण

खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने शुक्रवार को मुंडावर स्थित अलीबख्श पैनोरमा का निरीक्षण किया। जिला कलेक्टर ने निरीक्षण के दौरान उपस्थित कर्मचारी से अलीबक्श के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने पैनोरमा भवन में सही ढंग से साफ सफाई नहीं पाई जाने पर साफ सफाई करवाने के निर्देश दिए।

भव्य कलश यात्रा के साथ सीताराम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा

पावटा। कर्म जोहडा रामपुरा खुर्द, बजरंगपुरा आंतेला में नवनिर्मित मंदिर में श्री श्री 1008 भगवान दास महाराज, श्री श्री 1008 भरत दास महाराज, श्री श्री 1008 गोपाल दास महाराज की असीम अनुकंपा व श्री श्री 1008 महंत मंगलदास महाराज के सानिंध्य एवं संत रघुनाथदास महाराज, जयरामदास महाराज, विशभबरदास महाराज, रामशरणदास महाराज, शिवदयालदास महाराज, राधेश्यामदास महाराज की उपस्थिति मे शुक्रवार को कर्मजोहडा सीताराम मंदिर मे भगवान सीताराम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा सह श्रीमद्भागवत कथा का भव्य कलश यात्रा यात्रा के साथ शुभारंभ हुआ। इस मौके पर भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गयी।

कलश यात्रा कुंडा धाम से शुरू हुई। जिसमे 2100 कलश के साथ पीले वस्त्र धारण कर सिर पर कलश रखे महिलाएं, बच्चे एवं कन्याएं भजन गाते चल रही थीं।- कलश शोभायात्रा नगर भ्रमण करते हुए कर्म जोहडा धाम सीताराम मंदिर पहुंची। जहां जगह जगह जनप्रतिनिधियों व ग्रामीणों द्वारा कलश यात्रा का पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। वही इस दौरान विभिन्न अखाडो से आये साधुओ द्वारा आँखों पर पट्टी बांध कर अपनी कला का प्रदर्शन किया। इसके बाद वृंदावन से आए महंत श्री सुदर्शनदास महाराज द्वारा पूजन के

- **श्रीमद्भागवत कथा जीवन के उद्देश्य एवं दिशा को दर्शाती हैः महंत श्री सुदर्शनदास महाराज**

बाद वेदमंत्रों के साथ कलश स्थापित कर श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ करते हुए वृंदावन धाम से आए हुए कथावाचक महंत श्री सुदर्शन महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा ऐसी कथा है जो जीवन के उद्देश्य एवं दिशा को दर्शाती है। इसलिए जहां भी भागवत कथा होती है इसे सुनने मात्र से वहां का संपूर्ण क्षेत्र दुष्ट प्रवृत्तियों से खत्म होकर सकारात्मक उर्जा से सशक्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि कथा की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब इसे हम अपने जीवन और व्यवहार में धारण करें।श्रीमद्भागवत कथा के श्रावण से जन्म जन्मांतर के विकार नष्ट होकर प्राणी मात्र का लौकिक व आध्यात्मिक विकास होता है। इस दौरान श्री श्री 1०8 महंत मंगलदास महाराज ने बताया कि सीताराम मंदिर उद्घाटन एवं सीताराम की प्राण-प्रतिष्ठा को लेकर 21०० कलश के साथ भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गयी। शुक्रवार को प्रात=8.15 बजे से कलश यात्रा द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए 21 नवंबर गुरुवार तक, प्राण प्रतिष्ठा व श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह ज्ञानयज्ञ कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव, यज्ञ आयोजन, भागवत कथा व सात दिवसीय पतंजलि योग शिविर का भी आयोजन होगा। श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह ज्ञानयज्ञ के तहत महंत श्री सुदर्शनदास महाराज वृन्दावन धाम के सानिध्य में श्रीमद भागवत कथा का वाचन सात दिनों तक किया जाएगा।

वही 21 नवंबर गुरुवार को दोपहर 1.15 विशाल भंडारा प्रसादी का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न भजन किर्तन सत्संग प्रवचन भी होंगे। विशिष्ठ अतिथियों का आगमन भी कार्यक्रम में होगा। समिति के द्वारा समस्त श्रद्धालुओं को भव्य महा आयोजन में आमंत्रित किया गया है।इस अवसर पर कैलाश सैनी कोटपूतली, मदन यादव लाडाकाबास, पप्पू यादव प्रागपुरा, महेश गुर्जर, रामसिंह, संतोष, महेश, मदनलाल सैनी (ऋस्स) प्रागपुरा, रामसिंह सैनी सैनी समाज अध्यक्ष, सीताराम, डॉ. अशोक बाज्या पावटा, ओमप्रकाश स्वामी, नीरज सैन, रुबी यादव, सुभाष यादव, रमेश सैनी, प्रागपुरा सीए कृष्ण सैनी, भीमसिंह, योगेश शर्मा, विकास यादव, पंकज, महेश, रामजीलाल, सोहनलाल, मोदी, उमेश टांक, संतोष शर्मा सहित कार्यकर्ताओ ने व्यवस्था संभाली।

तलाई में कब्जे का प्रयास

आमेर/कूकस, (निसं.)। पंचायत में सूरसागर तलाई में माफिया द्वारा कब्जा करने की खबर ने प्रशासन की निष्क्रियता और संवेदनहीनता को एक बार फिर से उजागर किया है। यह घटना न केवल स्थानीय लोगों के लिए चिंता का कारण बनी हुई है, बल्कि प्रशासन की गंभीरता पर भी सवाल खड़ा करती है। इस पूरे प्रकरण में जो सबसे महत्वपूर्ण और चिंता जनक पहलू है, वह यह है कि प्रकाशित खबर के बावजूद प्रशासन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। इसके साथ ही, माफिया द्वारा तलाई में टीन सेट लगाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई, जो यह दर्शाता है कि प्रशासन या तो इस मुद्दे को हल्के में ले रहा है या फिर किसी दबाव में कार्य नहीं कर रहा है। सूरसागर तलाई एक सार्वजनिक संपत्ति है, जो क्षेत्रीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण है। यह न केवल पानी का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है, बल्कि पर्यावरण और गांववासियों के लिए भी अनिवार्य है। ऐसे में अगर इस तलाई पर माफिया द्वारा कब्जा किया जाता है और वहां निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाता है, तो यह न केवल जल स्त्रोत की हानि करेगा, बल्कि आसपास के पर्यावरणीय संतुलन को भी प्रभावित करेगा। माफिया का इस तरह का अतिक्रमण बिना प्रशासन की शह के संभव नहीं हो सकता। अक्सर ऐसा देखा गया है कि जब किसी स्थान पर माफिया द्वारा अवैध कब्जे या निर्माण कार्य शुरू किया जाता है।

जिला महिला सम्मेलन की तैयारियों को लेकर हुई बैठक

निवाई में राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के जिला महिला सम्मेलन की तेयारियों को लेकर आयोजित बैठक में पदाधिकारियों ने चर्चा की ।

निवाई। राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय में जिला महिला सम्मेलन की तैयारियों को लेकर अध्यक्ष सुवालाल मीणा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित हुई। जिला प्रभारी क्षेत्रीय संगठन मंत्री देवराजसिंह राजावत, जिला कोषाध्यक्ष विमलकुमार विजय ने बताया कि 17 नवम्बर को जिला स्तरीय पर शिक्षक

- **17 नवम्बर को जिला स्तरीय पर शिक्षक संघ राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन होगा**

संघ राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि बैठक में सम्मेलन में अधिकाधिक महिला सदस्यों को भाग लेने का आ ान किया। इस अवसर पर मंत्री राम नरेश विजय, सभाध्यक्ष मनोज जैन, विनोद जैन, रामअवतार बैरवा व दीपेंद्रसिंह राजावत सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

जनजातीय गौरव दिवस मनाया

खैरथल। खैरथल तिजारा जिले की ठााम पंचायत बघिन के गांव क्यारा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जनजातीय गौरव दिवस जिला स्तरीय समारोह एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत जिला कलेक्टर ने दीप प्रज्वलित कर की।

जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने बताया कि जिला स्तरीय कार्यक्रम में पहुंचे ठााामीणों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल सम्बोधित किया और कहा भगवान बिरसा मुण्डा की 150 वीं जयंती के शुभ अवसर पर धरती आबा जनजातीय ठााम उत्कर्ष अभियान का शुभारम्भ किया गया है।

प्रधानमंत्री ने बताया इससे 26 राज्यों, 4 केन्द्र शासित प्रदेशों के 63 हजार 846 गांवों में निवासित 5.38 करोड़ जनजातीय लोगों के लिए आगामी वर्षों में 59 हजार 156 करोड रूपए का परिव्यय किया जाएगा। इसके तहत सम्पूर्ण भारत वर्ष में एक साल तक निरंतर जन जातीय उत्कर्ष एवं समृद्धि हेतु निरंतर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि आदिवासी कल्याण भारत सरकार की प्राथमिकता है। उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका एवं समठा जनजातीय विकास के लिए केन्द्र सरकार आधारभूत संरचना तैयार करने का कार्य कर रही है। उन्होंने बिहार के जमुई से वर्चुअल कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

संक्षिप्त

णमोकार महामंत्र के जाप का आयोजन

टोंक। आदिनाथ शुभकामना परिवार शाखा पुरानी टोंक की ओर से शुक्रवार को आदिनाथ चालीसा पाठ एवं भक्तामर पाठ का आयोजन किया गया। संयोजक मधु लुहाड़िया ने बताया कि शुभकामना परिवार की ओर से शुक्रवार को पूर्णिमा के शुभ अवसर पर ष्महेन्द्र-कुँजष में श्री भक्तामर पाठ एवं णमोकार महामंत्र के जाप का आयोजन रखा गया, कार्यक्रम में सर्वप्रथम आदिनाथ भगवान के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया एवम मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया तत्पश्चात भक्तामर के 48 ऋद्धि मंत्रों द्वारा उच्चारण करते हुए 48 दीप प्रज्वलित किए गए भक्ति भाव के साथ आदिनाथ चालीसा का पठन करते हुए भक्ति नृत्य प्रस्तुत किए स्वस्ति भूषण माता जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर विनतीया प्रस्तुत की गई दीपक जला कर भगवान की आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ इस अवसर पर कम्मोरानी संतोष विमला संजू सारिका प्रतिभा बीना एकता सुमन पिंकी मधु प्रेमलता चमेली मंजू अनीता आदि मौजूद थी आयोजक संतोष चौधरी ने सभी को अल्पाहार कराया एवं धन्यवाद दिया।

फव्वारा सेट के नोज़ल चोरी हुए

मनोहरपुर। खोरा लाडखानी पंचायत के वॉर्ड न: 4,5 उपला बाड के खेतों में लगे फव्वारा सेट के नोज़ल चोरी हुए¨। मौके पर पहुंची थाना पुलिस के मुलचंद, कानि.संदीप कानि. सुनील ,फूलचंद सहित कई लोग मौके पर मौजूद। खोरा धवाली रोड के उपला बाढ़ निवासी तेजपाल जाट ने बताया की बीती रात खेतों में लगे फवारा सेट के पीतल के लगभग 230 नोज़ल अज्ञात लोग चोरी कर ले गए। चोरी कि घटना को लेकर थाना पुलिस को सूचना देकर मौके पर बुलाया गया है। इस से पहले भी कई बार आस्था का केन्द्र वीर तेजाजी मन्दिर, ज्वाला माता मन्दिर, खोरा गणेश मंदिर में भी चोरियां हो चुकी है। कई बाइक चोरी भी हो चुकी है। जिस को लेकर भी कई बार थाना पुलिस अवगत कराया गया है। जिस की कई पृथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि आज तक किसी भी चोरी का खुलासा नहीं हुआ है। जिस को लेकर आए दिन निजी मकानों और मन्दिरों में हो रही चोरियों के ओर रात्रि गस्त नहीं होने को लेकर स्थानीय लोगों में प्रशासन के इस लचर रवैए के प्रति काफ़ी नाराज़गी , ओर रोष व्याप्त है। स्थानीय लोगों की माने तो खोरा में आए दिन हो रही चोरियों से नाराज़ स्थानीय लोगों के द्वारा आगे की रणनीति तैयार कि जायेगी।

अवैध देशी शराब जब्त

मनोहरपुर। आनन्द शर्मा (आईपीएस) जिला पुलिस अधीक्षक जयपुर ग्रामीण ने जानकारी देते हुए बताया है कि पुलिस महानिरीक्षक जयपुर रेंज जयपुर राजस्थान के निर्देशन में वांछित अपराधियों की धरपकड़ व अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु निर्देश प्राप्त हुए थे जिसकी पालना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) रजनीश पूनियां , मुकेश चौधरी वृत्ताधिकारी शाहपुरा के निकटतम सुपरविजन में तथा राजेन्द्र कुमार पु.नि. थानाधिकारी मनोहरपुर के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित कर टीम द्वारा अवैध देशी शराब परिवहन करने के मामले में सुरज्ञान सिंह गुर्जर को गिरफ्तार किया गया है तथा अवैध देशी शराब के 96 पव्वे व शराब परिवहन में प्रयुक्त वाहन एक इलेक्ट्रिक स्कूटी को जब्त किया।

पांच बहिनों के इकलौते भाई की खेती कार्य करते समय हुई मौत

मालपुरा, (निस) डिग्गी थाना क्षेत्र के चांदसेन गांव निवासी पांच बहिनों के ईकलोते भाई व बूढी मां का एक मात्र सहारा बचे युवक की कृषि कार्य के दौरान हृदयगति रूक जाने से हुई मौत। मामले के अनुसार डिग्गी थानाधिकारी ने बताया कि चांदसेन गांव से जरिये दूरभाष के सूचना मिलने पर तत्काल पुलिस मौके पर पहुंची व अचेतावस्था में घासीलाल पुत्र जगदीश माली को मालपुरा अस्पताल मे भर्ती करवाया गया। जहां से स्वास्थ्य परीक्षण के बाद चिकित्सको ने युवक घासी माली को मृत घौषित कर परिजनो की मौजूदगी मे पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनो को सौंपा गया। थानाधिकारी ओमप्रकाश चौधरी ने बताया कि परिजनो द्वारा दी रिपोर्ट व जानकारी मे बताया कि पांच बहिनो का ईकलोता भाई व अपनी बूढी मां का एक मात्र सहारा घासी माली शुक्रवार की सवेरे खेत पर कृषि कार्य कर रहा था। अचानक हृदयघात से अचेत होकर गिर पडा। मौजूद परिजनो व अन्य ग्रामीणो ने उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया लेकिन तब तक उसकी सांसे रूक चुकी थी। युवक की मौत से परिवार व गांव में कोहराम मच गया। वही टोडारायसिंह क्षैत्र के पन्द्राहेडा गांव मे खेत पर सरसो की पिलाई के लिये मोटर चलाने के दौरान हाई पावर विधुत करंट की चपेट मे आने से युवक अजय पुत्र प्रेमचन्द बैरवा गंभीर रूप से झुलस गया। जिसे तत्काल एम्बूलेंस के जरिये मालपुरा अस्पताल मे उपचार के लिये भर्ति करवाया गया।

- चांदसेन गांव से जरिये दूरभाष के सूचना मिलने पर तत्काल पुलिस मौके पर पहुंची

युवक की कृषि कार्य के दौरान हृदयगति रूक जाने के बाद अस्पताल लाए जहां ग्रामीण व परिजन एकत्रित हो गये।

कलशा रोहण महोत्सव आज से

सिरस। श्री चंद्र प्रभु दिगंबर जैन मंदिर सिरस में आचार्य इंद्र नंदी महाराज व बालाचार्य निपूर्ण नंदी महाराज के सानिध्य में दो दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण महोत्सव 16 नवंबर से शुरू होगा। जैन समाज के प्रतिनिधि व पूर्व सरपंच मोहनलाल जैन ने बताया कि 16 नवंबर को देवाज्ञा, आचार्य निमंत्रण व घट यात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। प्रात: 11 बजे ध्वजारोहण, वेदी शुद्धि, संस्कार, दोपहर 12:15 बजे सकलीकरण, इंद्र प्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा व यागमंडल विधान प्रारंभ होगा। शाम को 6:30 बजे महाआरती के बाद शाम 7 बजे शास्त्र सभा व रात्रि 8 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा। 17 नवंबर को मंगलाष्टक, जिनाभिषेक, नित्यमह पूजन, वास्तु विधान, सरस्वती पूजन, गुरु पूजन, विश्व शांति महायज्ञ, आचार्य के आशीर्वचन एबोलियां आहार चर्या, दोपहर 9:15 बजे हाथी घोड़े व लवाजमे के साथ रथ यात्रा निकाली जाएगी।

कोटपूतली में जनजातीय गौरव दिवस समारोह आयोजित

कोटपूतली। जनजातीय गौरव दिवस का जिला स्तरीय समारोह एवं संवाद कार्यक्रम शुक्रवार को अतिरिक्त जिला कलक्टर ओमप्रकाश सहारण की अध्यक्षता में कोटपूतली पंचायत समिति सभागार में आयोजित हुआ। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जिला स्तरीय समारोह को वर्चुअल सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारम्भ किया गया है। इससे 26 राज्यों, 4 केन्द्र शासित प्रदेशों के 63 हजार 846 गांवों में निवासित 5.38 करोड़ जनजातीय लोगों के लिए आगामी वर्षों में 59 हजार 156 करोड़ रूपए का परिव्यय किया जाएगा। इसके तहत सम्पूर्ण भारत वर्ष में एक साल तक निरंतर जन जातीय उत्कर्ष एवं समृद्धि हेतु निरंतर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि आदिवासी कल्याण भारत सरकार की प्राथमिकता है। उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका एवं समग्र जनजातीय विकास के लिए केन्द्र सरकार आधारभूत संरचना तैयार करने का कार्य कर रही है। उन्होंने बिहार के जमुई से वर्चुअल कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम मिलकर देश के आदिवासियों के विचारों का भारत का विचार बनाएंगे। उनकी संस्कृति को सहेजने, जनजातीय समुदाय के सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार कृत संकल्पित होकर कार्य कर रही है। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर ने राजीविका, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय, कृषि विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग सहित अन्य विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी राम सिंह यादव, संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार महेंद्र जैन, उपनिदेशक हॉर्टिकल्चर सरदारमल यादव, कोटपूतली पंचायत समिति विकास अधिकारी, नीमराना विकास अधिकारी,सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

- विभिन्न विकास परियोजनाओं को मिली स्वीकृति

जनजातीय गौरव दिवस का जिला स्तरीय समारोह अतिरिक्त जिला कलक्टर ओमप्रकाश सहारण की अध्यक्षता में हुआ।

विदेशी महिला पर फायरिंग करने वाले दुबारा रिमाण्ड पर

उदयपुर, (कासं)। सुखेर थाना पुलिस ने थाईलेण्ड निवासी युवती पर फायरिंग करने के मामले में गिरफ्तार चार आरोपियों को पुलिस ने दुबारा 18 नवंबर तक के लिए रिमाण्ड पर लिया। पुलिस ने आरोपियों से वारदात में प्रयुक्त कार बरामद की तथा हथियार की तलाश की जा रही है।

शहर के सुखेर थानाधिकारी हिमांशुसिंह राजावत ने गत दिनों विदेशी महिला पर फायरिंग करने के मामले में गिरफ्तार पुलिस रिमाण्ड पर चल रहे अक्षय खुबचंदानी पुत्र दीपक खुबचंदानी निवासी ई क्लास शिव मंदिर के पीछे प्रतापनगर, राहुल पुत्र महेन्द्रसिंह गुर्जर निवासी मीणा वास स्वरूपगंज सिरोही, ध्रुव पुत्र इन्द्र प्रकाश सुहालका निवासी मीरा नगर भुवाणा हॉल हर्ष नगर, महिम पुत्र नंदकिशोर चौधरी निवासी आदर्श नगर युनिवर्सीटी रोड़ को न्यायालय में पेश किया। जहां से सभी को रिमाण्ड अवधी पूरी होने पर न्यायालय में पेश किया। जहां से सभी को 18 नवंबर तक के लिए पुलिस रिमाण्ड पर भेजा है। पुलिस ने पूछताछ में आरोपियों की निशान देही से वारदात में प्रयुक्त अक्षय खुबचंदानी की कार को हाइवे पर ढाबे के पिछे विरान हालत में पडी होने की जानकारी मिलने पर पुलिस ने मौके से कार बरामद की है। जबकि पिस्टल की तलाश की जा रही है। वारदात के बाद भागते समय जिस स्थान पर पिस्टल फैकने की जानकारी दी है। उस स्थान एव आस पास इलाके में तलाश की लेकिन हथियार नहीं मिला।

उल्लेखनीय है कि 9 नवंबर रात में सुखेर थाना क्षैत्र स्थित होटल रत्नम पैलेस में शराब पीने के दौरान थाईलेण्ड निवासी युवती के साथ शराब पीने के दौरान छेडछाड़ की घटना होने पर युवती ने राहूल को काट खाया तथा नाखूनों से खरोच दिया था। जिससे आवेश में आकर राहूल ने फायर कर उसे घायल कर दिया तथा कार में डाल कर उसे बेदला स्थित पैसिफिक चिकित्सालय में उपचार के लिए छोड कर फरार हो गए थे। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस की टीमों ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर चारों आरोपियों को राहूल गुर्जर, ध्रुव, अक्षय व महिम को अहमदाबाद से गिरफ्तार किया था।

- शराब पीने के दौरान छेडछाड़ की घटना होने पर युवती ने राहूल को काट खाया तथा नाखूनों से खरोच दिया था

जलाशयों में किया दीपदान

निवाई। शहर सहित ठामीण क्षेत्र में कार्तिक पूर्णिमा पर शुक्रवार को कार्तिक मास की अंतिम कथा के आयोजन के साथ ही कार्तिक मास का समापन हुआ। कार्तिक पूर्णिमा को लेकर शहर में स्थित श्री राधा दामोदर मंदिर, रघुनाथ मंदिर, श्री सीताराम मंदिर, श्री चारभुजा मंदिर, श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर, श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, श्याम मंदिर व मुरली मनोहर मंदिर में कार्तिक मास के अन्तिम दिन महिला श्रद्धालुओं की दर्शनों व परिक्रमा लगाने के लिए भीड उमड पडी। इस दौरान सभी मंदिरों में भगवान पुरषोत्तम जी की कथा सुनाई गई।

कार्तिक पूर्णिमा को लेकर देव प्रतिमाओं का विशेष श्रृंगार किया गया। पूर्णिमा के अवसर पर कार्तिक स्नान करने वाली श्रद्धालु महिलाओं ने पवित्र सरोवर में श्रद्धा की डुबकी लगाई। कार्तिक पूर्णिमा पर एक मास से चल रही कथा का समापन हुआ। कार्तिक स्नान करने वाली महिलाओं ने स्नान कर दीपदान कर मंदिरों में दर्शन किए। वहीं तुलसी माता की पूजा अर्चना कर कपड़े पहनाए। महिलाओं ने समूह में कई मंदिरों में भजन कीर्तन किया। भगवान को भोग लगाकर प्रसादी वितरित की गई। महिलाएं स्नान करने के लिए कई नदियों एवं तीर्थ स्थलों पर गई। इसके साथ ही एक माह से चल रहा कार्तिक मास पूर्णिमा को पूजा व्रत संपन्न हुआ।

10 मिनट बाद उखड़ गया पेच वर्क

गोविन्दगढ। उपखंड के आगरा की रोड पर लाखों रुपए की लागत से चल रहा पेचवर्क कार्य तय माप के अनुसार नहीं हो रहा है। जिसको लेकर ग्रामीणों के द्वारा सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता तेज सिंह रतावल को अवगत कराया। ग्रामीणों ने बताया कि आगरा की रोड पर पेंच वर्क कार्य चल रहा है। जिसमें पहले जंगल की कटाई करवानी थी। उसके बाद रोड में बने गड्ढों की ब्लोवर से सफाई करवा कर गड्ढों में रोडी डालकर पहले उसकी कुटाई करनी थी लेकिन ठेकेदार और विभाग के अधिकारियों की सांठ गांठ के चलते ठेकेदार के द्वारा ना तो जंगल कटिंग की गई ना ही सडक में बने गड्ढों की सफाई करवाई। और सीधे ही रोडी डालकर तारकोल डाला जा रहा है जिसके चलते पेंच वर्क होने के महज 10 मिनट बाद ही पैच वर्क उखाड़ रहे हैं।

तारकोल में पानी की मात्रा अधिक :- पीडब्ल्यूडी सड़क निर्माण कार्य से जुड़े जानकारों की माने तो तारकोल में पानी की मात्रा अधिक होने के कारण पेच वर्क ज्यादा समय तक नहीं टिक पा रहा है।

पेच वर्क भी अधूरे :- आगराकी रोड पर कई जगह पेच वर्क अधूरे छोड़ रखे हैं। दर्जनों गड्ढे ऐसे है जिनमें को अधूरा छोड़ा हुआ है।

गोविन्दगढ में नई सड़क का कार्य अच्छी तरह से नही होने से सड़क फिर से उखड़ गई।

सार-समाचार

वन क्षेत्र से भटक कर आए नीलगाय के बच्चे को श्वानों ने किया घायल

सांभर में नीलगाय के बच्चे को पालिका कार्मिकों ने आवारा कुत्तों के चंगुल से छुड़ाकर वन विभाग को सौंपा।

सांभरझील। यहां वन क्षेत्र से भटक कर आए एक नीलगाय के बच्चे को श्वानों ने जगह-जगह से नोच डाला। सांभर स्थित दशहरा मैदान के पास झाड़ियों के पास इस नीलगाय का बच्चे को आवारा कुत्तों ने चारों ओर से घेर लिया और उस पर टूट पड़े व उसे जगह-जगह से नोच डाला। नजदीक मौजूद पालिका के कार्मिक संदीप गोस्वामी ने तत्काल ही सफाई निरीक्षक कयूम को इसकी जानकारी दी तो वह भी तत्काल मौके पर पहुंचे और नीलगाय के बच्चे को श्वानों के चंगुल से छुड़ाया। घायल नीलगाय के बच्चे को खुद की मोटरसाइकिल पर दोनों कार्मिक सांभर पुलिस स्टेशन लेकर गए जहां से वन विभाग की टीम को इतला दी गई। काचरोदा नर्सरी से मौके पर वहां के कर्मचारी पहुंचे और नीलगाय के बच्चे को पुलिस की मौजूदगी में इलाज के लिए उन्हें सोंपा। बता दें कि लगातार घटते वन क्षेत्र की वजह से चारा पानी नहीं मिलने के कारण अक्सर नीलगायों का झुंड आसपास के खेतों में भोजन की तलाश में आते रहते है, लेकिन इन नीलगायों के इस प्रकार आबादी क्षेत्र में अमूमन भटकने से रोकने के लिए फॉरेस्ट डिपार्टमेंट की ओर से आज तक कोई प्रयास नहीं किए गए हैं, जानकारी में तो यह भी आया है कि इन नील गायों से खेती को बचाने के लिए कई जगहों पर उनकी जान को भी जोखिम बना रहता है।

लंगर में पाई प्रसादी

खैरथल। सतगुरु नानक देव जी के 575वें प्रकाश पर्व पर शहर सहित आस पास के गांवों के गुरुद्वारों में शुक्रवार को भोग के बाद शब्द कीर्तन से साधसंगत को निहाल किया गया। श्रद्धालुओं ने गुरु ठांथ साहिब के सम्मुख शीश नवा मन्नत मांगी। गुरुद्वारों में आयोजित गुरू के लंगर में श्रद्धालुओं ने परिवार सहित पहुंच कर प्रसादी ग्रहण की। शहर के गुरु कलघीधर गुरुद्वारा में 13 अक्टूबर से गुरु ठांथ साहिब के अखंड पाठ का भोग पाया गया। पिछले कई दिनों से अलग-अलग गुरद्वारों में से प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें सभी समाजों के लोग शामिल रहे । वार्ड नं 22 के पार्षद प्रतिनिधि एडवोकेट महेंद्रपाल सिंह टिंकू ने बताया कि गुरु कलघीधर गुरुद्वारा में ज्ञानी गुरमीत सिंह द्वारा गुरु की महिमा पर शब्द कीर्तन किया। गुरु के लंगर में सिख समाज के युवाओं ने सेवाओं में भागीदारी निभाई। सेवादारों सरदार प्रीतम सिंह, महेंद्र सिंह, दौलत सिंह, अरविन्द सिंह , बलबीर सिंह, महेंद्र सिंह, महेंद्र पाल सिंह, हरविंद्र सिंह, गुरदेव सिंह, गुरमेल सिंह, हरपाल सिंह, बहादुर सिंह, गुरचरण सिंह, अंठोज सिंह, कंवलजीत सिंह, निर्मल सिंह सिंह आदि ने व्यवस्थाओं की कमान संभाली। गुरुद्वारा बाबा मखन शाह लबाना गुरु पर्व सुबह 5 बजे से गुरु जी का पाठ श्री जपजी साहिब सुखमणि साहिब आनंद साहिब जी का पाठ किया गया जिसमें मुख्य ठांथी भाई शीतल सिंह ने कीर्तन किया डॉक्टर बी एस खालसा ने कीर्तन किया व अलवर से आए रागी जत्था द्वारा कीर्तन किया उसके बाद शरबत के भले के लिए अरदास की गई। सिख समाज के प्रधान डॉक्टर बी एस खालसा ने बताया जिसमें सेवा निभाई भाई महेंद्र सिंह रणजीत सिंह जगदीश सिंह डॉक्टर जहांगीर सिंह डॉक्टर जोगिंदर सिंह सुरजीत सिंह बंटी सिंह सतपाल सिंह रतन सिंह होशियार सिंह द्वारा व्यवस्थाओं में सहयोग किया गया।

'बच्चों में ब्लड कैंसर का इलाज संभव'

अलवर। भारत के सर्वोच्च सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में से एक मेदांता द मेडिसिटी ने बच्चों में ब्लड कैंसर और उसके इलाज की आधुनिक विधि के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अलवर में एक मेडिकल सत्र का आयोजन किया गया। मेदांता के डॉक्टर एसपी यादव ने कहा- बच्चों में 20 दिन तक लगातार बुखार रहे। रोजाना सुबह उल्टियां रहें तो जांच करानी चाहिए। खून में कैंसर होने का पूरी तरह इलाज हो सकता है। डॉ. एस पी यादव, डायरेक्टर, पीडियाट्रिक हेमेटो-ऑन्कोलॉजी एवं बोन मैरो ट्रांसप्लांट, मेदांता, गुरुग्राम ने बोन मैरो ट्रांसप्लांट (बीएमटी) और सीएआर-टी सेल थैरेपी के बारे में बताते हुए कहा कि बच्चों में खून के कैंसर और खून के विकारों की स्थिति में जीवन रक्षक इलाज प्रदान कर सकती हैं। अत्याधुनिक थैरेपी के महत्व पर जोर दिया गया। डॉ. ने बताया- खून का कैंसर या हेगेटोलॉजिक कैंसर से खून, बोन गैरो, या लिम्फेटिक सिस्टम पर असर होता है। इस स्थिति में डीएनए म्यूटेशन के कारण खून की असामान्य कोशिका अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती है, जिससे संक्रमण से लडने और ठीक होने की शरीर की क्षमता कम हो जाती है। बच्चों में कैंसर के सबसे जटिल मामलों, जैसे ल्यूकेमिया और लिम्फोमा, के इलाज में कारगर सिद्ध हुई है। इस थैरेपी में शरीर के अपने टी सेल्स का उपयोग किया जाता है। जो एक तरह की प्रतिरक्षा कोशिका होती है। कैंसर की कोशिकाओं पर केंद्रित होकर उन्हें नष्ट कर देती है। उन्होंने जागरुकता बढ़ाने, मिथकों को दूर करने और बोन मैरो ट्रांसप्लांट एवं सीएआर-टी सेल थेरेपी के लिए सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण करने के लिए डॉक्टरों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, नीति निर्माताओं और जनता ने मिलकर प्रयास करने की जरूरत पर बल दिया।

व्यापारियों को जीएसटी के प्रति सजग करना विभाग का उद्देश्य : सहायक आयुक्त

मनोहरपुर। सनराइज गार्डन में गुरुवार को शाम 4 बजे से सीजीएसटी विभाग जयपुर की सहायक आयुक्त रेनू दहिया के मुख्य आतिथ्य में केंद्रीय जीएसटी संभाग ई की एक दिवसीय ट्रेड कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें होटल एसोसिएशन के पदाधिकारी व सीए एसोसियेशन के सदस्य मौजूद रहे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीजीसटी अधीक्षक शेखर शर्मा, विकास शर्मा,बीएल मीणा, गुमान सिंघल और होटल फेडरेशन आफ राजस्थान के अध्यक्ष हुसैन खान थे। इस दौरान जीएसटी के अधिकारियों और होटल व्यवसाय से जुड़े व्यापारियों के बीच जीएसटी के संबंध में उत्पन्न हो रही कठिनाइयों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

ट्रेड मीटिंग में सहायक आयुक्त रेनू दहिया ने बायोमेट्रिक बेस्ड आधार ऑथेंटिकेशन व डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन सिस्टम के बारे में विस्तार से जानकारी दी और होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों को जीएसटी टैक्स के प्रति जागरूक रहने को कहा। उन्होंने होटल इंडस्ट्रीज से संबंधित समस्याओं जैसे कैपिटल गुड्स पर ली जाने वाली क्रेडिट और 5 प्रतिशत पर रेस्टोरेंट सर्विस पर आईटीसी के संदर्भ में तथा शादी समारोह पर रेंटेनेड होटल पर आउटपुट टैक्स लायबिलिटीज के संदर्भ में बताया। जीएसटी विशेषज्ञ एडवोकेट रंजन मेहता ने इनवॉइस मैनेजमेंट सिस्टम को विस्तार से बताते हुए इसे अच्छे से समझने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इनवॉइस सिस्टम में रिजेक्शन के ऑप्शन को सोच समझ कर ही उपयोग में लेने को कहा। उन्होंने कहा कि एक बार रिजेक्शन के बटन को दबाने पर दोबारा डाटा नहीं आ सकेगा। उपस्थित होटल व्यवसायों ने होटल इंडस्ट्रीज को वर्तमान में ओयो द्वारा गलत बिलिंग के कारण मिले नोटिस के बारे में अवगत करवाया गया। होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों ने बताया ओयो के कर्मचारी अनावश्यक बुकिंग दिखाकर टैक्स की लायबिलिटी पैदा कर रहे हैं। जबकि इनके पास वास्तविक डाटा का अभाव है। जिस पर सहायक आयुक्त रेनू दहिया द्वारा आश्वाशन दिया गया कि यदि होटल इंडस्ट्रीज इन नोटिस के जवाब में अपने संपूर्ण दस्तावेज जैसे ऑडिटेड बैलेंस शीट्स ओयो द्वारा किए गए व्यापार के लेजर अकाउंट्स आदि के साथ वो विभाग को अपना जवाब पेश करें तो उनका निपटारा बहुत सकारात्मक रूप से किया जा सकता है। दूसरी तरफ फेसबुक के साथ हुए बिजनेस के कारण जो उन्हें नोटिस मिले है उनके विषय में भी लंबी चर्चा हुई।

मंच संचालक अधीक्षक शेखर शर्मा ने भी होटल व्यवसाय में लगने वाले जीएसटी टैक्स के बारे में जानकारी दी और होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों को अपनी जिम्मेदारी से टैक्स का भुगतान करने को कहा। सीए रतन कुमार अठावाल ने वर्तमान में जीएसटी से संबंधित होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के बारे में अधिकारियों के समक्ष मांग रखी। इससे पूर्व सीए एसोसियेशन शाहपुरा की ओर से अध्यक्ष रतन कुमार अठावाल ने आगंतुक अतिथियों का माल्यार्पण कर साफा पहनाकर उनका सम्मान किया।

घर में धुसकर जानलेवा हमला करने के चार आरोपी गिरफ्तार

सांभरझील। घर में घुसकर जानलेवा हमला करने के मामले में मौजमाबाद पुलिस ने वांछित चार आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता पाई। गिरफ्तार किए गए आरोपी कैलाश चन्द पुत्र श्री मगनाराम जाति कुमावत उम्र 46 साल निवासी बाडीवालों की ढाणी गोपालपुरा थाना मौजमाबाद जिला दूदू केशव चन्द पुत्र श्री मगनाराम उम्र 44 साल निवासी बडीवालों की ढाणी गोपालपुरा थाना मौजमाबाद जिला दूदू राहुल कुमावत पुत्र श्री केशव चन्द कुमावत उम्र 22 साल निवासी बडीवालों की ढाणी गोपालपुरा थाना मौजमाबाद जिला दूदू विकास कुमावत पुत्र श्री कैलाशचन्द कुमावत उम्र 26 साल निवासी बडीवालों की ढाणी गोपालपुरा थाना मौजमाबाद जिला दूदू के रहने वाले हैं।

आनन्द शर्मा, जिला पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ठामीण दूदू ने जानकारी देते हुए बताया है कि दिनांक 13 नवंबर को परिवादी नेमीचन्द पुत्र मगनलाल कुमावत निवासी गोपालपुरा /उगरियावास थाना मौजमाबाद ने रिपोर्ट दर्ज करायी कि दिनांक 12. तारीख की रात को मेरे घर पर पूरण, लक्ष्मण, बीलादेवी, अर्जना, लक्ष्मीनारायण, कैलाश, विकास, राजूदेवी केशव, राहूल, अंकित, मंजूदेवी निवासी गोपालपुरा उगरियावास व कैलाशजी के जवाई व उनके साथ 8 से 10 अन्य लोग तीन-चार गाडियों से भर भरकर आये और सोते हुए के लाठी सरियो से मारपीट की जिसमें मेरे तथा मेरे भाई हुकमीचन्द व मेरे बच्चे रामफुल के चोटें आई हैं। रामफूल की एक चांदी की चैन तोड ली, भगवानसहाय के चोटें आई हैं। मोहन की चाकू से अंगुली काट दी।

मोहन की पत्नी मोहन को बचाने के लिए गई तो रेणू के उपर गाडी चढाने लग गये जिसमे रेणू गाडी की टक्कर से साईड मे गिर गई। ये लोग हमे जान से मारने के इरादे से आये थे इस घटना के बाद हमने 100 नम्बर पर कॉल किया तो पुलिस वहाँ पर आई और पुलिस ने हम लोगो बोराज सीएचसी पर पंहुचाया और बोराज से गम्भीर अवस्था में जयपुर एसएमएस रैफर किया गया। उनकी एक मोटरसाईकिल हमारे घर पर खडी है व इनका एक मोबाईल हमारे घर पर गिर गया है जो हमारे पास है ओर सरिये गिर गये, सरिया भी वहीं मौजूद है। आदि रिपार्ट पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया तथा सभी आरोपियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित की गई।

- सोते हुए के लाठी सरियो से मारपीट की

घर में घुसकर मारपीट करने के 4 आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

बचपन से मेरा एक ही सपना था कि मैं न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व करूं। ब्लैक कैप्स के लिए 18 साल तक खेलना मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान और सौभाग्य रहा है।

- टिम साउदी

न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज, अपने संन्यास को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

सानिया मिर्जा

भारत की तरफ से ग्रैंड स्लैम जीतने वाली पहली महिला सानिया मिर्जा ने 15 नवंबर को अपना 38वां जन्मदिन मनाया। सानिया मिर्जा भारत की सबसे बेहतरीन टेनिस खिलाड़ी हैं। सानिया ने भारत को कई मेडल्स और ट्रॉफी दिलाई हैं। हालांकि सानिया मिर्जा अपने प्रोफेशनल लाइफ के साथ-साथ अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी चर्चा में रहती हैं। उनकी निजी जिंदगी काफी विवादों भरी रही है। जिसके कारण उनको तमाम आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा।

क्या आप जानते हैं ?... एक टेस्ट मैच में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड इंग्लैंड के खिलाड़ी ग्राहम गूच के नामहै। गूच ने 1990 में भारत के खिलाफ 333 और 123 रन बनाये।

जयपुर में तीसरे दिन अर्जुन प्रसाद 66 के स्कोर के साथ शीर्ष पर, राशिद खान दूसरे नंबर पर

जयपुर, 15 नवंबर। अपने पहले खिताब की तलाश में लगे दिल्ली के पेशेवर अर्जुन प्रसाद ने जयपुर के रामबाग गोल्फ क्लब में खेले जा रहे 1 करोड़ रुपये के राजस्थान टूरिज्म प्रेजेंट्स जयपुर ओपन 2024 के तीसरे राउंड में चार अंडर 66 का स्कोर बनाकर लगातार तीसरे दिन बढ़त बनाए रखी। 25 वर्षीय अर्जुन (62-64-66), जो तीन शॉट से आगे चल रहे थे, ने शुक्रवार को 18 अंडर 192 का स्कोर बनाया और एक शॉट की मामूली बढ़त के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। दिल्ली के दो बार के अंतरराष्ट्रीय विजेता राशिद खान (64-68-61), जो रात में 12वें स्थान पर थे और लीड से छह शॉट पीछे थे, ने शानदार नौ-अंडर 61 का स्कोर बनाया, जो इस सप्ताह का सबसे कम स्कोर था, और 17-अंडर 193 के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गए।दिल्ली के दो अन्य गोल्फर सचिन बैसोया (64) और क्षितिज नवीद कौल (65) 16-अंडर 194 के साथ तीसरे स्थान पर रहे।जयपुर के प्रखर असावा (70), कट बनाने वाले एकमात्र स्थानीय गोल्फर, ने पेनअल्टम राउंड को तीन-अंडर 207 के साथ 38वें स्थान पर समाप्त किया।

सब जूनियर राज्य स्तरीय वुशू प्रतियोगिता का शुभारम्भ

जयपुर, 15 नवंबर। राजस्थान वुशू संघ व श्रीगंगानगर वुशू संघ के तत्वावधान में दिनांक 15 से 17 नवम्बर 2024 तक पंचायती धर्मशाला, श्रीगंगानगर में चल रही 18वी राजस्थान सबजूनियर राज्य स्तरीय (बालक/बालिका) वुशू प्रतियोगिता का आज शुभारम्भ हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि हीरानन्द कटारिया, उपाध्यक्ष, भारतीय वुशू संघ व अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुरेन्द्र पाल सिंह समाज सेवक ने की तथा समारोह के विशिष्ट अतिथि विजय सिंह शेखावत, भूरामल स्वामी, नवदीप सिंह, हर्मेन्द्र सिंह जाखड़ उपस्थित रहे। मंजीत कुमार सचिव श्रीगंगानगर वुशू संघ ने समारोह के सभी अतिथियोंगणों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि हीरानन्द कटारिया ने खिलाडियों को वुशू खेल से जीवन में ऊँचाइयों को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर बताया। नितिन अग्रवाल अध्यक्ष, श्रीगंगानगर वुशू संघ ने बताया की प्रतियोगिता में प्रदेश के 23 जिलो के बालक वर्ग 290 एवं बालिका वर्ग 160 खिलाडी भाग ले रहे है तथा अध्यक्ष ने प्रतियोगिता में आये हुए समस्त खिलाडियों, अधिकारियों, अतिथियों व पत्रकार बन्धुओ को धन्यवाद दिया।

8वीं जूनियर नेशनल ड्यूबॉल प्रतियोगिता 29 नवम्बर से

जयपुर, 15 नवंबर। 8वीं जूनियर नेशनल ड्यूबॉल प्रतियोगिता 29 नव. से 1 दिस.24 तक चौगान स्टेडियम में आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिये आज गृह राज्य जवाहर सिंह बेढम द्वारा ड्यूबॉल पोस्टर का विमोचन किया एवं 29 नवम्बर को उदघाट्न समारोह में आने का न्योता भी स्वीकार किया। इस अवसर राज्य ड्यूबॉल संघ के अध्यक्ष सुरेश उपाध्याय, सचिव मिर्जा मंजूर बेग भवानी शंकर शर्मा, शिव शंकर भारद्वाज व अन्य अधिकारी मौजूद थे।

दो दिवसीय चतुर्थ जयपुर ओपन डे नाइट शूटिंग प्रतियोगिता आज से

जयपुर, 15 नवंबर। ओएसिस शूटिंग रेंज, जगतपुरा, चतुर्थ जयपुर ओपन डे-नाईट शूटिंग प्रतियोगिता-2024 का दो दिवसीय आयोजन दिनांक 16 व 17 नवंबर को किया जा रहा है। पिछले तीन वर्षों से इस प्रतियोगिता को राजस्थान राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजन किया जाता रहा है जिसमे अनेक राज्यों के खिलाड़ियों द्वारा इस प्रतियोगिता में भाग ले कर उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त होता है। इस आयोजन के संचालन का मुख्य कारण खिलाड़ियों में जो प्रतिभाएं छुपी होती हैं, उसको निखरने का अवसर प्रदान करना होता है। राजस्थान राइफल एसोसिएशन द्वारा प्रतिवर्ष इस तरह की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता रहेगा जिससे प्रतिवर्ष बेहतरीन शूटर्स आगे बढ़ कर राष्ट्रीय और अंतरास्ट्रीय मंच पर अपनी योग्यता को साबित करेंगे। आगामी वर्षों में राष्ट्रीय राइफल एसोसिएशन द्वारा भी शूटिंग लीग आयोजित किये जायेंगे जिससे डे-नाईट फॉर्मेट के शूटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया जावेगा।

अधिवक्ताओं के लिये क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

जयपुर, 15 नवंबर। राजस्थान हाई कोर्ट लॉ फर्म एक्टस लेजिट ने राज्य के अधिवक्ताओं के लिए रायन इंटरनेशनल स्कूल के ग्राउंड पर क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। टूर्नामेंट

का प्रारंभ न्यायाधीश अनिल उपमन ने फ़ीता काट कर किया तथा कहा कि इस तरह का टूर्नामेंट अपने आप मैं एक अनूठी पहल हैं । राजस्थान हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता आर बी माथुर ने ड्रा निकाल कर सभी टीमों की खेल की सूची निश्चित की। टूर्नामेंट आयोजन कमेटी के संयोजक व वरिष्ठ अधिवक्ता अंशुमन सक्सेना ने बताया कि इस टूर्नामेंट मैं कुल 24 अधिवक्ताओं की टीमों ने भाग लिया । आयोजन कमिटी के अधिवक्ता अतुल सक्सेना, अधिवक्ता अनुराधा व अधिवक्ता विनय कांत सक्सेना ने सभी टीमों का व आगंतुक वरिष्ठ अधिवक्ताओं का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

// भारत और दक्षिण अफ्रीका टी-20 //

तिलक और सैमसन का शतक

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हाईएस्ट स्कोर

जोहान्सबर्ग, 15 नवंबर। तिलक वर्मा और संजू सैमसन की सेंचुरी के दम पर भारत ने चौथे टी-20 में 283 रन बना दिए। यह साउथ अफ्रीका के खिलाफ टी-20 में किसी भी टीम का सबसे बड़ा स्कोर है। तिलक ने 120 और सैमसन ने 109 रन बनाए। साउथ अफ्रीका से इकलौता विकेट लुथो सिपामला ने लिया।

साउथ अफ्रीका से रायन रिकेलटन और ऐडन मार्करम क्रीज पर हैं। टीम ने 1 ओवर में 1 विकेट खोकर 1 रन बना लिया है। रीजा हेंड्रिक्स पहले ही ओवर में आउट हो गए, उन्हें अर्शदीप सिंह ने बोल्ड किया। हेंड्रिक्स खाता भी नहीं खोल सके। तिलक ने लगातार दूसरे टी-20 में शतक लगाया, वहीं सैमसन एक साल में 3 टी-20 शतक लगाने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बने। भारत से पहली बार टी-20 इंटरनेशनल की एक पारी में 2 प्लेयर्स ने शतक लगाए हैं। टी-20 फॉर्मेट में यह तीसरी बार हुआ। भारत ने 20 ओवर में 283 रन बनाए। यह साउथ अफ्रीका के खिलाफ सबसे बड़ा टी-20 स्कोर है। इससे पहले वेस्टइंडीज ने 2023 में 3 विकेट खोकर 258 रन बनाए थे। हालांकि, तब साउथ अफ्रीका ने 19 ओवर में ही टारगेट चेज कर लिया था।

टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी टीम इंडिया से संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा ने ओपनिंग की। अभिषेक को ओवर की चौथी ही गेंद पर जीवनदान मिल गया। मार्को यानसन की बॉल पर रीजा हेंड्रिक्स ने स्लिप में उनका कैच छोड़ा। अभिषेक इस वक्त खाता भी नहीं खोल सके थे। टीम इंडिया ने 5वें ओवर में ही अपनी फिफ्टी पूरी कर ली। अभिषेक शर्मा ने एंडिले सिमेलाने के खिलाफ ओवर की पहली बॉल पर सिक्स लगाया। इसी के साथ टीम का स्कोर 50 रन के पार पहुंच गया। अभिषेक ने इस ओवर में 3 छक्के और 1 चौका लगाकर 24 रन बनाए। अभिषेक शर्मा पावरप्ले के आखिरी ओवर में कॉट बिहाइंड हो गए, उन्हें लुथो सिपामला ने पवेलियन भेजा। अभिषेक ने 18 गेंद पर 36 रन बनाए, उन्होंने अपनी पारी में 2 चौके और 4 छक्के लगाए।

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में चैम्पियंस ट्रॉफी रैली नहीं होगी : आईसीसी

इस्लामाबाद, 15 नवंबर। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की आपत्ति के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को चैंपियंस ट्रॉफी रैली पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में कराने से रोक दिया है।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखकर घोषणा की थी कि चैंपियंस ट्रॉफी की रैली 16 से 24 नवंबर तक पूरे पाकिस्तान सहित स्कार्दू, मरी, हुंजा और मुजफ्फराबाद जैसे स्थान से हो कर गुजरेंगी।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की आपत्ति के बाद आईसीसी ने पाकिस्तान के कब्जे वाले (पीओके) के अंतर्गत आने वाले स्कर्दू, मुरी और मुजफ्फराबाद में 2025 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी की रैली को रद्द कर दिया है। आईसीसी का कहना है कि चैंपियंस ट्रॉफी किसी भी विवादित स्थान पर नहीं जाएगी।

इससे पहले भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने सुरक्षा संबंधी कारणों हवाला देते हुए चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए भारतीय टीम के पाकिस्तान दौरे से इनकार कर दिया था। इस बारे में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद अवगत करा दिया था।

मैच सिमुलेशन के दौरान के.एल. राहुल के कोहनी में लगी चोट

पर्थ, 15 नवंबर। वाका स्टेडियम में इंट्रा-स्क्वाड मैच सिमुलेशन के दौरान केएल राहुल को उनकी कोहनी में चोट के कारण रिटायरहर्ट होना पड़ा। चोट की गंभीरता का अभी तक कुछ पता नहीं चल पाया है लेकिन यह स्पष्ट है कि किसी बड़ी चोट की आशंका के कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा।

तीन दिन वाका के नेट्स में बिताने के बाद भारत ने श्रृंखला की शुरुआत से एक हफ्ते पहले ऑप्टस स्टेडियम में अपने मुख्य खिलाड़ियों को मैदान पर उतारकर अपनी तैयारियों पर जोर दिया है। इस इंट्रा-स्क्वाड मैच सिमुलेशन में विरोधी टीम के रूप में भारत ए और कुछ अन्य खिलाड़ियों को शामिल किया गया था। मैच में यशस्वी जायसवाल के साथ राहुल ओपनिंग की जो इस बात के संकेत हैं कि अगर रोहित पहला टेस्ट नहीं खेलते हैं तो राहुल और यशस्वी ओपन करेंगे। राहुल अच्छे फॉर्म में है और शॉर्ट बॉल को भी अच्छी तरह से संभाल रहे थे। लेकिन तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा की एक उठती हुई गेंद से उनकी दाहिनी कोहनी पर चोट लगी। चोट के बाद वह दर्द में दिखे और मेडिकल सहायता लेने के बाद मैदान से चले गए।

अंशुल काम्बोज ने रणजी की एक ही पारी में झटके रिकॉर्ड दस विकेट

रोहतक, 15 नवंबर। हरियाणा के युवा गेंदबाज अंशुल काम्बोज ने रणजी ट्रॉफी में इतिहास रचते हुए एक पारी में 10 विकेट लेकर नया रिकार्ड बनाया। अंशुल को यह उपलब्धि केरल के खिलाफ अपनी टीम के पांचवे दौर के मैच में हासिल हुई। इस के साथ ही वह रणजी ट्रॉफी के इतिहास में एक पारी में सभी 10 विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज बन गये हैं। अंशुल ने 30.1 ओवर में 49 रन देकर 10 विकेट झटकते हुए यह रिकार्ड बनाया।

इससे पहले रणजी ट्रॉफी में 1956-57 में प्रेमांगसु चटर्जी और 1985-86 में राजस्थान के प्रदीप सुंदरमिन ने यह कारनामा किया था। इसके अलावा सुबाष गुप्ते (1954-55), अनिल कुम्बले (1998-99) और देबासिस मोहंती (2000-01) ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में इस उपलब्धि को हासिल कर चुके है। पिछले वर्ष अंशुल ने दलीप ट्रॉफी में इंडिया बी और इंडिया सी के बीच मुकाबले की एक ही पारी में 69 रन देकर आठ विकेट लिये थे।

पूर्व गेंदबाज कोच पारस का बयान

ऑस्ट्रेलिया में बुमराह नहीं खेलेंगे पांचों टेस्ट, शमी की कमी खलेगी

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। भारत के पूर्व बॉलिंग कोच पारस का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गई टीम इंडिया को मोहम्मद शमी की कमी खलेगी। बता दें कि, शमी 2023 वर्ल्ड कप के दौरान चोटिल हुए थे और उसके बाद से करीब एक साल से क्रिकेट मैदान से दूर रहे। हाल में उन्होंने रणजी ट्रॉफी के साथ क्रिकेट मैदान पर वापसी की है। लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में उन्हें मौका नहीं मिला है। वहीं पारस ने ये भी कहा है कि उन्हें नहीं लगता है कि जसप्रीत बुमराह ऑस्ट्रेलिया में पांचों टेस्ट मैच खेल पाएंगे। भारतीय क्रिकेट टीम को 22 नवंबर से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज का आगाज करना है। पारस ने कहा कि, क्या आपको लगता है कि शमी के अनुभव को देखते हुए हमारे पास एक बड़े एक्स फैक्टर की कमी है? शमी जैसे खिलाड़ी की कमी हमेशा खलेगी। यही सही बात है। उसके पास उस तरह की स्किल्स हैं जिसे वह टीम में लाता है, अनुभव। जाहिर है, जब समी और बुमराह मिल जाते हैं तो ये जोड़ी खतरनाक हो जाती है। भारत को शमी की काफी कमी खलने वाली है ये तो हर कोई जानता है। लेकिन अगर इसका दूसरा पहलू देखा जाए।

जयपुर व श्रीगंगानगर दोनों वर्गों के क्वार्टरफाइनल में

राज्य सब जूनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता

जयपुर, 15 नवंबर। जालोर में गुरुवार से शुरू हुई चार दिवसीय 29वी राजस्थान राज्य सब जूनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता-2024-25 में दूसरे दिन खेले गये लीग मैचेस में जीत दर्ज करते हुए जयपुर एवं श्रीगंगानगर ने दोनों वर्गों बालक व बालिका वर्ग के क्वार्टर फाइनल में पहुँच गयी। शनिवार को सुबह के सत्र में क्वार्टर फाइनल मैचेस होंगे। जबकि शाम के सत्र में सेमीफाइनल मैचेस खेले जायेंगे।

क्वार्टर फाइनल लाइन अप, बालक वर्ग:-जयपुर बनाम एसटीसी नोजगे, श्रीगंगानगर बनाम

चित्तौड़गढ़, सीकर बनाम माही हैंडबॉल अकैडमी-बांसवाड़ा, महाराणा प्रताप हैंडबॉल अकैडमी-चित्तौड़गढ़ बनाम ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकैडमी-श्रीगंगानगर। बालिका वर्ग:- श्रीगंगानगर बनाम जोधपुर, हनुमानगढ़ बनाम भीलवाड़ा, जयपुर बनाम बाड़मेर, चूरू बनाम झुंझुनू।

शुक्रवार को खेले गये लीग मैचेस के परिणाम:- बालक वर्ग:- चित्तौड़गढ़ ने करौली को 15- 11 से, महाराणा प्रताप चित्तौड़गढ़ हैंडबॉल अकादमी ने भरतपुर को 5-1 से, जयपुर ने सिरोही को 12-5 से, श्री गंगानगर में सवाई माधोपुर को 9-4 से, अजमेर ने डूंगरपुर को 7-2 से, दुलमाना हैंडबॉल अकादमी ने झुंझुनू को 12-11 से, जालौर ने भरतपुर को 5-3 से, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी ने अजमेर को 15-8 से, चूरू ने दुलमाना हैंडबॉल अकादमी को 11-2 से, चित्तौड़गढ़ ने भोम सिंह हैंडबॉल अकादमी को 7-1 से, अलवर में भरतपुर को 14- 6 से, अजमेर ने झालावाड़ को 5-0 से, माही हैंडबॉल अकादमी ने दुलमाना हैंडबॉल अकादमी को 11- 10 से, चित्तौड़गढ़ ने भीलवाड़ा को 15-12 से, जैसलमेर ने भरतपुर को 15-9 से, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी ने झालावाड़ को 11-0 से, भीलवाड़ा ने भोम सिंह हैंडबॉल अकादमी को 17-3 से, जैसलमेर ने अलवर 14-11 से, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी ने डूंगरपुर को 7-0 से, चूरू ने झुंझुनू को 16-15 से, ज्ञान ज्योति हैंडबॉल अकादमी ने सिरोही को 08-01 से, हनुमानगढ़ ने भोम सिंह हैंडबॉल अकादमी को 8-3 से, अलवर ने जालौर को 10-2 से, एसटीसी नोजगे ने जैसलमेर को 22-4 से, डूंगरपुर दे झालावाड़ को 5-0 से, भीलवाड़ा में हनुमानगढ़ को 17-13 से, सीकर ने हनुमानगढ़ को 19-17 से, एसटीसी नोजगे ने जालौर को 13-9 से, सिरोही ने अजमेर को 19-12 से, श्रीगंगानगर में झुंझुनू को 14-3 से हराया।

बालिका वर्ग:- अलवर ने बीकानेर को 12-0 से, बाड़मेर ने सीकर को 7-3 से, भीलवाड़ा में महाराणा प्रताप हैंडबॉल एकेडमी चित्तौड़ को 13-9 से, दुलमाना हैंडबॉल अकादमी ने चित्तौड़गढ़ को 11-9 से, श्रीगंगानगर में बीकानेर को 7-3 से, हनुमानगढ़ ने सीकर को 12-9 से, जयपुर ने महाराणा प्रताप हैंडबॉल एकेडमी चित्तौड़ को 8-3 से, चूरू ने चित्तौड़गढ़ को 8-3 से, भीलवाड़ा में डूंगरपुर को 14-4 से, बाड़मेर ने जालौर को 11-5 से, झुंझुनू ने अलवर को 6-3 से हराया। जोधपुर व दुलमाना हैंडबॉल

इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को तीन विकेट से हराया

ग्रॉस आइसलेट, 15 नवंबर। साकिब महमूद और जेमी ओवर्टन (तीन-तीन विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद सैम करन (41) और लियम लिविंगस्टन (39) की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को तीसरे टी-20 मुकाबले में शुक्रवार को तीन विकेट से जीत दर्ज करते हुए पांच मैचों की सीरीज में 3-0 से अजेय बढ़त बना ली हैं। 146 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत भी अच्छी नहीं रही और उसने 5.3 ओवर में 37 के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये।

राजस्थान के पार्थ यादव का दोहरा शतक व मनय कटारिया की शतकीय पारी

जयपुर, 15 नवम्बर। बीसीसीआई के घरेलू क्रिकेट सत्र 2024-25 की राष्ट्रिय क्रिकेट प्रतियोगिता के जयपुर के सवाई मान सिंह स्टेडियम पर राजस्थान क्रिकेट संघ की मेजबानी में खेले जा रहे हुए राजस्थान-महाराष्ट्र अंडर 19 कूच बिहार ट्रॉफी मैच के तीसरे दिन राजस्थान के सलामी बल्लेबाज पार्थ यादव के दोहरे शतक व मनय कटारिया की शानदार शतकीय पारियों की सहायता से राजस्थान ने पहली पारी में विशाल बढ़त प्राप्त करते हुए मैच में अपनी पकड़ बनाई। राजस्थान के लिए सलामी जोड़ी पार्थ यादव व मनय कटारिया के मध्य हुई पहले विकेट के 321 रनो की साझेदारी कूच बिहार ट्रॉफी में राजस्थान के लिए रिकार्ड साझेदारी है।

इससे पूर्व का पहले विकेट की साझेदारी का रिकार्ड 303 रनो का था जो सुमित गोदारा-हर्षवर्धन ने 2021-22 सत्र में बड़ोदा के विरुद बनाया था।

राजस्थान-उत्तराखंड रणजी मैच

देहरादून में खेले जा रहे राजस्थान-उत्तराखडं रणजी मैच के तीसरे दिन राजस्थान के गेंदबाज अनिकेत चौधरी, अजय सिंह कुकना व दीपक चाहर की शानदार गेंदबाजी की सहायता से मैच में राजस्थान की पकड़ मजबूत।

राजस्थान पहली पारी 660/7 पारी घोषित, राजस्थान के लिए महिपाल लोमरोर नाबाद 300, कार्तिक शर्मा 113, भारत शर्मा 54, अजय सिंह कुकना नाबाद 40, दीपक चाहर 35, राम मोहन चौहान 29, जुबेर अली 26, अभिजीत तोमर 20 व दीपक हुड्डा 10 रनो का योगदान दिया। आज मैच के तीसरे दिन राजस्थान के गेंदबाज अजय सिंह कुकना, अनिकेत चौधरी व दीपक चाहर ने शानदार गेंदबाजी करते हुए मैच में राजस्थान की पकड़ मजबूत की।

78वीं राष्ट्रीय सीनियर फुटबॉल चैम्पियनशिप संतोष ट्रॉफी जयपुर 2024-25 की राजस्थान टीम घोषित

जयपुर, 15 नवंबर। अखिल भारतीय फुटबॉल संघ द्वारा आयोजित होने जा रही 78वीं राष्ट्रीय सीनियर फुटबॉल चैंपियनशिप संतोष ट्रॉफी 2024-25 हेतु राजस्थान फुटबॉल टीम घोषित की। राजस्थान की टीम ग्रुप 1 में है और राजस्थान फुटबॉल संघ ग्रुप 1 के मैच आयोजित करवा रहा है। यह चैंपियनशिप दिनांक 16 नवंबर 2024 से 20 नवंबर 2022 तक जयपुर के रॉयल फुटबॉल क्लब के मैदान पर आयोजित होगी।

राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि ग्रुप 1 के अंतर्गत मेजबान राजस्थान सहित महाराष्ट्र, गुजरात और दादर नगर हवेली एवं दमनदीव - चार टीमों के लीग मैच क्रमश: 16, 18 और 20 नवंबर को खेले जाएंगे। राजस्थान टीम का पहला मैच कल प्रात: 9:00 बजे महाराष्ट्र से होगा। सभी मैचों का सीधा प्रसारण किया जाएगा।

इस अवसर पर टीम किट वितरण समारोह में राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत, राजस्थान फुटबॉल महिला विंग की चेयरपर्सन श्रीमती रोशनी टांक,और प्रचार ग्रुप के डायरेक्टर जितेंद्र सिंह प्रचार, राजस्थान टीम के खिलाड़ियों को किट प्रदान किया और अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

टीम इस प्रकार है - अल्ताफ (कप्तान), गौरव (उप कप्तान), अंकित, इमरान, विशाल, अमनदीप, कृष्णा, लोकेन्द्र, सौरभ छेत्री, नितेश, अमित, अमन, युवराज, मुकेश, सोमवीर, निशांत, यश, रुद्रराज, परवेज, तैय्यब, हर्षित और करण। टीम के प्रशिक्षक कुनाल, सहायक प्रशिक्षक नरेंद्र, टीम मैनेजर सुनील राव और फिजियो गौतम पारीक है।

2022 में 75वीं संतोष ट्रॉफी के फाइनल राउंड में पहुंचकर राजस्थान ने इतिहास रचा था

जयपुर, 15 नवम्बर। संतोष ट्रॉफ़ी की शुरुआत भारतीय फ़ुटबॉल संघ ने साल 1941 में की थी। संतोष ट्रॉफी का नाम संतोष (अब बांग्लादेश में) के पूर्व महाराजा सर मन्मथ नाथ रॉय चौधरी के नाम पर रखा गया है, जो भारतीय फुटबॉल के एक महान खिलाड़ी थे,जिनकी मृत्यु 1939 में 61 वर्ष की आयु में हो गई थी। महाराजा रॉय चौधरी प्रतिष्ठित ईस्ट बंगाल फुटबॉल क्लब के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, उन्होंने कई वर्षों तक आईएफए के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और भारतीय फुटबॉल के प्रारंभिक वर्षों के दौरान इसके सबसे बड़े संरक्षकों में से एक थे।

बहुत कम लोग जानते होंगे कि नागेंद्र प्रसाद सर्वाधाकरी, जिन्हें भारतीय फुटबॉल के पिता के रूप में जाना जाता है, ने अपने सहपाठियों को अपने स्कूल परिसर में यह खेल खेलने के लिए मजबूर किया था। स्कूल में लड़कों के उत्साह से आकर्षित होकर, स्कूल और आस-पास के कॉलेजों के यूरोपीय शिक्षकों ने नागेंद्र प्रसाद और उनके साथियों को कलकत्ता के आसपास के छात्रों के बीच इस खेल को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजस्थान फुटबॉल टीम, जिसे पहले राजपुताना फुटबॉल टीम भी कहा जाता था, एक भारतीय फुटबॉल टीम है जो संतोष ट्रॉफी सहित भारतीय राज्य फुटबॉल प्रतियोगिताओं में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करती है। राजस्थान की फ़ुटबॉल टीम ने अभी तक संतोष ट्रॉफ़ी नहीं जीती है. हालांकि, साल 2022 में 75वीं संतोष ट्रॉफ़ी के फ़ाइनल राउंड में पहुंचकर राजस्थान ने इतिहास रचा था, संतोष ट्रॉफी 2022-23 का फाइनल सऊदी अरब के रियाद में खेला गया, यह पहली बार था जब घरेलू खिताब का फैसला विदेश में हुआ।

जयपुर के लिए यह गर्व की बात है कि दूसरी बार संतोष ट्रॉफी टूर्नामेंट के आयोजन की जिम्मेदारी मिली है। यह पुरुषों के लिए राष्ट्रीय फुटबॉल चैम्पियनशिप है। इससे पहले, भारतीय फुटबॉल परिदृश्य में डूरंड कप, रोवर्स कप और आईएफए शील्ड जैसे टूर्नामेंट होते थे, लेकिन ये सभी क्लबों के लिए थे।

रोवर्स कप (1890 में शुरू हुआ) और डूरंड कप (1888 में शुरू हुआ) जैसी प्रतियोगिताएं जारी रहीं, लेकिन संतोष ट्रॉफी की चमक कम नहीं हुई, क्योंकि इसमें राष्ट्रीय टीम के कोच और खिलाड़ी भाग लेते थे। भारतीय फुटबॉल टीम के पहले कोच बलाई दास चटर्जी ने 1959 से 1969 के बीच बंगाल के साथ छह बार संतोष ट्रॉफी जीती। 1962 के एशियाई खेलों में भारत की स्वर्ण पदक विजेता टीम में लगभग आधे में संतोष ट्रॉफी चैंपियन पीटर थंगराज, चुन्नी गोस्वामी, पीके बनर्जी, डी. एथिराज, तुलसीदास बलराम और प्रद्युत बर्मन शामिल थे।ओ. चंद्रशेखर का नाम भी इस सूची में जुड़ गया जब उन्होंने 1963 में महाराष्ट्र के साथ ट्रॉफी जीती।

क्या राजस्थान फुटबॉल टीम इस बार भी इतिहास रचेगी?

राजस्थान जैसे राज्य में कम से कम 5 से 7 हजार फुटबॉल खिलाड़ियों का रजिस्ट्रेशन होगा लेकिन क्या आज तक 22 खिलाड़ियों की ऐसी फुटबॉल रणजी टीम नही बनी जो रणजी ट्रॉफी का खिताब जीत सके। आज होने वाले मैच से ये साबित होगा कि 2022 की टीम के बाद टीम फाइनल तक पहुँच सकती है या नहीं। राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह का कहना है कि जिन खिलाड़ियों को हम एक कैम्प लगाकर एक महीने भर की प्रैक्टिस कराकर टूर्नामेंट में खेलने भेजते है। वहीं राजस्थान के अलावा ओर राज्यों में साल भर सरकारी सहायता के साथ खिलाड़ियों को एक ही जगह रख कर रोजाना प्रैक्टिस करवाई जाती है। हमारे यहां राजस्थान के अलग अलग शहरों ओर गांवों से लड़के आते है। इनमे से कई कॉलेज में अपनी पढ़ाई करते हैं, वो साल भर के लिए उपलब्ध नही हो सकते। नाही हमें सरकारी सहायता इतनी नही मिलती जितनी ओर राज्यों में फुटबॉल के खिलाड़ियों को मिलती है। हम सरकार से इस विषय मे बातचीत करेंगे जिससे हमारे खिलाड़ियों को भी हर प्रकार की सहायता मिल सके।

संतोष ट्रॉफी जीतने वाली टीमों का रिकॉर्ड

संतोष ट्रॉफी सबसे अधिक बार 76 संस्करणों में, पश्चिम बंगाल 32 जीत और 14 उपविजेता के साथ सबसे सफल टीम है, जो कुल 46 बार फाइनल में पहुंची है। संतोष ट्रॉफी में अगली सर्वश्रेष्ठ टीम पंजाब है, जिसने कुल 16 बार फाइनल में जगह बनाई है और 8 बार खिताब जीता है। केरल और सर्विसेज़ 7-7 खिताबों के साथ अगली सर्वश्रेष्ठ टीमें हैं, जबकि गोवा (5), कर्नाटक (5), महाराष्ट्र (4), रेलवे (3) और आंध्र प्रदेश (3) ने भी कई बार खिताब जीता है। दिल्ली, मणिपुर और मिजोरम ने अब तक एक-एक बार खिताब जीता है। इसके अलावा, 1982-83 के संस्करण में, मैच नियमित समय और अतिरिक्त समय में 0-0 से समाप्त होने के बाद ट्रॉफी पश्चिम बंगाल और गोवा द्वारा साझा की गई थी।

बांसवाड़ा में जनजातीय गौरव दिवस समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पारम्परिक वाद्ययंत्रों तथा उनके संगीत को देखा।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जनजातीय गौरव दिवस बांसवाड़ा में मनाया

उन्होंने कहा बागड़ अंचल के आदिवासी वीरों ने गोविन्द गुरु के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया

■ मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने जनजाति क्षेत्र के लिये सात नवीन आश्रम छात्रावास, एक नवीन खेल अकादमी, तीन नवीन आवासीय विद्यालय और 250 नवीन मां-बाड़ी केन्द्र स्वीकृत किये हैं।

बांसवाड़ा/जयपुर, 15 नवम्बर। शुक्रवार को जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर बांसवाड़ा जिले के गोविन्द गुरू महाविद्यालय मैदान में आयोजित ''नवादि युगधारा प्रणेता समागम'' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि, भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस मना रहे हैं। भगवान बिरसा मुंडा ने अपना जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम, विरासत और संस्कृति को समर्पित कर दिया था। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य सरकार वागड़ क्षेत्र के विकास के लिए कृतसंकल्प है।

मुख्यमंत्री ने कहा, जनजातीय गौरव दिवस देशवासियों के लिए भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण में आदिवासी समुदायों के योगदान को स्मरण करने का अवसर है। राजस्थान के आदिवासी वीर योद्धा महाराणा प्रताप के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़े और अपनी जन्म-भूमि के गौरव के लिए मर-मिटे थे। वागड़ अंचल में गोविंद गुरु के नेतृत्व में आदिवासी वीरों ने अंग्रेजों की गुलामी से लड़ने का काम किया। वागड़ की धरती पर मानगढ़ धाम 1500 से अधिक आदिवासी वीरों के बलिदान का साक्षी है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री की जनकल्याणकारी योजनाओं से देश के करोड़ों आदिवासी परिवारों का जीवन आसान हुआ है। प्रधानमंत्री ने ''पीएम-जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान- जनमन''की शुरूआत की है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान से देशभर में 63 हजार आदिवासी गांवों में 5 करोड़ से अधिक लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार डूंगरपुर में डूंगर बरंडा और बांसवाड़ा में बांसिया चारपोटा जनजातीय नायकों के स्मारकों का निर्माण तथा उदयपुर में वीर बालिका कालीबाई संग्रहालय का निर्माण करेगी। अनुसूचित जनजाति के विकास के लिए टी.एस.पी. फंड की राशि 1 हजार करोड़ से बढ़ाकर एक हजार 500 करोड़ रुपये कर दी है। खेल अकादमियों में छात्र-छात्राओं की मैस भत्ता राशि को बढ़ ाकर 4 हजार रूपये प्रतिमाह किया है। उन्होंने कहा कि हम शाहबाद-बारां में सहरिया जनजाति के लिए तीरंदाजी व एथलैटिक्स खेल अकादमी की स्थापना करेंगे। साथ ही, 7 नवीन आश्रम छात्रावास, 1 नवीन खेल अकादमी, 3 नवीन आवासीय विद्यालय एवं 250 नवीन मां-बाड़ी केन्द्र स्वीकृत किये गए हैं।

शर्मा ने कहा कि वनाधिकार अधिनियम के तहत वन क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासियों व परम्परागत वन निवासियों के कल्याण के लिए गोविन्द गुरू जनजातीय क्षेत्रीय विकास योजना की घोषणा की गई थी, जिसका शुभारंभ आज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 15 नवम्बर से 26 नवम्बर तक प्रदेश में जनजातीय गौरव दिवस पखवाड़ा मनाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार वागड़ क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यहां रेलवे, हाईवे, विद्यालय जैसे कार्यों से विकास को बढ़ ाया जा रहा है। महाराणा प्रताप सर्किट एवं धार्मिक सर्किट भी बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि सीतामाता अभयारण्य, त्रिपुरा सुंदरी, बेणेश्वर धाम और मानगढ़ धाम को जोड़ते हुए पर्यटन सर्किट बनाने एवं इस क्षेत्र को औद्योगिक रूप से बढ़ ावा देकर यहां के युवाओं को रोजगार देने का काम हमारी सरकारी करेगी।

शर्मा ने समारोह में दो राजसखियों को 114 करोड़ रुपये का चैक प्रदान किया। उन्होंने आदिवासी जनजातीय क्षेत्र में उन्नत किसान, महिला उद्यमी, शिक्षा, खेल, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वाली पांच-पांच प्रतिभाओं सहित, नवाचार करने वाले दो व्यक्तियों को पुरस्कार से सम्मानित किया।

उन्होंने मेला मैदान में लगाई गईं स्टॉल्स एवं प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री को आदिवासी अंचल की पहचान, मांडना चित्र और तीर कमान भेंट किया गया। शर्मा ने इस अवसर पर गोविन्द गुरू जनजातीय क्षेत्रीय विकास योजना की पुस्तिका का भी विमोचन किया।

कार्यक्रम में जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, विधायक कैलाशचन्द्र मीणा एवं शंकरलाल डेचा, सचिव जनजाति क्षेत्रीय विकास भानु प्रकाश एटूरू सहित, बड़ी संख्या में आदिवासी अंचल के आमजन मौजूद थे।

यूपी में ट्रेन को पटरी से उतारने की साजिश विफल

लखनऊ, 15 नवंबर। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में ट्रेन को डिरेल करने की साजिश सामने आई है। सहारनपुर-अंबाला रेल खंड पर सरसावा रेलवे स्टेशन के नजदीक 'पेंड्रोल क्लिप' खोलकर पटरी पर रख दी गई। इसकी सूचना मिलते, ही ट्रेनों का परिचालन रोक दिया गया। अधिकारियों, शुक्रवार को यह जानकारी दी।

■ सहारनपुर अंबाला रेलखंड पर सरसावा स्टेशन के पास किसी ने पेंड्रोल क्लिप खोलकर पटरी पर रख दी थी। यह क्लिप स्लीपर को पटरी से जोड़ती है।

अधिकारियों ने बताया कि घटना गुरुवार रात की है, जब रेलवे सुरक्षा बल के गश्ती दल ने सरसावा रेलवे स्टेशन के निकट खंभा नंबर-199 के पास 'पेंड्रोल क्लिप' को पटरियों के ऊपर रखा देखा। इसके बाद, उन्होंने तुरंत उच्चाधिकारियों को इसकी सूचना दी। 'पेंड्रोल क्लिप' स्लीपर और पटरियों को आपस में जोड़ने का काम करती है। इसके न होने से हादसे का खतरा हो सकता है।

अंबाला मंडल के मंडल रेल प्रबंधक, राजकीय रेलवे पुलिस, आर.पी.एफ. के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। आर.पी.एफ. ने अज्ञात लोगों के खिलाफ रेलवे अधिनियम की प्रासंगिक धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस मामले पर डी.आर.एम. मंदीप सिह ने कहा, 'इस बात की जांच की जा रही है कि यह किसी की शरारत है या किसी ने साजिश के तहत 'पेंड्रोल क्लिप' को खोलकर पटरियों पर रख दिया।'

20 लाख की ईनामी नक्सली मंजुला ने आत्म समर्पण किया

उस पर 2013 में हुए छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े नरसंहार के कारण ईनाम घोषित था

■ झीरम घाटी हत्याकांड में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नन्द कुमार पटेल, पूर्व कन्द्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल सहित दर्जनों नेताओं की हत्या हुई थी।

रायपुर, 15 नवम्बर। छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े नरसंहार, झीरम घाटी हत्याकांड-2013, जिसमें कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नन्दकुमार पटेल, पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल ,बस्तर टाइगर के महेंद्र कर्मा समेत दर्जनों नेताओं की हत्या हुई थी, में शामिल 20 लाख की ईनामी नक्सली मंजुला उर्फ निर्मला ने शुक्रवार को तेलंगाना के वारंगल में पुलिस के पास आत्म समर्पण कर दिया।

मंजुला ने वारंगल में पुलिस आयुक्त के पास जाकर आत्मसमर्पण किया। ज्ञातव्य है कि झीरम कांड में छत्तीसगढ़ के कई दिग्गज कांग्रेस नेताओं को जान से हाथ धोना पड़ा था और कांग्रेस की अग्रिम पंक्ति करीब-करीब समाप्त हो गयी थी। मंजुला कुख्यात नक्सली लीडर कोडी कुमार स्वामी उर्फ आनंद एवं कोडी वेंकन्ना उर्फ गोपन्ना की बहन है और साथ ही दंडकरण स्पेशल ज़ोनल कमिटी, साउथ सब डिविज़न ब्यूरो की सदस्य है। वह 1994 में माओवादी संगठन में शामिल हुई थी और आज, यानी 15 नवंबर 2024 को उसने पुलिस के सामने आत्म समर्पण कर दिया।

गौरतलब है कि यह घटना 25 मई 2013 की है, जब छत्तीसगढ़ में एक खौफनाक और भयावह हत्याकांड हुआ था, जिसे राज्य का सबसे बड़ा राजनीतिक हत्याकांड माना जाता है। इस हमले में दिग्गज कांग्रेस नेता नंदकुमार पटेल, विद्याचरण शुक्ल, महेंद्र कर्मा, उदय मुदलियार सहित 30 कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं की निर्मम तरीके से हत्या कर दी गई थी।

इस हमले के बाद, भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस, दोनों सरकारों के कार्यकाल में जांच का सिलसिला चलता रहा, लेकिन हत्याकांड के अपराधियों का पर्दाफाश तथा इसके पीछे के रहस्यों को अब तक नहीं सुलझाया जा सका है।

प.बंगाल में टैबलेट खरीद घोटाले की जांच एस.आई.टी. करेगी

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा, इस मामले में 6 आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं

■ राज्य सरकार ने उच्चतर माध्यमिक स्कूल के प्रत्येक छात्र को टैबलेट या मोबाइल खरीदने के लिये 10 हजार बैंक खाते में भेजे थे। बहुत सारे छात्रों को धनराशि नहीं मिली, वह अन्य खातों में भेज दी गई।

कोलकाता, 15 नवंबर। पश्चिम बंगाल में टैबलेट के लिए दी जाने वाले धनराशि के दुरुपयोग से जुड़े घोटाले की जांच के लिए एस.आई.टी. गठित की गई है। इसकी जानकारी मुख्यमत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को दी। मुख्यमंत्री ममता ने कहा कि सरकार ने धोखाधड़ी की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया है जिसमें टैबलेट या मोबाइल फोन खरीदने के लिए छात्रों के बैंक खातों में भेजी गई सरकारी धनराशि को अन्य बैंक खातों में भेज दिया गया था।

राज्य के उत्तरी भाग में बागडोगरा हवाई अड्डे पर ममता बनर्जी ने कहा कि इस मामले में छह आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। राज्य सरकार ने सरकारी स्कूलों में पढ़ ने वाले उच्चतर माध्यमिक के प्रत्येक छात्र के बैंक खाते में 10,000 रुपये भेजे थे ताकि वह टैबलेट या मोबाइल फोन खरीद सके, लेकिन कथित गड़बड़ी के कारण उनमें से कई छात्रों को यह धनराशि नहीं मिली।

मुंबई का संगीतकार नाबालिग से छेड़छाड़ के आरोप में गिरफ्तार

मुंबई, 15 नवंबर। कोलकाता पुलिस की एक टीम ने यहां मुंबई के एक प्रसिद्ध संगीतकार को अपने संस्थान में नाबालिग छात्रा से छेड़छाड़ करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, संगीतकार संजय चक्रवर्ती को शहर के उपनगरीय इलाके में एक फ्लैट से गिरफ्तार किया गया। उस पर यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉस्को) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया। आरोपी संगीतकार को स्थानीय अदालत में पेश किया गया और अदालत ने चारु मार्केट पुलिस टीम के अधिकारी द्वारा की गई स्थानांतरित ट्रांजिट रिमांड को मंजूरी दे दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, संगीतकार ने जून में मुंबई के योग संस्थान में छात्रा से कथित तौर पर छेड़छाड़ की थी। आरोपी यहां गायन कक्षाएं संचालित करता है।

बिहार की युवा सांसद शांभवी की अनूठी पहल

बिहार, 15 नवंबर। देश में सरकार की ओर से लड़कियों की शिक्षा के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। वहीं, अब नेताओं की ओर से निजी स्तर पर भी बेटियों के लिए बड़े कदम उठाए जा रहे हैं। बिहार की युवा लोकसभा सांसद शांभवी चौधरी ने ऐसा ही कदम उठाया है। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की सांसद शांभवी चौधरी ने गुरुवार को घोषणा की है कि वह अपने लोकसभा क्षेत्र, समस्तीपुर में बेटियों की शिक्षा को बढ़ ावा देने के लिए अपने पूरे पांच साल के कार्यकाल के वेतन दान करेंगी। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान की अध्यक्षता वाली लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की सांसद शांभवी चौधरी की प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा चुनाव के दौरान तारीफ की थी। उन्होंने शांभवी को एनडीए का सबसे युवा उम्मीदवार बताया था।

'नाबालिग पत्नी से जबरन यौन संबंध बलात्कार है'

बॉम्बे हाईकोर्ट ने आरोपी पर 10 साल की सजा बरकरार रखी

■ हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा, ''18 साल से कम उम्र की लड़की से यौन संबंध बलात्कार है, चाह वह शादीशुदा हो या नहीं।''

मुंबई, 15 नवंबर। बॉम्बे हाई कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई करते हुए 18 वर्ष से कम उम्र की पत्नी के साथ बिना सहमति के यौन संबंध बनाने को बलात्कार करार दिया है। इसके अलावा कोर्ट ने इस अपराध के लिए 10 साल कैद की सजा पाने वाले व्यक्ति की दोषसिद्धि को बरकरार रखा है। ज्ञातव्य है कि न्यायमूर्ति जी ए सनप की नागपुर पीठ ने 12 नवंबर को पारित एक आदेश में 24 वर्षीय व्यक्ति की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें सत्र अदालत के 2021 के फैसले को चुनौती दी गई थी।

दरअसल, सत्र अदालत ने आरोपी को अपनी नाबालिग पत्नी का यौन उत्पीड़न करने के मामले में यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम और भारतीय दंड संहिता के प्रावधानों के तहत दोषी ठहराया था। सत्र अदालत ने आरोपी को 10 साल के कारावास की सजा सुनाई थी। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि चूंकि पीड़िता उसकी पत्नी है, इसलिए उनके बीच यौन संबंध को बलात्कार नहीं कहा जा सकता।

तथापि, हाई कोर्ट ने कहा कि पत्नी की आयु 18 वर्ष से कम होने पर उसके साथ सहमति से यौन संबंध के आधार पर बचाव नहीं किया जा सकता। पीठ ने कहा, ''18 साल से कम उम्र की लड़की के साथ यौन संबंध बनाना बलात्कार है, चाहे वह शादीशुदा हो या नहीं। अठारह साल से कम उम्र की पत्नी के साथ बिना सहमति के यौन संबंध बनाना बलात्कार है।''

ज्ञातव्य है कि महिला ने 2019 में एक शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें उसने कहा था कि वह आरोपी के साथ रिश्ते में थी, लेकिन उसके मना करने के बावजूद उसने उसका बलात्कार किया और उसे गर्भवती कर दिया। शिकायत में कहा गया कि इसके बाद दोनों साथ रहने लगे और उन्होंने शादी कर ली, लेकिन व्यक्ति ने गर्भपात कराने पर जोर दिया।

'महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने मेरे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुलिस ग्राउंड हेलिपैड पर महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री एकनाथ शिन्दे के लगेज की चैकिंग की गई।

एकनाथ शिन्दे विधानसभा चुनाव प्रचार के सिलसिले में पालघर आये थे, जहाँ ई.सी.आई. अधिकारियों ने उनके हेलिकॉप्टर के उतरने के बाद, सुरक्षा सम्बधी सतर्कता के रूप में मुख्यमंत्री के बैग तथा हेलिकॉप्टर चैक किये थे।

विधानसभा चुनाव की तिथियाँ घोषित करते समय मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा था कि एनफोर्समेन्ट एजेंसियों को निर्देश दिये गये है कि वे चुनाव में बराबरी सुनिश्चित करने के लिये, सभी नेताओं के हेलिकॉप्टर की चैकिंग करें। उन्होंने कहा था कि इस कार्यवाही का उद्देश्य चुनावों के दौरान सत्ता के किसी भी प्रकार के अनुचित प्रभाव तथा सत्ता के दुरूपयोग को रोकना और चुनाव प्रक्रिया में निष्पक्षता एवं पारदर्शिता को बनाये रखना है।

महाराष्ट्र की सभी 288 विधान सभा सीटों के लिए प्रचार अभियान जोर पकड़ चुका है तथा सत्तारूढ़ ''महायुति'' एवं विपक्षी ''महा विकास अघाडी (एम.वी.एस.) मतदाताओं को अपनी ओर खींचने का प्रयास कर रहे है। मतगणना 23 नवम्बर को होगी।

'अमरनाथ बस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की मौत हुई और 47 अमरनाथ यात्री जख्मी हो गए। यह दुर्घटना बस चालक की गलती से हुई थी और जांच में पुलिस ने भी चालक को ही दोषी माना था।

ऐसे में विपक्षी जम्मू-कश्मीर स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन क्षतिपूर्ति राशि देने के लिए उत्तरदायी हैं। याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ताओं को हर्जाना राशि देने को कहा है।

प्रधानमंत्री के विमान में तकनीकी खराबी आई

साढ़े तीन घंटे बाद दूसरे विमान से मोदी दिल्ली गये

■ प्रधानमंत्री बिरसा मुंडा की 150 वीं जयन्ती में भाग लेने बिहार के जमुई गये थे।

रांची,15 नवंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विमान में आज तकनीकी खराबी आने के बाद वायुसेना का दूसरा विमान दिल्ली से देवघर एयरपोर्ट पहुंचा और इसके बाद प्रधानमंत्री दिल्ली के लिए रवाना हुए। देवघर एयरपोर्ट से प्रधानमंत्री बिहार के जमुई गए थे और वहां बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर आयोजित समारोह में शिरकत करने के बाद वे देवघर एयरपोर्ट से दिल्ली रवाना होनेवाले थे, लेकिन विमान में तकनीकी दिक्कत आ गयी थी।

प्रधानमंत्री मोदी का विमान साढ़ तीन घंटे बाद देवघर एयरपोर्ट से दिल्ली के लिए उड़ा। करीब शाम पांच बजे मोदी वायुसेना के विमान से दिल्ली रवाना हुए। प्रधानमंत्री के विमान में तकनीकी खराबी की सूचना पर 4:10 बजे दिल्ली से दूसरा विमान मंगाया गया। विमान के देवघर पहुंचते ही मोदी दिल्ली के लिए रवाना हो गए। इससे पहले, देवघर एयरपोर्ट से टेक ऑफ के लिए जैसे ही विमान आगे बढ़ रहा था, उसी दौरान सीनियर पायलट को पहिए में तकनीकी खराबी की जानकारी मिली। उसके बाद विमान को रोका गया और सभी को अलर्ट कर विमान को धीरे-धीरे टर्मिनल की ओर लाया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री विमान में ही बैठे रहे। वायुसेना का दूसरा विमान आने के बाद वे दिल्ली के लिए रवाना हुए।

दूसरी तरफ, प्रधानमंत्री के विमान में खराबी की वजह से राहुल गांधी के हेलीकॉप्टर को करीब डेढ़ घंटे तक क्लियरेंस नहीं मिलने के कारण, गोड्डा जिले के महागामा में उन्हें इंतजार करना पड़ा और इसके बाद वे बेरमो चुनाव प्रचार करने गए।

'मैरिट के आधार पर मैडिकल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाएं। वहीं, अदालत ने याचिकाकर्ताओं से कम मेरिट वाले निजी पक्षकारों को किए गए सीट आवंटन को निरस्त करने को कहा है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश रोहित चौधरी व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ताओं ने नीट यूजी-2024 में मेरिट में उच्च स्थान प्राप्त किया था। कोविड महामारी के कारण सरकार ने उन्हें कक्षा 11वीं से अगली कक्षा में प्रमोट कर दिया था, जिसके चलते उन्हें मिले प्रमाण पत्र में विषयों का उल्लेख नहीं था। याचिकाकर्ताओं को गत 28 अक्टूबर को तीन घंटे के लिए आयोजित नीट के स्ट्रे वैकेंसी राउंड में दस्तावेज सत्यापन के लिए बुलाया गया, जहां उन्हें यह कहते हुए कॉलेज आवंटित नहीं किया कि उनकी 11वीं अंकतालिका में बायोलॉजी विषय का उल्लेख नहीं है। दूसरी ओर, याचिकाकर्ताओं से कम मेरिट वाले अभ्यर्थियों को कॉलेज आवंटित कर दिये गये। वहीं, राज्य सरकार, एन.एम.सी. और एन.टी.ए. की ओर से कहा गया कि एम.बी.बी.एस. में प्रवेश के लिए कक्षा 11वीं में तय विषय होने चाहिए, जबकि याचिकाकर्ताओं के पास मौजूद दस्तावेजों में बायोलॉजी विषय का उल्लेख नहीं था। जिन दूसरे अभ्यर्थियों के पास तय विषय से 11वीं पास होने के दस्तावेज थे, उन्हें सीट आवंटित कर दी गई थी। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने याचिकाकर्ताओं को मेरिट के आधार पर सीट आवंटित करने और कम मेरिट वाले निजी पक्षकारों का आवंटन निरस्त करने को कहा है।

हाईकोर्ट बार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हिस्सा हैं, लेकिन न्यायपालिका को केवल न्यायाधीशों से ही नहीं जाना जाता। यह न्यायाधीश और वकीलों का संगठित क्षेत्र है। अधिवक्ताओं के बिना न्यायपालिका अधूरी है और बार व बेंच न्यायपालिका की गाड़ी के दो पहिए हैं।

उन्होंने कहा कि आज करीब 27 लाख वकील आमजन को न्याय दिलाने के कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं। इसलिए बेंच को हमेशा वकीलों को उचित सम्मान देना चाहिए। बार व बेंच के मधुर संबंध होने से आमजन को न्याय प्रदान करने में गति मिलेगी।

कर्नाटक में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विधान सौधा भवन जहां मुख्यमंत्री का 70 साल पुराना कार्यालय है इसकी मरम्मत की जरूरत है। कांग्रेस ने कहा, यह फिज़ूल खर्च नहीं है, यह राज्य की सम्पत्ति है, जो भी मुख्यमंत्री बनेगा इसका इस्तेमाल करेगा। भाजपा ने कहा कि खर्च जब मंत्री शिकायत कर रहे हैं कि उनके पास विकास कार्यों के लिए फंड नहीं है ऐसे में सारा फालतू खर्च कर रही है।

पंजाब व हरियाणा के बीच एक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निर्माण के लिये, हरियाणा को पंजाब की एक इंच जमीन नहीं दी जानी चाहिये।''

कटारिया दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं क्योंकि केन्द्रशासित चंडीगढ़ के प्रशासक भी हैं। इस समय, पंजाब और हरियाणा राज्यों कि अलग-अलग विधानसभाएं चंडीगढ़ के एक कॉमन बिल्डिंग कॉम्प्लेक्स में ही स्थित है। यह भवन पंजाब और हरियाणा सिविल सेक्रेटेरिएट से सटा हुआ है। हरियाणा में इस समय 90 विधायक है।

यह संख्या परिसीमन के बाद 120 हो सकती है। हरियाणा के उर्जा, यातायात एंव श्रम मन्त्री अनिल विज ने कहा ''हम अपनी भविष्य की आवश्यकताओं के लिए तैयारी कर रहे है।'' दूसरी तरफ, पंजाब नेता संघर्ष पर उतारू हो रहे हैं। विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर, उनसे अनुरोध किया है कि चंडीगढ़ पर पंजाब के अधिकारिक दावे स्वीकार किये जायें।

एस.ए.डी. के प्रवक्ता दलजीत सिंह चीमा ने कहा है कि केन्द्र का यह निर्णय, जिसके अर्न्तगत हरियाण को चंडीगढ़ के साथ भूमि की अदला-बदली को अनुमति भी दे दी है, ''असंवैधानिक'' है। क्योंकि राज्य की सीमाओं को बदलने का अधिकार केवल संसद के पास है। पंजाब आप के प्रवक्ता नील गर्ग ने आरोप लगाया है कि केन्द्र ''पंजाब के विरूद्ध षडयन्त्र'' कर रहा है।

लॉरेंस गैंग के निशाने पर है श्रद्धा वॉकर हत्याकांड का आरोपी

■ आफताब पूनावाला पर 2022 में श्रद्धा वॉकर की हत्या कर टुकड़े -टुकड़े करने का आरोप है

■ इस संबंध में मीडिया रिपोर्ट आने के बाद तिहाड़ जेल में हाई अलर्ट कर दिया गया।

नई दिल्ली, 15 नवंबर। दिल्ली में चर्चित श्रद्धा वाकर हत्याकांड के आरोपी आफताब पूनावाला को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। ऐसी रिपोर्ट सामने आई है कि लॉरेंस बिश्नोई गैंग के निशाने पर आफताब पूनावाला भी है। ज्ञातव्य है कि पूनावाला पर मई 2022 में श्रद्धा वाकर की कथित तौर पर हत्या करने और फिर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने का आरोप है। सूत्रों के अनुसार, मीडिया रिपोर्टों पर संज्ञान लेते हुए तिहाड़ जेल प्रशासन भी अलर्ट हो गया है। जेल में आफताब पूनावाला के लिए सुरक्षा उपाय बढ़ ा दिए गए हैं।

तिहाड़ सूत्रों के अनुसार, जेल प्रशासन मीडिया में चल रही खबरों का संज्ञान लेते हुए आफताब पूनावाला की सुरक्षा को लेकर अलर्ट मोड में है। आफताब पूनावाला तिहाड़ जेल नंबर-4 में बंद है। तिहाड़ सूत्रों के मुताबिक मुंबई पुलिस से कोई आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है लेकिन मीडिया में आई खबरों का संज्ञान लिया गया है।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में पकड़े गए आरोपी शिव कुमार गौतम ने पुलिस के सामने ऐसी बात कही है कि वो आफताब को मारना चाहते हैं।

दिल्ली के छतरपुर इलाके में मई 2022 में श्रद्धा वाकर की हत्या कर दी गई थी। हत्या के बाद श्रद्धा के शरीर के 30 से भी ज्यादा टुकड़े कर दिए गए थे। यह घटना तब सामने आई जब श्रद्धा के पिता ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। जानकारी के मुताबिक, श्रद्धा के शरीर के टुकड़ों को फ्रिज में तीन हफ्ते तक रखा गया था और धीरे-धीरे कर के शहर के अनेक इलाकों में फेंक दिया गया था।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908